राष्ट्र निर्माण में सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की भूमिका

(अणुव्रत निबंध लेखन प्रतियोगिता)

प्रकाशक

vf[ky Hkkjrh; v.kqor U;kl] ubZ fnYyh

© अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, नई दिल्ली

lLdj.k% 2016
vk'khoZpu% महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण

lEiknd e.My% सम्पादक
सम्पतमल नाहाटा
सुशील कुमार जैन
विजय वर्धन डागा
प्रमोद घोड़ावत

dk;Zdkjh lEiknd% महेन्द्र शर्मा

l;Dr lEiknd% रमेश काण्डपाल

eY;% ₹100.00

çdk'kd% अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली 110002

eæ.k% इंद्रप्रस्था प्रैस (सी.बी.टी.)
4 बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली–110002

vkpk;Z Jh egkJe.k

।। अर्हम् ।।

परम पूज्य गुरुदेव तुलसी बीसवीं सदी के एक महापुरुष थे। उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन के रूप में मानव जाति को एक महान अवदान दिया। अणुव्रत संयम, नैतिकता और चरित्र निष्ठा से जुड़ा आन्दोलन है। उसे स्वीकार कर आदमी अपने जीवन को उन्नत बना सकता है।

'अणुव्रत न्यास' गत अनेक वर्षों से शिक्षा जगत् में अणुव्रत के प्रचार–प्रसार की दृष्टि से प्रयत्नशील है। 'जीवन के सर्वांगीण विकास में वर्तमान शिक्षा पद्धति' और 'राष्ट्र निर्माण में सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की भूमिका' उसी प्रयत्न का प्रतिफल है। इसका रसास्वादन कर जनता आध्यात्मिक पोषण को प्राप्त हो। शुभाशंसा।

फालाकाटा (बंगाल) **vkpk;Z egkJe.k**

lEirey ukgkVk

अणुव्रत विचारधारा से असंख्य विद्यार्थी लाभान्वित

किसी भी राष्ट्र, समाज और परिवार की उन्नति, शांति के लिए पारस्परिक सद्भावना अपेक्षित होती है। सद्भावना के अभाव में अहिंसा जीवन व्यवहार में प्रतिष्ठित नहीं हो पाती है। कितनों–कितनों के लिए घातक बन जाती है। जाति, भाषा, वर्ग या क्षेत्र का दुराग्रह, साम्प्रदायिक उन्माद, तुच्छ स्वार्थवृत्ति और विकृति मानसिकता पर पारस्परिक असद्भाव के कारण बनते हैं।

जब–जब मानवता ह्रास की ओर बढ़ती चली जाती है, नैतिक मूल्य अपनी पहचान खोते जाते हैं। समाज में पारस्परिक संघर्ष की स्थितियां बनती हैं। तब–तब कोई न कोई महापुरुष अपने दिव्य कर्तव्य, पुरुषार्थ और तेजोमय शौर्य से मानव की चेतना को झंकृत कर जन जागरण का कार्य करता है। भगवान महावीर हों या गौतमबुद्ध, स्वामी विवेकानन्द हों या महात्मा गांधी, गुरुदेव तुलसी हों या आचार्य महाप्रज्ञ समय–समय पर ऐसे अनेक महापुरुषों ने अपने क्रान्ति चिन्तन के द्वारा समाज का समुचित पथ दर्शन किया। महापुरुषों की इसी श्रृंखला का एक गौरवपूर्ण नाम है आचार्य श्री महाश्रमण। स्वकल्याण व परकल्याण के संकल्प के साथ चालीस हजार से अधिक किलोमीटर की पदयात्रा करने वाले आचार्य महाश्रमण अहिंसा यात्रा के द्वारा जनमानस को उत्प्रेरित कर मानवता के समुत्थान का पथ प्रशस्त कर रहे हैं। अहिंसा यात्रा हृदय परिवर्तन के द्वारा अंधकार से प्रकाश की ओर प्रस्थान का अभियान है। यह यात्रा कुरीढ़ियों में जकड़ी ग्रामीण जनता और तनावग्रस्त शहरी लोगों के लिए

वरदान है। जाति, सम्प्रदाय, वर्ग और राष्ट्र के लिए वरदान है। जाति, सम्प्रदाय, वर्ग और राष्ट्र की सीमाओं से परे यह यात्रा बच्चों, युवाओं और वृद्धों के जीवन में सद्‌गणों की श्वास भर रही है। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण जी की इस यात्रा का मुख्य उद्‌देश्य है सद्‌भावना, नैतिकता व नशा मुक्ति का अभियान।

'अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास' द्वारा अनेक वर्षों से आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से देश भर में अनेक विद्यालयों के अगणित विद्यार्थी अणुव्रत विचारधारा के सीधे संपर्क में हैं। उनके मौलिक विचारों से समकालीन समस्याओं का समाधान, कुरीतियों पर कुठाराघात और अहिंसा के सिद्धांतों से असंख्य विद्यार्थी नैतिक संस्कारों के पल्लवन की प्रक्रिया से लाभान्वित हुए हैं। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ एवं वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता के रूप में महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी जैसे संत शिरोमणि आचार्य मिले हैं, जिनकी छत्रछाया में हमें कार्य करने का अवसर प्राप्त हो रहा है। मैं उनके प्रति सदैव श्रद्धावान हूं। उनके इंगितानुसार कार्य करना ही न्यास का उद्देश्य है।

इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु ही विद्यालयों में विद्यार्थियों में अणुव्रत संस्कार निर्माण का अभिमान जारी है। इस अभियान में विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक बढ़चढ़ कर सहभागिता कर रहे हैं। उनके सद्‌प्रयासों से अनेक पुस्तकें अणुव्रत न्यास प्रकाशित कर चुका है। इसी श्रृंखला में सद्य प्रकाशित पुस्तक 'जीवन के सर्वांगीण विकास में वर्तमान शिक्षा पद्धति' विद्यार्थियों द्वारा लिखित निबंधों के लेखन–कौशल का उत्कृष्ठ नमूना है। मैं इस पुस्तक में संकलित विद्यार्थी–लेखकों, पुस्तक में अपना श्रम लगाने वाले अणुव्रत कार्यकर्ताओं का धन्यवाद करता हूं व अपेक्षा करता हूं कि हम सब मिलकर अणुव्रत के मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ते हुए अपने सपनों के भारत को साकार रूप देकर पुनः भारत को विश्व में सर्वोच्च स्थान दिला सकें।

सम्पतमल नाहाटा
प्रबंध न्यासी
अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, दिल्ली

çekn ?kkMkor

अध्यात्म और नैतिक शिक्षा की उपादेयता

आचार्य श्री तुलसी ने कहा था कि राष्ट्र के कर्णधारों एवं हित–चिंतकों के मन में इस बात की बड़ी चिंता है कि अनेक–अनेक प्रयत्नों के बावजूद विद्यार्थियों के सही निर्माण का मार्ग प्रशस्त नहीं हो रहा है। उनमें अपेक्षित परिवर्तन की दिशा उद्‌घाटित नहीं हो पा रही है। ऐसा माना जा रहा है कि आज की शिक्षा पद्धति दोषपूर्ण है। वही इस स्थिति के लिए उत्तरदायी है। इसलिए यह स्वर भी चारों ओर से उठ रहा है कि यह दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति हर हालत में बदल दी जानी चाहिए। एक अपेक्षा से बात सही भी है, पर सारा का सारा दोष या जिम्मेदारी इसी पर नहीं डाली जा सकती है। अलबत्ता इसे मुख्य कारण कहा जा सकता है। यह बहुत स्पष्ट है कि आज ही चालू शिक्षा पद्धति हमारी भारतीय संस्कृति के अनुकूल नहीं है। उस पर पाश्चात्य संस्कृति का अनपेक्षित–अवांछित प्रभाव आ गया है जो भारतीय मस्तिष्क के अनुकूल नहीं है।

भारतवर्ष एक ऐसा देश है जहां भोग का नहीं, त्याग का महत्व है, असंयम का नहीं, संयम का महत्व है, धन कुबेरों और सत्ताधीशों का नहीं, ऋषि–मुनियों का महत्व है। ऋषि–मुनियों की तपःपूत वाणी का प्रभाव अब भी यहां के वासियों के मन–मस्तिष्क में विद्यमान है। प्रकारांतर से ऐसा कहा जा सकता है कि अध्यात्म एवं धर्म यहां के आधारभूत तत्व हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि जब तक शिक्षा प्रणाली में अध्यात्म एवं नैतिक शिक्षा का समावेश नहीं होगा, तब तक मूलभूत समस्याओं का हल नहीं होगा, परंतु आध्यात्मिक शिक्षा और नैतिक शिक्षा का मतलब यह नहीं कि बालकों से भगवान के नाम की रट लगवाई जाये। उसका तात्पर्य तो

इतना ही है कि बालकों को प्रारंभ से ही ऐसा शिक्षण–प्रशिक्षण प्राप्त हो, जिससे वे सत्संस्कारी बनें। उनका जीवन विनय, सदाचार, अनुशासन, सत्य–निष्ठा, संयम व स्वावलंबन से अनुप्राणित बने।

ये तत्व उनके जीवन के साथ इस प्रकार आत्मसात हो जायें कि उन्हें भारभूत न लगें। इस आधार के बनने से ही आगे की शिक्षा का मार्ग प्रशस्त होगा। अणुव्रत आंदोलन विद्यार्थियों के जीवन में अनुशासन, विनय जैसे सत्संस्कारों के बीज–वपन की दिशा में कार्य कर रहा है। यह कार्य प्रत्येक स्कूल में आगे बढ़ाने के लिए 'अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास' सतत् प्रयत्नशील है। इसके माध्यम से न केवल विद्यार्थियों के लिए अपितु पूरे समाज के लिए यह वरदान सिद्ध होगा।

इसी परिकल्पना के रूप में अणुव्रत न्यास ने विद्यार्थियों हेतु इस वर्ष 'राष्ट्र के निर्माण में सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की भूमिका' व 'जीवन के सर्वांगीण विकास में वर्तमान शिक्षा पद्धति' विषय दिये हैं, जो प्रेरक हैं। विद्यार्थियों ने अपनी लेखनी द्वारा जो लेख लिखे हैं उन्हें पढ़ने के बाद लगता है कि भारत का विद्यार्थी अपने छात्र जीवन व अपने राष्ट्र के लिए क्या सोचता है। जो विचार विद्यार्थियों ने दिये हैं, वह अत्यंत प्रशंसनीय है।

हमारा मानना है कि अणुव्रत न्यास के माध्यम से अणुव्रत के लिए नई पीढ़ी में राष्ट्र और नैतिकता के प्रति जागृत करने का जो कार्य हो रहा है, उससे लगता है हमारा राष्ट्र सुख–समृद्धि व नैतिकता की ऊंचाइयों को पुनः प्राप्त कर सकेगा।

çekn ?kkMkor
राष्ट्रीय संयोजक
अणुव्रत निबंध लेखन प्रतियोगिता

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	*शीर्षक*	*लेखक/लेखिका का नाम*	*पृष्ठ संख्या*
1.	समृद्धि में नैतिकता की अहम् भूमिका	निशी अरोड़ा	1
2.	देश की हर चीज से प्यार करें	प्रांजलि श्रीवास्तव	1
3.	संस्कार ही हमारी सोच को दर्शाते हैं	भूमिका ढौंढियाल	1
4.	आ चुका है अब जागने का वक्त	जहान्वी पी. पंचाल	1
5.	नैतिक उन्नति ही राष्ट्र की उन्नति	कशिश महेंद्रू	1
6.	सद्भावना से होते हैं रिश्ते मजबूत	दीक्षा जायसवाल	1
7.	नशामुक्ति से ही बनेगा विकसित राष्ट्र	तनु	1
8.	जुमलों तक सीमित रह गई सद्भावना	अनंदिता कौशल	1
9.	नशे पर पाबंदी आवश्यक	ऋषभ मदनी	1
10.	जीवन मूल्यों को आचरण में उतारें	आकृति माथुर	1
11.	वक्त है गहरी नींद से जागने का	अंकिता गुरुरानी	1
12.	नशा मुक्ति से ही प्रगति	भव्या तिवारी	1
13.	जहाँ सद्भावना, वहाँ शांति	अनीश सिंह	1
14.	नैतिक मूल्य सिखाने जरूरी	अंजलि गुप्ता	1
15.	युवाओं का भटकना घातक	मीनल अग्रवाल	1

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक/लेखिका का नाम	पृष्ठ संख्या
16.	शराब बिक्री पर लगे पूर्ण प्रतिबंध	नमन माधव	1
17.	नैतिक मूल्य भाषणों में सिमटे	पुण्या गर्ग	1
18.	सब कुछ पाने की चाह उचित नहीं	हिबा हुसैन	1
19.	एक-दूसरे के हित में सोचना होगा	दीक्षा कुशवाहा	1
20.	धर्म का मर्म ही सद्भावना	ईश वर्मा	1
21.	सबको समझाएँ सद्भावना का महत्त्व	ऋषिता शर्मा	1
22.	अणुव्रत की विशिष्ट भूमिका	संयमी जैन	1
23.	नशामुक्त राष्ट्र ही करता है विकास	प्राची कुमारी	1
24.	नशा वृत्ति है अत्यंत घातक	राजा साह	1
25.	विकृति को त्यागें, नैतिकता अपनाएँ	सलोनी अग्रवाल	1
26.	युवाओं के कंधों पर बड़ी जिम्मेदारी	प्रशांत चौधरी	1
27.	सद्भावना राष्ट्र निर्माण का स्तंभ	जागृति प्रजापति	1
28.	सद्भावना का अलख जगाएँ	मोमीना महबूब शेख	1
29.	माँ-बाप बच्चों पर दें विशेष ध्यान	रीतिक पेंर	1
30.	मोह निद्रा से जागना ही होगा	नितिशा त्रिवेदी	1
31.	राजनीति अपने दायित्व को समझे	अदिति शर्मा	1
32.	राष्ट्र निर्माण युवाओं के हाथों में	गरिमा	1
33.	नशाखोरी पर सरकार भी दोहरी	साक्षी मेहता	1
34.	नैतिक चेतना से छंटेगा अंधकार	समदिशा कालरा	1
35.	विकास हेतु भाईचारा जरूरी	शेख महबूबी मीरा	1
36.	राष्ट्रीयता पर संकट के बादल	बोरोले विवेक एम.	1
37.	नशे से रहें दूर तो प्रगति होगी भरपूर	श्रेया गुप्ता	1
38.	बच्चों को संस्कृति का बोध कराएँ	यशवंति प्रजापत	1
39.	नैतिकता है देश का आईना	सुवाली अरोड़ा	1
40.	नशामुक्त अभियान पर हो विशेष ध्यान	शशांक शाही	1
41.	सद्भावना का विकास एक चुनौती	गर्वित सिंह	1
42.	एकता है, फिर भी दूरियाँ क्यों?	अनु	1
43.	पुण्य कर्म है राष्ट्र निर्माण	प्रकृति	1
44.	सद्भावना से मिलता है सुख	राघव	1
45.	नैतिकता का ह्रास चिंतनीय	योगिता बोदड़े	1
	English		
46.	Nation building is a normative concept	Ayushi Mohadikar	0
47.	Morality highly impacts us	Tanuja Sanguri	0
48.	Morality is vitally important	Ayush Raghuwanshi	0
49.	Weaker sections should be developed	Gurleen Kaur	0
50.	Goodwill plays a major role	Kshitij Pandey	0
51.	Moral values are essential	Nishita Sudhir	0
52.	Goodwill means good intension	Diksha Kushwaha	0

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक/लेखिका का नाम	पृष्ठ संख्या
53.	stop drug addiction	Rishabh Shukla	0
54.	Good as well as evils are eternal	Aqsa Naaz	
55.	Importance of moral values	Drashti Dhaleriya	0
56.	Addiction breeds anger	Shyamkumar Shantubhai Patel	0
57.	Strength is the motto of goodwill	P. Anjali Kumar	0
58.	Morality is not taught	S. Yamini	0
59.	Morality with meditation is necessary	Shailee Sankhala	0
60.	Alcohol spoils our health	Asmita Zjigyasu	0

सफर अणुव्रत संकल्पों का

(अणुव्रत कविता–कहानी–नाटक संकलन)

प्रकाशक

vf[ky Hkkjrh; v.kqor U;kl] ubl fnYyh

© अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, नई दिल्ली

lLdj.k% 2016
vk'khopu% महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण

liknd e.My% सम्पतमल नाहाटा
सुशील कुमार जैन
विजय वर्धन डागा
अशोक संचेती

dk;dkjh liknd% महेन्द्र शर्मा

l;Dr liknd% रमेश काण्डपाल

eY;% ₹100.00

çdk'kd% अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली 110002

eæ.k% इंद्रप्रस्था प्रैस (सी.बी.टी.)
4 बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली–110002

vkpk;! Jh egkJe.k

।। अर्हम् ।।

परमपूज्य गुरुदेव तुलसी बीसवीं सदी के एक महापुरुष थे। उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन के रूप में मानव जाति को एक महान अवदान दिया। अणुव्रत संयम, नैतिकता और चरित्र निष्ठा से जुड़ा आन्दोलन है। उसे स्वीकार कर आदमी अपने जीवन को उन्नत बना सकता है।

'अणुव्रत न्यास' गत अनेक वर्षों से शिक्षा जगत् में अणुव्रत के प्रचार–प्रसार की दृष्टि से प्रयत्नशील है। 'सफर अणुव्रत संकल्पों का' उसी प्रयत्न का प्रतिफल है। इसका रसास्वादन कर जनता आध्यात्मिक पोषण को प्राप्त हो। शुभाशंसा।

फालाकाटा (बंगाल) **vkpk;! egkJe.k**

लेखक नैतिक जागरण के सजग प्रहरी बनें

lEirey ukgkVk

आचार्य तुलसी युगदृष्टा और युगसृष्टा दोनों थे। उन्होंने युग को देखा और नवयुग का सृजन किया। नैतिकता और अध्यात्म दोनों विषयों को उनकी प्रकाश-रश्मियों ने आलोकित किया। आचार्य तुलसी महान परिव्राजक थे। प्रव्रज्या ने उनके अनुभव के वातायन को विस्तार दिया। व्यापकता उत्तरोत्तर बढ़ती चली गई। युग के व्यापक दर्शन ने युगीन समस्याओं के निवारण का दायित्व पूरे कौशल के साथ निभाया।

आचार्य तुलसी महान क्रांतिकारी थे। उनकी क्रांतवाणी ने जनमानस को बदला। परिणामतः रूढ़िवाद के स्थान पर गतिशीलता के दर्शन हुए। आचार्य तुलसी सिद्ध पुरुष थे। उनकी सिद्धि अनेक दिशाओं में ज्योति विकिरण करती थी। उस ज्योति का हर कण दूसरों के लिए ज्योति पुंज जैसा होता था। उनका चिंतन और अनुभव उनकी वाणी में अति मात्रा में प्रस्फुटित हुआ है। उनकी वाणी में भी सिद्धि थी, उनका हर वाक्य शिक्षाप्रद था। कुछ व्यक्ति साहित्य सृजन में प्रवृत्त होते हैं, कुछ व्यक्ति बोलते हैं और सहज साहित्य का सृजन हो जाता है।

मैंने सुना है कि फ्रांस के सम्राट बोनापार्ट नेपोलियन ने कहा था कि विश्व में दो शक्तियाँ हैं तलवार और कलम। तलवार की शक्ति स्पष्ट है पर अंत में वह सदा कलम से हार जाती है। विश्व के सब चिंतनशील लोग इस विचार से सहमत हैं या नहीं, नहीं कहा जा सकता है पर लेखनी की नोंक तलवार की धार से कम तीखी नहीं हो सकती। लेखक जब कलम की नोंक को कागज पर उतारता है तो सृजन और ध्वंस की सारी संभावनाएँ वहाँ मूर्त हो जाती हैं।

लेखक का अपना चिंतन स्वतंत्र होता है, किंतु जिस परिवेश में वह जीता है, उस परिवेश में वह अनसुनी नहीं कर सकता। लेखक जो कुछ सुनता है, संवेदन के स्तर पर अनुभव करता है उसे अपने रचनाधर्मी क्षणों के साथ संयोजित करना उसका पहला उद्देश्य होता है। इस उद्देश्य में सफल रहने वाला लेखक ही अपने लेखकीय दायित्व का निर्वहन कर सकता है।

आचार्य तुलसी ने अपने प्रवचन में कहा था कि आज राष्ट्र के समक्ष अनेक करणीय कार्य हैं, उनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और आवश्यक करणीय कार्य हैं राष्ट्र के भावी कर्णधारों का जीवन निर्माण करना, विद्यार्थियों को सुसंस्कारित बनाना। जब तक विद्यार्थियों का जीवन विनय, नम्रता, सदाचार आदि गुणों से संपन्न नहीं होगा तब तक राष्ट्र विकास की राह पर अग्रसर कैसे हो सकेगा। प्रश्न यह है कि विद्यार्थियों के जीवन निर्माण की जिम्मेदारी किसकी है? यों तो माता-पिता, घर-परिवार और पास-पड़ोस सभी की यह जिम्मेदारी है पर सर्वाधिक जिम्मेदारी है अध्यापकों की। वे ही वस्तुतः उनके जीवन-निर्माता हैं। इस स्थिति में उनके लिए आवश्यक है कि उनका जीवन विद्यार्थियों के लिए एक बोलता चित्र हो।

सैकड़ों पुस्तकें पढ़ लेने पर भी एक विद्यार्थी को उतना ज्ञान नहीं हो सकता जितना उसे अध्यापकों के जीवन एवं जीवन-व्यवहार से हो सकता है। इसका कारण बहुत स्पष्ट है विद्यार्थियों का मानस अनुकरण प्रधान होता है। वे जैसा आचरण दूसरों को करते देखते हैं, वैसा ही आचरण स्वयं भी करने लगते हैं। इसलिए मैं अध्यापकों से कहना चाहता हूँ कि वे अपनी इस जिम्मेदारी के प्रति गंभीर बनते हुए सबसे पहले स्वयं का जीवन निर्मित करें। जिसका स्वयं का जीवन निर्मित नहीं है वह दूसरों का निर्माण कैसे कर सकेगा? निर्मित ही दूसरों का निर्माण कर सकता है। अध्यापक यह हृदयंगम करें कि उनका निर्माण ही विद्यार्थियों का निर्माण है और विद्यार्थियों का निर्माण ही समाज और राष्ट्र का निर्माण है।

वर्तमान में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी अपना पहला अंतर्राष्ट्रीय चातुर्मास नेपाल की धरती से संपन्न कर भारत के दक्षिण की यात्रा

विशेष उद्देश्य हेतु कर रहे हैं। इसका मुख्य उद्देश्य नैतिकता, सद्भावना, नशामुक्ति है। दस हजार किलोमीटर की पदयात्रा कर अहिंसा के माध्यम से आचार्यश्री संदेश दे रहे हैं। अणुव्रत को अपनाना अति आवश्यक है। आप व्रत रखें या नमाज अदा करें, मानवता की शुद्धि के लिए अणुव्रत का मार्ग सुगम व श्रेष्ठ है। आप अपनी-अपनी सांप्रदायिक आस्थाओं को मानते हुए कैसे अणुव्रत के महायज्ञ में शामिल हों, यही हमारा उद्देश्य है।

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास इसी दिशा में विगत दो दशकों से प्रयत्नशील है। अणुव्रत रूपी नैतिक मशाल को जन-जन तक पहुँचाने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से पूरे राष्ट्र में अलख जगाने का प्रयत्न किया जा रहा है। इस कड़ी में अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास परिवार का प्रत्येक कार्यकर्ता सतत् प्रहरी के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहा है। अणुव्रत के इस नैतिक आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाने में अणुव्रत न्यास उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

सम्पतमल नाहाटा
प्रबंध न्यासी
अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, दिल्ली

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक/लेखिका का नाम	पृष्ठ संख्या
	कविता		
1.	एक नई सुबह	नीरजा चतुर्वेदी	1
2.	अहिंसा के बिरवे	उर्मिला	3
3.	दीपशिखा	निलांजन सेन	5
4.	दुविधा के बादल	वीना फोगाट	7
5.	जीवन का आधार-अणुव्रत	मदन कौशिक	9
6.	आओ रचें ऐसा समाज	वंदना शर्मा	11
7.	कर सेवा, भूलें उपकार	किरण शर्मा	13
8.	अभिनव प्रयास	सुनम प्रसाद	14
9.	मूल्य न बिसरें	राजेंद्र कुमार शिवप्रसाद गुप्ता	16
10.	बेटियाँ	आरती असावा	17
11.	संस्कार	कनक शर्मा	19
12.	वो ही तो अणुव्रत है	पवन कुमार	21
13.	समाधान में अणुव्रत	शशि बाला ठाकुर	23
14.	निभाएँ धर्म मानवता	भरत व्यास	26
15.	तंग दायरे मत देख	नर्बदा शर्मा	28
16.	पेड़ की मंत्रणा	डॉ. अरुण कुमार वर्मा	30
17.	हमारी बदौलत	अर्चना जोशी	32

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक/लेखिका का नाम	पृष्ठ संख्या
18.	आओ मिलकर रहें	तुलसी राम सैनी	33
19.	हर व्यक्तित्व सजाएँ	स्वर्ण लता झा	34
20.	उठो ऐ नौजवानों...!	चेतना भटनागर	36
21.	हम भारत की संतान	विक्रम प्रसाद गौड़ 'रसिक'	38
22.	जग का तुम कल्याण करो	ओपेन्द्र कुमार	40
23.	बस यही विकल्प है	संजय सिंह	42
24.	समाज को जगाएँ	अनुपमा कुमार	44
25.	संयम	ताम्रध्वज शर्मा	45
26.	आधार	सोमा सिंह	47
27.	...एक ही समाधान	पूर्णिमा दीपक पांडेय	49
28.	तुम पर ही आस है	हरीतिमा	51
29.	अपनाएँ अणुव्रत	राजू सोनू घुले	53
30.	सीख	चित्रा त्यागी	55
	कहानी		
31.	ममता	श्रद्धा पांडेय	57
32.	गिद्ध	महेंद्र कुमार चतुर्वेदी	61
33.	धूप की किरण	किशोरी मोहन	68
34.	क्षमा	डॉ. विजेता आर्या	74
35.	सुबह	आकांक्षा शर्मा	83
36.	नई राह की ओर	रजनी कंसल	92
37.	मानवता	डॉ. अरुण कुमार वर्मा	99
38.	एक थी सपना	सुशीला तंवर	103
39.	संकल्प	माया अंबुलकर	106
40.	यात्रा	डॉ. नीना	114
41.	नई धाराएँ	अभिलाष राजपूत	117
42.	फाँसी की रस्सी	विनोद नायक	124
43.	असर	अमित कुमार	127
44.	वह कार ड्राइवर	डॉ. उर्मिला विश्वकर्मा	131
45.	मिसाल	सलिल श्रीवास्तव	136
46.	संघर्ष	किरण पाठक	140
	नाटक		
47.	भारतीय किसान	रीता नायक	145
48.	शिक्षा की महिमा	मंजू बक्शी	168
49.	भ्रष्टाचार की आग	विनोद नायक	181
50.	सच्चा जरूरतमंद	आरती दुबे	201
51.	ज़माना बदल गया	संतोष दुआ	206
52.	संकल्प	राजेश शर्मा	211

भाग - 1

कविता

एक नई सुबह

❑ **नीरजा चतुर्वेदी**
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
श्रेष्ठ विहार, दिल्ली

सुबह-सुबह अब अखबार
पढ़ने की इच्छा नहीं होती।
वही हत्या-मारकाट,
लूटखसूट-व्याभिचार,
आतंकवाद-षड्यंत्र,
राजनीतिक उठापठक,
टी.वी. पर भी
वही अखबार वाले समाचार
लोमहर्षक तरीके से पेश।

व्यावसायिकता की चासनी में
परोसे गए सीरियल,
देखकर जिन्हें छिन जाता है चैन,
उचट जाती है नींद,
बदहवास शोर
और सायं-सायं करता सन्नाटा;
इनके होते आँखों में
नए सपने आएँ तो आएँ कैसे?

हे पर्वतो! बर्फ की चादर ओढ़
अड़िग ही रहो,

चिनार-चीर-देवदार के वृक्ष
कहीं झुक न जाएँ,
उन्हें आत्मसात करो।
बम व धमाकों से भयभीत
अपने घोंसलों में कैद
हे पक्षियो! बाहर आओ,
अखबारों में मारकाट,
धमाकों की जगह
अपनी चहचहाहट भर जाओ।
लिख दो नीला-नीला आसमान,
हरी-भरी धरती,
फूल, कली, भवरें,
खेत-खलिहान,
शीतल हवाएँ और
मुस्कुराता हुआ इंसान।

हे सूरज, उगो;
बिखेरो किरणें जिंदगी में
नई उम्मीदों की।
रेतीले मैदानों से
सागर की लहरों तक
लिख दो एक नई सुबह।

हे सूरज! बहुत हो चुका,
अब तो अंधकार को भगा दो,
भारत के जन-मानस को
खुशियों से जगमगा दो। ❍

अहिंसा के बिरवे

❑ **उर्मिला**
दयावती मोदी अकादमी
मोदी पुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश

बहुत लहरा रही, आज हिंसा की फसलें,
प्रदूषित हुई हैं धरा की हवाएँ।
चलो फिर अहिंसा के बिरवे उगाएँ।

बहुत वक्त बीता कि जब इस चमन में,
अहिंसा के बिरवे उगाए गए थे।
थे सोये हुए भाव जन-मन में गहरे,
पवन सत्य द्वारा जगाए गए थे।

बने वृक्ष वट-वृक्ष छाया घनेरी,
धरा जिसको महसूस करती अभी तक।
उठी वक़्त की आँधियाँ कुछ विषैली,
नियति महसूस करती अभी तक।

नहीं रख सके हम सुरक्षित धरोहर,
वक़्त है अभी भी हम चेत जाएँ।
चलो फिर अहिंसा के बिरवे उगाएँ।

नहीं काम हिंसा से चलता है भाई,
सदा अंत इसका रहा दुःखदायी।
महावीर, गांधी ने अनुभव किया, फिर
अहिंसा की सीधी डगर थी बताई।

रहे शुद्ध मन, शुद्ध तन, शुद्ध चिंतन,
अहिंसा के पथ की यही है कसौटी।
दुःखद अंत हिंसा का होता हमेशा,
सुखद खूब होती अहिंसा की रोटी।

नई इस सदी में, सघन त्रासदी में,
नई रोशनी के दिए फिर जलाएँ।
चलो फिर अहिंसा के बिरवे उगाएँ। ❍

दीपशिखा

❑ **निलांजन सेन**
ज्ञान विद्यालय
ज्योति कुचि लोखरा, कामरूप, गोवाहाटी, असम

उच्चाकांक्षाओं के मानस पटल पर प्रतिष्ठित,
मेरे जीवन को आलोकित करता,
प्रतिदिन, प्रतिक्षण, प्रतिनियत, 'अणुव्रत'।

क्षीण होती मानव-मूल्यों की दीपशिखा,
विलीन होती उम्मीदों के नभ में,
मेरी शाश्वत मूल्यों की विशाखा,
रहता मैं प्रतिक्षारत इस उम्मीद में
कि जल उठेगी अग्निशिखा
जो है मेरे अंतःमन में
कार्यरत 'अणुव्रत'।

यह नहीं अलस-निद्रा का समय,
न है समय जब किया जाए शमन का भय,
दृढ़-निश्चयता की वज्र ज्योति करस्थ कर,
हे मानव उठ!
वह देख कालचक्र का चक्र
घूमता तेरी ढलती आय को आश्रय कर,
है समय अभी भी,
दौड़ जा उस पथ पर
अपने बल-पौरुष के चढ़कर रथ,
फैला दे सौरभ 'अणुव्रत'।

जीवन का मूल शब्द है 'निरंतर कार्य',
कार्य को जो सफल बनाता है वह 'धैर्य',
धीरता के इस युद्ध में
विजयश्री को है चुम्बन कराता शौर्य,
अकेले ही तुझे चलना पड़े अगर,
भय मत कर / हो अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर।

धर्म, न्याय और परोपकार
के हथौड़े से पिटकर
बना अपनी खुद की 'प्रशस्ति-पत्र'
और लिख दे नाम 'अणुव्रत'। ❍

दुविधा के बादल

❑ **वीना फोगाट**
विकास भारती पब्लिक स्कूल
सेक्टर-24, रोहिणी, दिल्ली

होटलों में काम करते,
सड़कों पर गाड़ी धोते,
भीख माँगते, बोझ ढोते,
कचड़ा बीनते, कपड़ा बुनते,
गंदे मटमैले चिथड़ों में,
कभी घृणा से, कभी करुणा से
देखा होगा तुमने मुझे अन्जाने में।

कुछ ने देनी चाही मुझे शिक्षा,
कुछ ने आगे बढ़कर की मेरी रक्षा।
बना दिया कानून मेरे हित में,
लगा दी पाबंदी मेरे काम में।

निःस्वार्थ सहायता से अपनी
बचाना चाहा मेरा बचपन।
बाल-शोषण के विरोध में
चलाई सशक्त लहर क्रांति की।

देख प्रेम, छलकी आँखें,
आशा पा अरमान जागे,
पर, प्रसन्नता के नभ पर,
छाए दुविधा के बादल।

एक जन के नाममात्र वेतन से
मिलता नहीं भोजन एक वक्त का।
पिता के दायित्वों को बाँटने का
सपना अधूरा रह जाएगा।

है नहीं देह ढाँकने को वस्त्र,
है नहीं सिर छिपाने को छत,
गुजर रहा जीवन अभावों में,
सड़ रहा तन तनावों में।

पिता की कैसे मदद करूँ?
माँ की पीड़ा कैसे दूर करूँ?
बहन को कैसे विदा करूँ?
भाई को कैसे सक्षम करूँ?
है यही जीवन का लक्ष्य। ❍

जीवन का आधार-अणुव्रत

❑ **मदन कौशिक**
वैश्य मॉडल सी.सै. स्कूल
भिवानी, हरियाणा

जब अणुव्रत हो जीवन का आधार,
तो फिर होगा कैसे अत्याचार।
इसमें छोटी-छोटी बातें जुड़ी हैं,
जैसे गले में मोती की लड़ी है।
ये संकल्पों का जोड़ बना है,
अणुव्रत तो बेजोड़ घना है।
अणुव्रत को अपनाओ तुम,
मिथ्याचार मिटाओ तुम।

मन को बदलने का आधार है,
इसमें छिपा हुआ सदाचार है।
जिसके दिल में इसकी छाप है,
उसका जीवन अच्छा आप है।
वो नहीं गलत का साथी हो,
उसकी गर्व से चौड़ी छाती हो।

सबको अणुव्रत से आस है,
बातें इसकी सब खास हैं।
यह लालच-लोभ मिटाता है,
यह भ्रष्टाचार हटाता है।
जिसने इसको मान लिया,
सच्ची राह को जान लिया।

इससे अवगुण रूपी दंश मिटेंगे,
असामाजिक कंस मिटेंगे।
मिट जाएँगे कंस यदि सब,
अनाचार ना होगा फिर तब।
सुधार यदि तुम चाहते हो,
फिर अणुव्रत क्यों नहीं अपनाते हो। ❍

आओ रचें ऐसा समाज

❑ **वंदना शर्मा**
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
तलवंडी, कोटा, राजस्थान

आओ रचें एक ऐसा समाज
जिसके प्राण हो अणुव्रत का सार,
और अणुव्रत ही आधार हो।
मन में कर संकल्प परस्पर प्यार बढ़ाएँ,
हो पूर्वाग्रह से मुक्त प्रेम,
मानवता का संसार सजाएँ।
सत्संग ही आधार सुख का
निस्वार्थ त्याग महान है,
महापुरुषों द्वारा गाया गया इसका गुणगान है।
सत्यनिष्ठ बनों तुम जलो दीपक के समान,
संपन्नता मन की रखो, धन है धूरि समान।
आओ रचें एक ऐसा समाज
जिसके प्राण हो अणुव्रत का सार।

सेवा, सुमिरन, सत्संग रहें चिर जीवन संगी,
हितचिंतन, मनन, मानव मूल्यों से हो दुनिया रंग-बिरंगी।
कर दृढ़-संकल्प जगाओ सद्भावना फिर समाज में।
नशे से मुक्त हो समाज, प्रेम और सौहार्द बढ़े,
सभी एक-दूसरे की उन्नति का स्वप्न लिए
अपंक हो ईश गोद चढ़ें।
देश का बचपन खुशहाल हो, स्वस्थ नौनिहाल हो,

सद्विचारों की मंदाकिनी में धुला नवनिर्मित समाज हो।
न दीन हो कोई न याचक बनने की यंत्रणा सहे,
खुद हाथ बढ़ाकर करें सहयोग ऐसे
सहृदयों के हाथों दीनों का उद्धार हो।
आओ रचें एक ऐसा समाज
जिसके प्राण हों अणुव्रत का सार।

नारी को फिर मिले उचित सम्मान
उसे पूजने वाला संसार हो।
सबको मिले शिक्षा का दान
झोली न किसी की खाली हो,
हर दिन मिलकर फिर ईद मने, हर दिन दीवाली हो
आओ रचें एक धर्म नया
जिसका आधार मनुष्यता से प्यार हो।
आओ रचें एक ऐसा समाज
जिसके प्राण हो अणुव्रत का सार।

संयम, अनुशासन से नेकी सिखाना है,
बदी को मिटाकर समाज को सुंदर बनाना है।
आत्मशुद्धि का अभियान चला
सबको सदाचार सिखाना है,
समाज ही नहीं भारत को समरस, स्वच्छ बनाना है।
आओ कर संकल्प रचें एक ऐसा समाज
जिसके प्राण हों अणुव्रत का सार। ❍

कर सेवा, भूलें उपकार

❑ **किरण शर्मा**
केंटरबरी मॉडल पब्लिक स्कूल
विजय पार्क, मौजपुर, दिल्ली

परहित सरिस धर्म नहीं भाई, इस उक्ति को भूल न जाना।
तन-मन-धन से सेवा करना, किंतु नहीं अहसान जताना।
परम धर्म है सेवा करना, करना नहीं किंतु अभिमान।
सेवा हो अधिकार हमारा, ईश कृपा का यह वरदान।

किया किसी पर यदि उपकार, भाग्य से मिला उसे उपहार।
हम हैं केवल मात्र निमित्त, हुई कृपा सेवा स्वीकार।
सेवा के बदले यश मान, नेता, पद शासक सम्मान।
करें कभी न इनकी चाह, अन्यथा पाएँगे अपमान।

कर्म के फल में यह आसक्ति, विफलता में दे घोर विषाद।
कर सेवा, भूलें उपकार, जीवन-पर्यंत न हो यश-चाह।
सेवा से मिलते आशीष सेवा हित लें प्रभु अवतार।
सेवा हो निःस्वार्थ सदा ही, स्वप्न सदा होते साकार।

सब प्राणी के हित में रहना, द्वेष रहित करें व्यवहार।
सब के प्रति ही दया भाव हो, तभी बड़ों का मिलता प्यार।
ईश में श्रद्धा, सम, सद्भाव, त्याग शील सौजन्य अपार।
सहिष्णुता, प्रेम, दया, करुणामय सेवा के ये तत्त्व उदार। ❍

अभिनव प्रयास

❑ **सुनम प्रसाद**
लाल बहादुर शास्त्री हिंदी उच्च विद्यालय
गेट बाजार पो. भक्तिनगर, सिलीगुड़ी, पं. बंगाल

अणुव्रत आंदोलन है
सामाजिक समस्याओं का समाधान।
अणुव्रत का पालन करने से
होगा विश्व अति कल्याण।
इसका तो है लक्ष्य यही,
सभी समस्याओं का निदान।
अणुव्रत आचार-संहिता का
पालन कर होंगे सभी महान।

अहिंसा, समता, ममता तथा
नशा मुक्ति का देता है ज्ञान।
व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के
शुचि निर्माण में इसका असीम अवदान।
मानव-सेवा, मैत्री भाव का
करता रहता है प्रचार,
हिंसा, भेद, कुवृत्तियों का
करता नित संहार।

अणुव्रती बनकर ही हम
कर सकते मानव कल्याण।
सामाजिक समस्याओं का
समाधान कर लाएँगे नया विहान।

संयम युक्त नैतिक जीवन का
करता नव निमार्ण,
इसका परम उद्घोष है
अच्छे बने सब इंसान।

संयममय जीवन धारण कर
करता जन-जन मन पावन।
अपने से अपना अनुशासन
नैतिक शिक्षा की यह खान।
छोटे-छोटे संकल्पों का पालन कर
मानव को शुचि बनाया।
सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से
यह हमें सिखलाया।
इसको जीवन में अपना कर
स्वस्थ समाज बन जाए,
मानवीय मूल्यों, सत्य, अहिंसा
का नित पाठ पढ़ाये।

नए समाज निर्माण का
नित अभिनव प्रयास।
मानव-मानव बना रहे,
यह है इसकी आस।
अणुव्रत नित समाज का
बदले युग की धार,
मानव-मानव बना रहे
यही है इसका सार। ❍

मूल्य न बिसरें

❑ **राजेंद्र कुमार शिवप्रसाद गुप्ता**
आर.बी.टी. विद्यालय
डोंबिवली, ठाणे, महाराष्ट्र

आरक्षणों के व्यूह में प्रतिभा क्षण न हो पाए,
सबको सम-अवसर मिले, मिथ्या वरण न हो पाए।
सब पढ़ें-आगे बढ़ें, यह नीति सर्वसम्मत रहे,
शील-शुचिता-शांति-संयम का सदा अणुव्रत रहे।

जो छुए दानव कोई, आँचल यदि विकृत मन से,
काट दो वह कर हरि, पुनः अपने सुदर्शन से।
सिर उठे सम्मान से ऐसी मनु-सीरत रहे,
शील-शुचिता-शांति-संयम का सदा अणुव्रत रहे।

जाति-बंधन तोड़ तजो मनु, व्यर्थ के इस दर्प को,
बंधुता से दो कुचल अस्पृश्यता के सर्प को।
ना रहे जन-मन उपेक्षित, भावना यह सर्वत्र रहे,
शील-शुचिता-शांति-संयम का सदा अणुव्रत रहे।

छोड़ हिंसा-पथ, प्रखर-संकल्प नव-विहान में,
प्रेमरस बरसा करे नित भजन-औ-अजान में।
सर्वधर्म-समभाव का, एक स्वर अभिमत रहे।
शील-शुचिता-शांति-संयम का सदा अणुव्रत रहे। ❍

बेटियाँ

❑ **आरती असावा**
राजश्री विद्या मंदिर
बामल्ला, उमल्ला, भरूच, गुजरात

जो कहते हैं समस्या है बेटियाँ,
तो हम कहते हैं समाधान हैं बेटियाँ।
जो कहते हैं कुल दीपक है बेटे,
तो हम कहते हैं
आफताब-सी रोशनी है बेटियाँ।

जो कहते हैं बेटे रहते हमेशा हमारे साथ,
तो हम कहते हैं, दूर से भी दुआएँ करती हैं बेटियाँ।
जो कहते हैं वंश की बुनियाद है बेटे,
तो हम कहते हैं दो-दो वंश को बढ़ाती हैं बेटियाँ।

जो कहते हैं, दुनिया में परचम फहराते हैं बेटे,
तो हम कहते हैं देश की लाज कहलाती हैं बेटियाँ।
जो कहते हैं, बुढ़ापे का सहारा हैं बेटे,
तो हम कहते हैं माँ-बाप का जीवन सँवारती हैं बेटियाँ।

जो कहते हैं कमा कर लाते हैं बेटे,
तो हम कहते हैं घर चलाती हैं बेटियाँ।
जो कहते हैं वीर बहादुर हैं बेटे,
तो हम कहते हैं, झाँसी की रानी हैं बेटियाँ।

जो कहते हैं समाज में मान-सम्मान हैं बेटे,
तो हम कहते हैं परिवार का गौरव हैं बेटियाँ।

जो कहते हैं मोक्ष दिलाते हैं बेटे,
तो हम कहते हैं जीते जी संसार दिखाती हैं बेटियाँ।

गर इतना सब कुछ हैं बेटियाँ,
तो क्यों जलाते हैं बेटियाँ?
क्यों करते हैं भ्रूण हत्या?
जब वंश बढ़ाती हैं बेटियाँ!

बंद करो अब बलि चढ़ाना बेटियों की
और मन्नत माँगना बेटों की,
क्योंकि अपनी नजर में महान हैं बेटियाँ,
जीवन की समस्याओं का समाधान हैं बेटियाँ। ❍

संस्कार

❑ **कनक शर्मा**
आर्मी पब्लिक स्कूल
महू, मध्य प्रदेश

सभ्यता व संस्कृति की उदयस्थली,
ऋषि-मुनियों की जन्मस्थली - भारत।

प्रतिस्पर्धा की इस दौड़ में जहाँ
शिक्षा का विस्तार ही विस्तार है,
लेकिन संस्कृति का निस्तार है।

आधुनिकता की दौड़ में,
यांत्रिक युग की होड़ में,
आज का मानव भावना विहिन है,
वह केवल एक मशीन बनकर रह गया
रिश्ते-नातों से परे ढह गया।

बिना संस्कृति के शिक्षा भी अधूरी है,
तभी तो रिश्ते-नातों में दूरी है।
संस्कार विहिन मानव
मान-सम्मान, अनुशासन से परे है,
ईश्वर से तो क्या
वह स्वयं से भी न डरे है।

बिना संस्कृति के मानव
आज बन गया है दानव।
जहाँ देखो वहाँ उपद्रव मच रहा है,

आज घर-घर में कार है,
लेकिन संस्कार हर घर से बाहर है।

यदि हमें सत्य, अहिंसा और शांति को
वापस लाना है, तो संस्कारों को लाना होगा,
मानव को नैतिक मूल्यों को बताना होगा,
शिक्षा के साथ संस्कारों को जोड़ना होगा,
सभ्यता व संस्कृति का पाठ पढ़ाना होगा। ❍

वो ही तो अणुव्रत है

❑ **पवन कुमार**
आदर्श विद्या निकेतन वरि. मा. विद्यालय
सेक्टर-13, फरीदाबाद, हरियाणा

छोड़ पाप की छाया जो सच्चाई में रत है,
जिसमें मेहनत, साहस है वो ही तो अणुव्रत है।

जो उपदेश न करके करनी पर है बल देता,
जो हर एक समस्या का साधारण हल देता।
जो धर्मों की दीवारों को तोड़ परे जाता,
मानवता के उच्च शिखर पर सब संग मुस्काता।
देश की खातिर जिसका गात खून से लथपथ है,
जिसमें मेहनत, साहस है वो ही तो अणुव्रत है।

जो जन-जन को एक करे अन्याय मिटाता है,
'जिओ और जीने दो' के जो गान को गाता है।
जो जीने की कला सिखाता मिटा के सारे भेद,
भाई-भाई को मिलवा दे रहने ना दे खेद।
जो अंतर्मन नीति है जो एक इबादत है,
जिसमें मेहनत, साहस है वो ही तो अणुव्रत है।

जो विश्वास है, ममता है, जो हृदयों का है प्यार,
जो मानव को सिखलाता मानवता का व्यवहार।
जो हृदयों की गहराई में सदा ही रहता है,
जो इंसानों को केवल इंसान ही कहता है।
प्यार भरा उपदेश जहाँ ना नाम की नफरत है,
जिसमें मेहनत, साहस है वो ही तो अणुव्रत है।

अणुव्रत अनुशासन पालन कर शासन परिवर्तन हो,
अणुव्रत पालन कर लोगों का सिंहों सा गर्जन हो।
अणुव्रत जीवन जो जीता वो होता है आदर्श,
अणुव्रती सदा फैलाता है अपने लोगों में हर्ष।
अणुव्रत मीरा की भक्ति वीरों की शहादत है,
जिसमें मेहनत, साहस है वो ही तो अणुव्रत है।

एक अणुव्रती समाज में चैनो-अमन दिला सकता है,
अपने कर्मों की खुशबू से जग महका सकता है।
सभ्य समाज की रचना में अणुव्रत ही उपयोगी है,
क्योंकि इसको अपनाने वाला बनता योगी है।
जिसने पालन किया अणुव्रत का वो समाज उन्नत है,
जिसमें मेहनत, साहस है वो ही तो अणुव्रत है।

गर समाज अणुव्रत अपनाए रामराज आ जाएगा,
भ्रष्टाचार का बीज तलक भी दुनिया से मिट जाएगा।
इसीलिए अणुव्रत अनुशासन सबके लिए जरूरी है,
ये समाज की सारी कमियाँ पल में करता पूरी है।
'पवन' इसे अपना लो बंधु ये ही जीवन सत् है,
जिसमें मेहनत, साहस है वो ही तो अणुव्रत है। ❍

समाधान में अणुव्रत

❑ **शशि बाला ठाकुर**
पैरामाउंट इंटरनेशनल स्कूल
द्वारका, सेक्टर-23, दिल्ली

अगणित समस्याओं का घेरा
तो समाज में है चहुँओर,
पर समाधान में अणुव्रत
ही है इनका छोर।

समाज ही किसी देश का
होता है दर्पण,
उसकी स्वच्छ छवि के प्रति
हमारा हो समर्पण।

अशिक्षा के अंधेरों से
निकलकर सर्वप्रथम,
ज्ञान के प्रकाश का मार्ग
प्रशस्त करें हम।

योग्यता समाज की जब
पाएगी सुअवसर,
उन्नति की डगर से
हटेगा बेरोजगारी का पत्थर।

होगी कर्मरत जब
हर इक प्रतिभा,
देश-रत्न दमकेगा उनसे,
होगी स्वर्ण आभा।

भुखमरी, गरीबी के छँटेंगे जब बादल
कलुषित न होगी नव पीढ़ी तब दिग-भ्रमित।

रिश्वत अजगर के
टूटेंगे जब दंश,
धराशाही होंगे
अन्यायी रूपी कंस।

ईमान को मिलेगा
जब उसका भाग,
जलाएगी न जीवन
बेईमानी रूपी आग।

दानव भ्रष्टाचार का
न उठेगा कभी फिर,
कुचलेगा जब समाज
उसका सिर।

दिशा जब होगी सभी की
लक्ष्य को निश्चित,
होगा न समाज जब
कदापि भ्रमित।

नारी का समाज में जब
न होगा तिरस्कार,
सँवरेगा देश-रूप,
होंगे पुष्ट संस्कार।

समाज तरु मूल में
करें 'मूल्यों' का सिंचन,

त्याग दुष्कर्म, पाप को
परमार्थ का हों उन्नयन।

परमार्थ होगा जब
सत्य कर्म-धर्म,
समझेगा एक जन, तब
दूसरे का मर्म।

होगा भातृ-भाव सब में
जब पल्लवित,
सूत्र एकता का तब
होगा सुगठित।

भेदों की दीवारें
टूटेंगी खुद-ब-खुद,
होगा जन-जन जब
कर्तव्य कटिबद्ध।

होंगे जब आदर्श के
'वही' उच्च प्रतिमान,
अणुव्रत हों तो होगा इन
सामाजिक समस्याओं का समाधान। ❍

निभाएँ धर्म मानवता

❑ **भरत व्यास**
सेंट्रल अकादमी सी.से. स्कूल
सेंथी, चित्तौड़गढ़, राजस्थान

निभाएँ धर्म मानवता,
यही शुभ कर्म हो अपना।
जब हो पूर्णता इसकी,
धन्य मेरा यह जीवन हो।

यही संदेश अणुव्रत का,
यही उद्देश्य मेरा है।
जब हो पूर्णता इसकी,
धन्य मेरा यह जीवन हो।

यही है ज्ञान की गंगा,
यही मानव की यमुना है।
बहे जब पूर्ण यौवन से,
धन्य मेरा यह जीवन हो।

यह पावनता पुराणों की,
प्रबलता अग्नि-बाणों-सी।
जो इसकी धार सह लूँ तो,
धन्य मेरा यह जीवन हो।

यही मानवता का दर्शन,
यही जीवन का मर्जन है।
इसी की मंत्रणा कर लूँ,
धन्य मेरा यह जीवन हो।

यही उत्साह जीवन का,
यही है सार जीवन का।
यही बस धारणा धर लूँ,
धन्य मेरा यह जीवन हो।

अणुव्रत ज्ञान का है पुञ्ज,
बना यह कुञ्ज महकाए।
समता-धार से सीचूँ,
धन्य मेरा यह जीवन हो।

सुवासित पुष्प खिल जाए,
महके हर जीवन की बगिया।
गुलाबों-सी जो रंगत हो,
धन्य मेरा यह जीवन हो।

यही जीवन की ज्योति है,
यही अनमोल मोती है।
यही शृंगार जो कर लूँ,
धन्य मेरा यह जीवन हो। ❍

तंग दायरे मत देख

❑ **नर्बदा शर्मा**
ललिता पब्लिक स्कूल
नागपुर, महाराष्ट्र

समाज के तंग दायरों को मत देख,
बदलते हुए हालात को देख।
रूढ़ियों को तोड़,
अपने अहंकार को छोड़,
कंधे से कंधा मिला,
दिलों के रिश्ते तू जोड़।
किस तरह से बदला है जमाना,
उसके अंजाम को देख।

क्यों दुखी होता है लड़की होने पर,
क्यों खुश होता है लड़का होने पर।
ये तो ऊपर वाले का रहमोकरम है,
लड़की हो कोई अभिशाप नहीं है।
अगर समझना ही है इस पहेली को,
तो एक जन्म तू लड़की बनकर देख।

काश! खुदा ने तुझे लड़की बनाया होता,
दहेज के लालच में जिंदा जलाया होता।
या फिर पति की चिताग्नि में
तुझे भी बिठाया होता,
किस तरह से सहा है उसने
उसके धीरज को देख।

माँ की ममता, बहन का प्यार
पत्नी का शृंगार,
ये सब औरत से ही तो मिला है,
फिर क्यों इसे कमजोर, क्यों बनाया अबला है।
जिंदगी के हर पहलू में
यह अपना स्थान लिए हुए है,
एक बार तू इस पहलू को
समझकर तो देख।

क्यों दुखी होता है
असफलता पाने पर,
सफलता मेहनत की कुंजी है।
अगर सफलता अर्जित करनी है,
तो मेहनत की कुंजी साथ ले चल।
मेहनत तू करके देख,
समाज के तंग दायरों को मत देख,
बदलते हुए हालात को देख। ❍

पेड़ की मंत्रणा

❑ **डॉ. अरुण कुमार वर्मा**
जवाहर नवोदय विद्यालय
सिरमौर, जिला : रीवा, मध्य प्रदेश

शाम एक दिन हुए एकत्रित
जंगल के कुछ पेड़,
मानव की निर्ममता पर
बहस दी छेड़।

शीशम ने अभिवादन कर
बात को रखा जारी,
स्वार्थ वृत्ति बढ़ गई मनुज की
रोज चलावे आरी।
कोने से इक ठूँठ आम ने
धीरे से कहा, सुन भाई,
फल खाया, छाया में लेटा,
अब मुझे बेचने की चर्चा
कर रही थी उसकी लुगाई।

रोक आम को बीच में
पीपल कड़ककर बोला
मानव के विरोध में
अपना मोर्चा खोला,
इस तरह से अब न निभेगी
अपनी उनसे रिश्तेदारी,
जल्द ही वापस ले लेंगे हम
पर्यावरण से हिस्सेदारी।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में
बोले बरगद दादा
सुनो भाइयो, सब मिलकर
करते हैं यह वादा।
मानव के अपकार का बदला
हम उपकार से देंगे,
वह कैसी निभाए प्रीति
रीति अपनी न बदलेंगे। ❍

हमारी बदौलत

❑ **अर्चना जोशी**
श्री गुरु हरकिशन पब्लिक स्कूल
बेझनबाग, नागपुर, महाराष्ट्र

समाज जिंदा है हमारी बदौलत,
हम जिंदा हैं समाज की बदौलत।
समस्याएँ भी हैं हमारी बदौलत,
मुसीबतें भी हैं हमारी बदौलत।

दहेज प्रथा भी है हमारी बदौलत,
कन्या भ्रूण-हत्या भी है हमारी बदौलत।
रिश्वत लेना-देना भी है हमारी बदौलत,
जातिवाद भी है हमारी बदौलत।

संस्कारों से दूर भागती
जिंदगी है हमारी बदौलत,
द्वेष, ईर्ष्या, अत्याचार
भी है हमारी बदौलत
अन्याय भी है हमारी बदौलत।

समाज का गिरता स्तर भी है हमारी बदौलत,
समस्याओं का उदय भी है हमारी बदौलत।
अमीरी-गरीबी भी है हमारी बदौलत,
ऊँच-नीच भी है हमारी बदौलत।
समस्याएँ हैं हमारी बदौलत,
समाधान भी होगा हमारी बदौलत। ❍

आओ मिलकर रहें

❑ **तुलसी राम सैनी**
लेडी अनुसूइया सिंघानिया एजुकेशन सेंटर
झालावाड़, राजस्थान

आओ मिलकर रहें देश के वासियो,
दिल में नफरत बढ़ाने से क्या फायदा।

ना कोई हिंदू है, ना मुसलमान है,
हम सभी एक ईश्वर की संतान हैं।
तोड़ दो नफरतों की इन जंजीरों को,
इन्हें दिल से लगाने से क्या फायदा।

साँस भी एक है, धड़कन भी एक है,
खून भी एक है, जान भी एक है।
सब है अपने यहाँ, गैर कोई नहीं,
आग घर में लगाने से क्या फायदा।

एक ही बगिया के फूल हैं हम सभी,
एक ही देश की धूल हैं हम सभी।
लड़ना है तो वतन के लिए ही लड़ें,
खून अपना बहाने से क्या फायदा।

आओ मिलकर रहें देश के वासियो,
दिल में नफरत बढ़ाने से क्या फायदा। ❍

हर व्यक्तित्व सजाएँ

❑ **स्वर्ण लता झा**
एस.एस. मोटा सिंह सी.सै. स्कूल
जनकपुरी, दिल्ली

अणुव्रत के पावन प्रांगण में
कदम से कदम मिलाएँ।
संयम, सत्य श्रेष्ठ कर्मों से,
हर व्यक्तित्व सजाएँ।

संयम की है छाया यह,
साधनाओं का द्वार है।
तपबल इसकी समृद्धि है,
उच्चतम जीवन सार है।

यह धर्मों की धारा है,
यह कर्मों की धार है।
इसके नैतिक मूल्यों में
जीवन-चक्र सारा है।

सात्त्विक, सदगुण सहित हो जीवन,
जन-जन का आह्वान बने।
पशुवत हिंसा की परिपाटी
रहित जीवन जग प्राण बने।

उच्च विचार, श्रेष्ठ व्यवहार से
सहज व्यक्तित्व निर्माण करें।
क्रोध, लोभ, अहंकार छोड़,
मानवता का सम्मान करें।

भौतिकता की बलिबेदी पर
मानवता निष्प्राण है।
अनैतिक इस जीवन का,
अणुव्रत ही समाधान है।

चले असत्य से सत्य की ओर,
तभी तो होगी पावन भोर।
जीवन में नैतिक बल हो तब,
संयम का नाचेगा मोर।

जग-जग प्रतिपल सुखी हो केवल,
'छोटा संकल्प' महान है।
'जियो जीने दो' की नीति,
प्राणियों का सम्मान है।

दीक्षित हो अणुव्रत से जीवन,
जीवन का यह ध्यान बने,
संयम-सत्य-अहिंसा से,
सुरभित जीवन जग प्राण बने। ❍

उठो ऐ नौजवानों... !

❑ **चेतना भटनागर**
बिजनौर पब्लिक स्कूल
नजीबाबाद रोड, बिजनौर, उत्तराखंड

उठो ऐ नौजवानों,
अणुव्रत का यह नारा है,
संयममय जीवन हो
यह परम कर्तव्य हमारा है।

निज कल्याण करना है तो
जीवन पड़ेगा सुधारना अपना,
अश्लील शब्दों का प्रयोग छोड़ना,
अश्लील साहित्य नहीं है पढ़ना।

दहेज अनुबंधित तथा
प्रदर्शनयुक्त विवाह नहीं है करना,
जाति-भेद से ऊपर उठकर
देश में समरसता भरना।
हमें तो करना निज कल्याण,
यही धर्म हमारा है।
उठो ऐ नौजवानों!
अणुव्रत का यह नारा है।

शिक्षा का दिवला जले,
हम करें न कभी हिंसक कार्य।
पापियों-दुराचारियों का नाश हो,

दूर कर धर्मांधता,
प्रेम का संचार हो।

पढ़े-लिखें और सभी हों शिक्षित,
सभी ने यह स्वीकारा है,
मदमस्ती में हम यह न भूलें
क्या कर्तव्य हमारा है।
उठो ऐ नौजवानों!
अणुव्रत का यह नारा है।

अहिंसा की चेतना जगाओ,
सबको परस्पर प्रेम सिखाओ।
तन से दुख-दीन का दूर करो,
चाहे तन की साज-सँवार करो न करो।

शुभ कर्म धर्म हित नित्य करो,
मन से करो उस प्रभु का गान।
जिसने भेजा इस जग में,
करने को कर्म महान।
यही व्रत हमारा है,
उठो ऐ नौजवानों!
अणुव्रत का यह नारा है। ❍

हम भारत की संतान

❑ **विक्रम प्रसाद गौड़ 'रसिक'**
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय
नत्थूपुरा, बुराड़ी, दिल्ली

हम सब भारत की संतान,
पिता हिमालय का वरदान।

जन्म-जन्म तक माँ भारत की
सेवा सदा करेंगे हम।
दीनों-दुखियों की पीड़ा को
होकर सुहृद हरेंगे हम।
हो जावे निज भारत जननी,
अमरावती समान।
हम सब भारत की संतान।

हम सपूत हैं मातृ भूमि के,
जिसका मधुर स्नेह पावन।
करें अर्चना इस धरती की
जिसका अंक मनो भावन।
भारत के अविरल गौरव का,
करते रहें बखान,
हम सब भारत की संतान।

तात हिमालय के चरणों में,
सुर सरि का सुस्थान हुआ।
तुंग शीष है पूज्य जनक का,

पुलकित और महान हुआ।
नवल प्रकृति भी करती रहती
गिरिवर का सम्मान
हम सब भारत की संतान।

हिंदु-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई,
सभी हैं भारत माँ के लाल।
वैमनस्य को दूर भगाकर,
हम सब सतत रहें खुशहाल।
रक्त वर्ण है एक सभी का
और एक ही प्राण,
हम सब भारत की संतान।

कनक-माटी भारत की,
सौंधी-सौंधी औ प्यारी।
यह है तपो धरा जीवन की,
कांतिमयी मृदु छवि न्यारी।
विनसे कलह तिमिर भारत का,
उगे नवल नित भानू
हम सब भारत की संतान। ❍

जग का तुम कल्याण करो

❑ **ओपेन्द्र कुमार**
शैफाली पब्लिक स्कूल
जी.टी. रोड, दादरी, गौ.बु. नगर, उत्तर प्रदेश

प्रातःकाल उठते ही
ईश्वर का तुम ध्यान करो।
ऐसा हो अणुव्रत तुम्हारा,
जग का तुम कल्याण करो।
सामाजिकता नग्न हो रही,
फैली जात-पात की बीमारी।
विकट समस्या पैदा हो गई,
फैल रही बेरोजगारी।
निःस्वार्थ सेवा कर मानव,
भगवान का तुम ध्यान करो।

बूढ़े हो माँ-बाप गए अब,
उनकी सेवा करनी है।
भवसागर में नैया तेरी,
तब ही पार उतरनी है।
जिस माँ ने तुझे दूध पिलाया,
उसका तुम सम्मान करो।

अणुव्रत न्यास की भूमिका,
लोक-मर्यादा के अनुकूल है।
साहित्य सदाचार से युक्त,
बुराई के प्रतिकूल है।

सौहार्द प्रेम की भावना से,
सुंदर समाज का निर्माण करो।

अहिंसा के बनो पुजारी,
मानवता से प्रेम करो।
करो बुराई दूर समाज की,
अपने देश से प्रेम करो।
अणुव्रत न्यास का
बढ़-चढ़कर उत्थान करो। ❍

बस यही विकल्प है

❑ **संजय सिंह**
रोज़ पब्लिक स्कूल
सुल्याली, तहसील : नूरपुर
जिला काँगड़ा, हिमाचल प्रदेश

इस सुंदर संसार में हम आए,
तो मनुष्य कहलाए।
जब सामाजिक समस्याओं से टकराए,
तो आँखों से अश्रु निकल आए।

किया स्थिर मन, हौंसला बाँध,
थोड़ा समाज से हटकर आगे निकल आए।
एक से एक सामाजिक समस्या पर
चिंतन, मनन कर, हौंसला जमाए।

किया ध्यान से एक-एक समस्या का गणन,
साथ-साथ निवारण भी दौड़ आए।
हाजिर है गंभीर से गंभीर समस्या समाज की,
आप भी गौर फरमाएँ।

पहली समस्या जनसंख्या विस्फोट कहलाए,
दुनिया वाईरस की तरह लगातार फैलती जाए।

दूसरी समस्या प्रदूषण कहलाए,
प्रदूषित हवा के से स्वर्ग समान संसार नर्क कहलाए।

तीसरी समस्या महँगाई कहलाए,
रोटी, कपड़ा, मकान की कीमत आसमान चढ़ती जाए।

चौथी समस्या समाज की दहेज प्रथा कहलाए,
मानव की बुद्धि पर अनेक आवरण चढ़ाए।

पाँचवीं समस्या सांप्रदायिकता कहलाए,
पुरानी है परंतु इसी के कारण गुलाम कहलाए।

छठी समस्या भ्रष्टाचार कहलाए,
सुई से लेकर जहाज तक इस भ्रष्टाचार ने डुबाए।

सातवीं समस्या आरक्षण कहलाए,
वह उद्देश्य स्वार्थ बनता जाए।

रही इनके समाधान की बात,
तो अणुव्रत की बिछानी होगी बिसात।

छोटे-छोटे लेने होंगे संकल्प,
हम समस्याओं से छुटकारा पाने का
बस यही है एक विकल्प। ❍

समाज को जगाएँ

❑ **अनुपमा कुमार**
माउंट कार्मेल विद्यालय
ए-21, आनंद निकेतन, दिल्ली

जीवन की इस आपाधापी में
कुछ ऐसे लोग भी होते हैं,
जो समाज की खातिर
अपना सर्वस्व सौंपते हैं।
'अणुव्रत' ने ही इस ध्येय को
मानो आत्मसात किया है,
जनकल्याण के लिए ही
अर्जुन-सा लक्ष्य दिया है।
भारत विश्वगुरु बने इसके लिए
समाज को इकट्ठा करना है,
शिक्षा, संस्कृति, ज्ञान के समन्वय से
निरंतर आगे बढ़ना है।
आओ, हम यह कसम खाएँ,
एकल हो, समाज को जगाएँ।
निरंतर प्रगति के पथ पर
अपने भारत को ले जाएँ।
यही 'अणुव्रत' का है कथन,
जिसके प्रयासों के लिए निरंतर,
सभी कर रहे प्रयत्न। ❍

संयम

❑ **ताम्रध्वज शर्मा**
टैगोर पब्लिक स्कूल
वैशाली नगर, जयपुर, राजस्थान

जहाँ नहीं होता है सूरज,
वहीं होता अंधकार है।
फिर क्यों पूछे लोग सभी,
कौन इसका जिम्मेदार है।

दुख का कारण तृष्णा है,
सबको होता है यह ज्ञान।
फिर भी मनुज डूबा रहता है
लालच में बनकर अनजान।

क्या अपना और क्या है पराया,
सब कुछ है प्रभु की माया।
स्वीकार करो प्रभु का प्रसाद,
त्याग करो व्यर्थ उन्माद।

संयम है हर रोग की दवा,
सबको रखनी है मर्यादा।
असंयम चीनी का होता,
शूगर आप चला आता है।

लवण अधिक होता है जब,
बी.पी. से लड़ना पड़ता है।

अति आराम या अति का काम,
दोनों ही रोग बढ़ाते हैं।

संयम से कभी रोग न आते,
चिंता-दुख हैं नहीं सताते
अब तो पाओ अति से पार,
संयम ही जीवन-आधार। ❍

आधार

❑ **सोमा सिंह**
दिल्ली पब्लिक स्कूल
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

रखा जब धरती पर पहला कदम,
स्वच्छ आसमाँ पाया मैंने।
शुद्ध स्वच्छ हवा में साँस ली,
शुद्ध मृदुल ही जल पाया मैंने।
माँ ने अच्छे संस्कार दिए।

सुचरित्र उनसे बनाया मैंने,
परंतु आज ये अहसास हुआ,
युग परिवर्तन का आभास हुआ।
बदलती इस आबो-हवा में मुश्किल लेना
अब साँस हुआ।

चढ़ने को सफलता की ऊँची सीढ़ी,
आतुर है आज भावी पीढ़ी।
माता-पिता नौनिहालों को सफलता के
गुर सिखा रहे हैं।
इन 'सक्सेस टैक्स' होड़ में
संस्कार पीछे छूटे जा रहे हैं।
बदल रही है परिभाषाएँ,
नए जीवन मूल्य सामने आ रहे हैं।

हुआ जल में प्रदूषण, थल में प्रदूषण,
और प्राणवायु में भी प्रदूषण।
फैला कण-कण में प्रदूषण,
जीवन के क्षण-क्षण में प्रदूषण।

कैसा तम हुआ, कैसा अंधकार,
समाज में व्याप्त हुए हजारों विकार।
फिर कैसे टिका है ये संसार,
क्योंकि अभी बाकी है सदाचार।

आओ, मिल बाँटें प्रेम-प्यार,
सद्‌भावना बने समाज का मजबूत आधार।
संस्कारों से व्यक्तित्व बने सुदृढ़,
ऐसी एक नई पीढ़ी दे आज गढ़। ❍

...एक ही समाधान

❑ **पूर्णिमा दीपक पांडेय**
संगीता विद्यामंदिर
वीर सावरकर पथ, डोंबिवली (पूर्व)
ठाणे, महाराष्ट्र

स्वतंत्रता के बाद भी
भारत माता आजाद नहीं।
हाय! विडंबना ऐसी कि
गुलाम अपने ही घर में बनती जाती है,
समस्याओं के चक्रवात में
यूँ ही फँसती जाती है।
हाय! आजादी आज भी जंजीरों में जकड़ी जाती है।

भूख, गरीबी, लाचारी ने
खोखला कर दिया है देश को,
बेरोजगारी और भेदभाव ने
जकड़ रखा प्रगति को।
दहेज, बाल-विवाह और जाति-पाति से
बाहर आने को छटपटाती है,
हाय! आजादी आज भी जंजीरों में जकड़ी जाती है।

प्रगत राष्ट्र में होती है कन्या भ्रूण हत्या,
बेबस किसान मजबूर हैं करने को आत्महत्या।
बहू-बेटियाँ सुरक्षित नहीं अपने घर-परिवार में,
राजनीति और भ्रष्टाचार रहते एक मकान में।

कहीं दंगा, चोरी कहीं, तो
कहीं ऊँच-नीच और आतंकियों की परिपाटी है,
हाय! आजादी आज भी जंजीरों में जकड़ी जाती है।

हम समाज के, समाज हमारा,
इसके जिम्मेदार हम ही हैं,
इन समस्याओं को दूर,
करने के कर्णधार हम ही हैं,
इन समस्याओं का है एक ही समाधान,
'तुलसी' का दिया मंत्र है
'अणुव्रत' उसका नाम। ❍

तुम पर ही आस है

❑ **हरीतिमा**
सरदारनी सदा कौर खालसा गर्ल्स सीनियर
सैकेंडरी स्कूल, दरिया गंज, दिल्ली

मरिकल्पित गोष्ठी कवि की,
बैठे ब्रह्मा, विष्णु, महेश।
दबाए दाँतों तले उँगलियाँ! पूछें
कहो, कवि क्या है संदेश?

कवि बोला, बैठे-बैठे,
क्या सृष्टि रचते हो,
मानव के रूप में दावन का,
कल्याण करते हो।

भ्रष्टाचार में नाम कमाते हो!
नए इंसान में जन्म से,
अनाचार का बीज भरते हो।
मैं क्या करूँ,
तुम सृष्टि का गला घोंट
रहे हो
और कुर्सी पर बैठे-बैठे
हँस रहे हो।

कहाँ गई तुम्हारी सदाचारी की ताबीज़,
अब, उसमें उग रहा है
अत्याचार और अनाचार का बीज।

देश हो या विदेश की नारी,
सबला होकर भी अबला
हो गई बेचारी।

मैं क्या लिखूँ? लोग मुझ पर
भी हँसते हैं।
'तुम' मुझमें हो, ऐसा सब कहते हैं।
'ऐ' मेरे गुरु भाई
दुनिया देख कर फूट पड़ती
है रुलाई।
कुछ करो ऐसा कल्याण
न रहे कहीं अलग करने का सामान।

हम सब एक हैं।
तुम्हारी ही टेक है।
दुनिया के दंभ पर अविश्वास है,
तुम पर ही आस है।
हे, कवि, लोकनीति करो शुद्ध
क्योंकि मानव है प्रबुद्ध।
अरे कवि, तुम ही उसे सँभालो,
मानव में मानव का अहसास करा लो। ❍

अपनाएँ अणुव्रत

❑ **राजू सोनू घुले**
न्यू कैम्ब्रिज इंग्लिश स्कूल
नेहने निवास, डोंबिवली (पूर्व), मुंबई, महाराष्ट्र

आज मानव जीवन में हैं
इतनी सारी समस्याएँ,
और उन समस्याओं को
हल करने का तरीका है
अपनाओ अणुव्रत।

समाज में फैला है अत्याचार,
रोज सामने आ रहा है भ्रष्टाचार।
रोज हो रहे हैं बलात्कार,
क्या यही है हमारा संसार।

आज की हर युवती और नौजवान,
फँसा हुआ है झूठी शान में।
मोबाइल, स्मार्ट फोन, फेसबुक और नेट के
चक्कर में भूल गया है सब संस्कार।

अब उसे इक्कीसवीं सदी के
साथ चलते-चलते खुद को पहचानना है,
इस स्पर्धा के युग में
आखिर उसे अणुव्रत को ही अपनाना है।

उसे अपनाना होगा अणुव्रत भरा जीवन।
अनुशासन, अहिंसा, सत्य से ही

उसका जीवन संयमित होगा
और तभी वो विश्व में प्रेम पाएगा।

विद्यार्थी, शिक्षक, मजदूर और व्यापारी,
सब मिलकर करेंगे सच्ची मेहनत।
अणुव्रत के नियमों का करेंगे पालन,
तभी तो हमारा देश होगा औरों के लिए उदाहरण।

योग और अणुव्रत की साधना से,
सच्ची लगन और मेहनत से,
हर गली, शहर, नगर, राष्ट्र और देश,
होगा समाज, स्वच्छ और सुंदर,
इसलिए अपनाओ अणुव्रत। ❍

सीख

❑ **चित्रा त्यागी**
दयावती मोदी अकादमी
मोदीपुरम, मेरठ

जो कुछ सीखा तुमने यहाँ से, जीवन में अपनाना तुम,
सत्पथ पर चल करके बच्चो, जीवन सफल बनाना तुम।

पर्वत-सी ऊँचाई छूना, सागर जैसी गहराई,
साहस, शौर्य, सरलता, धीरज, हर मुश्किल की परछाई,
अवरोधों से नहीं डरना, ना ही कभी घबराना तुम।

सतत परिश्रम और लगन हो, अटल इरादे दृढ़-विश्वास,
मन की शक्ति, चारित्र्य और आत्म साधना पल-पल साथ।
इच्छित परिणामों का संबल, मिथ अभिमान न लाना तुम।

जीवन में कुछ पाना है तो, लक्ष्य कठिन रखना होगा,
कंटक-पथ भी मिले राह में, हँस करके चलना होगा।
विजित होएगा स्वप्न तुम्हारा, फूलों-सा मुस्काना तुम

यही हमारा लक्ष्य-ध्येय है, अटल ध्वजा लहराओ तुम,
बोस, भगत और ए.पी.जे. से परमहंस बन जाओ तुम।
नींव धरी जिन गुरुओं ने, उनको सम्मान दिलाना तुम।
सत्पथ पर चल करके बच्चो जीवन सफल बनाना तुम ❍

भाग-2

कहानी

ममता

◈ श्रद्धा पांडेय
एहल्कॉन पब्लिक स्कूल
मयूर विहार, फेस-1, दिल्ली

थोड़ी देर तक कमरे में सन्नाटा छाया रहा। अचानक मुनिया की आवाज सुनाई पड़ी, "माँ, दरवाजा बंद कर लो।" रेवती को तो पहले अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। थोड़ी देर तक बिस्तर पर ऐसे पड़ी रही जैसे साँप सूँघ गया हो, फिर उठकर बैठ गई। आँखों से गंगा-यमुना बहने लगी। सोचा--किस खून पर मैं भरोसा कर जन्म-जन्म का रिश्ता बाँध बैठी? झूठी ममता कभी संतान को बाँध सकती है क्या?

रेवती की आँखों से निरंतर आँसू बह रहे थे। बार-बार मन को समझा रही थी, अब रोने से क्या फायदा? चलो अच्छा हुआ, झूठी ममता का भ्रम भी जल्दी ही टूट गया। सोने का लाख प्रयास करने के बाद भी जब रेवती सो नहीं पाई तो उठकर बैठ गई।

उसे याद आई वह रात जब अपनी छाती से चिपकाए एक नवजात कन्या को लिए बरसात की गहरी काली रात में वह अपनी झोपड़-पट्टी में पहुँची तो हँगामा खड़ा हो गया था। रघुबीर ने कहा "तुझे पता भी है कि तूने क्या किया? जा, जाकर इस बच्ची को पुलिस के हवाले कर आ वरना पुलिस खुद आ जाएगी। बच्ची तो ले ही जाएगी, साथ में पीटेगी भी।"

थोड़ी देर तक वह चुपचाप खड़ी रही, फिर अपने घर की तरफ चल दी। घर क्या था, लकड़ी के डंडों के सहारे टाट से चारों तरफ से घिरी हुई जगह जिसे वह गर्व से अपना घर कहा करती थी। कई बार रघुबीर से कह चुकी थी, "देख शादी के बाद तुझे ही मेरे घर आना पड़ेगा। मैं अपना घर नहीं छोड़ सकती।"

रात को जब थोड़ी बरसात कम हुई तो उसने बच्ची को गोद में उठाया और चल दी। कहाँ? नहीं पता। किस दिशा में? ये भी नहीं पता, बस चलती जा रही थी। उसे जाना था ऐसी जगह, जहाँ कोई ये न पूछे कि ये बच्ची किसकी है? चलते-चलते सुबह हो गई। एक नल पर पानी पीने के लिए रुकी। वहीं सड़क पर एक औरत स्टोव जलाकर चाय बनाने की तैयारी कर रही थी। इधर बच्ची भूख से बिलख रही थी। औरत ने कहा, "बच्ची भूखी है, दूध क्यों नहीं पिला देती?"

"दूध नहीं होता है।"

बेचारी, ऐसा कहकर उस औरत ने दुबारा कहा, "ये ले दूध मुझसे ले ले।"

"पैसे नहीं हैं।"

"बड़ी अजीब माँ है तू, पैसे नहीं हैं तो कैसे अपनी लड़की को पालेगी? कोई काम-धाम क्यों नहीं करती? तेरा पति कहाँ है?"

"पति मर गया।" ये कहते-कहते उसे रघुबीर की याद आ गई और आँखों में आँसू भर गए।

अजनबी औरत ने कहा, "कोई-न-कोई काम तो करना पड़ेगा, पर ये बातें तो बाद में होती रहेंगी पहले ये ले, ये दूध बच्ची को पिला।"

बच्ची दूध पीकर सो गई। रेवती थक जाने के कारण वहीं बैठी रही। सोच रही थी, कहाँ जाए, कौन देगा उसे काम?

औरत ने पूछा, "अभी-अभी तो बच्ची पैदा हुई है। तेरे आगे-पीछे भी कोई नहीं है, कैसे गुजारा होगा तेरा और तेरी बच्ची का?"

'तेरी बच्ची' सुनकर उसने गर्व से गोद में सोती हुई बच्ची की तरफ देखा और बोली, "तुम चाहो तो काम मिल सकता है। मेरी बच्ची की खातिर ही सही कुछ काम दिला दो। लोग तुम्हें यहाँ जानते भी हैं। मैं झाड़ू-पोंछा कुछ भी कर लूँगी।"

"अच्छा ठीक है। चल मेरे साथ। शाम को मंगल अपार्टमेंट में चलेंगे। पर काम से पहले ये बता कि कहीं तू चोर तो नहीं हैं!"

"नहीं-नहीं बहन, इस बच्ची की कसम, मैं चोर नहीं हूँ।"

जिंदगी से बेपरवाह रेवती को अब मुनिया की परवाह होने लगी। खुद अनपढ़ होकर भी बच्ची को पढ़ाया। उसके लिए अपनी आँखों में सपने सजाए। जैसे-जैसे मुनिया बड़ी होती गई, रेवती की चिंता भी बढ़ने लगी। लंबी-पतली काया, बड़ी-बड़ी आँखें, सुंदर नाक, कोई भी उसके रूप पर मुग्ध हो जाए।

उस दिन रेवती के पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे जिस दिन रमा (उसकी मुनिया) ने आकर यह बताया कि शहर के एक स्कूल में अध्यापिका की नौकरी मिल गई है। रेवती ने घूम-घूमकर हर घर में मिठाई बाँटी।

एक शाम, रेवती के पास आकर मुनिया ने कहा, "माँ! चलो किसी अच्छी जगह चलते हैं।"

"अच्छी जगह? इस जगह में क्या बुराई है?"

"यहाँ गंदगी है।"

"इसी गंदगी में साफ दिल वाले लोग रहते हैं।"

"यहाँ हर तरफ से बदबू आती है।"

"मुझे तो बदबू में से भी खुशबू आती है।"

"यहाँ कौन है आपका?"

"सारे रिश्तेदार, जिनसे मन का रिश्ता है।"

"खून का तो नहीं?"

"खून धोखा दे जाता है पर मन के रिश्ते नहीं देते।"

"यहाँ क्या रखा है माँ?"

"तेरे बचपन से जुड़ी यादें। देख, उस जगह को देख, मैं तुझे वहीं रस्सी से बाँधकर अपने घर का काम-काज निपटाती थी। इसी जगह पर तूने पहली बार चलना सीखा था। तेरे पैरों के पायल के घुँघरू की आवाज आज भी मैं सुन सकती हूँ।"

खाना खाने के बाद मुनिया ने दुबारा बात छेड़ी, "माँ! मैं यहाँ से कैसे जाया करूँगी स्कूल पढ़ाने? लोग क्या कहेंगे?"

"जैसे पढ़ने जाया करती थी और जिसे जो सोचना या कहना है कहे, हमारे ऊपर क्या फर्क पड़ता है?" यह कहकर रेवती बर्तन उठाने लगी।

"फर्क पड़ता है माँ, हम कहाँ रहते हैं, इससे मेरे ऊपर तो फर्क पड़ता है माँ।" यह कहते हुए मुनिया भी बर्तन उठाने लगी। रेवती ने उसके हाथ से बर्तन छीनते हुए कहा, "कोई जरूरत नहीं है यहाँ कोई काम करने की।"

रात में सोते समय मुनिया ने माँ के पास आकर एक बार फिर मनाने का प्रयास किया। रेवती ने गुस्से से मुँह फेरते हुए कहा, "मैंने तेरे पैरों में बेड़ियाँ तो नहीं डाली हैं, जहाँ जाना चाहती है वहाँ चली जा।"

थोड़ी देर तक कमरे में सन्नाटा छाया रहा। अचानक मुनिया की आवाज सुनाई पड़ी, "माँ, दरवाजा बंद कर लो।" रेवती को तो पहले अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। थोड़ी देर तक बिस्तर पर ऐसे पड़ी रही जैसे साँप सूँघ गया हो, फिर उठकर बैठ गई। आँखों से गंगा-यमुना बहने लगी। सोचा किस खून पर मैं भरोसा कर जन्म-जन्म का रिश्ता बाँध बैठी? झूठी ममता कभी संतान को बाँध सकती है क्या? जिस समाज का खून था आज उसी समाज का हो गया। आज मेरा प्यार, मेरा भरोसा, मेरी ममता हार गई। मैं पगली अपना पूरा जीवन समाज के उस वर्ग की संतान पालने में गँवा दी जहाँ पत्थरों की दुनिया बसती है।

रात देर तक जागने के कारण रेवती सुबह देर तक सोती रही। एक ठंडे स्पर्श से अचानक चौंककर जब उठी तो सामने मुनिया को देखकर उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसे दुबारा छूकर देखा। मुनिया ने कहा, "माँ! मैं मुनिया ही हूँ, तुम्हारी बेटी मुनिया। तुमसे अलग जाकर पूरी रात नहीं सो पाई। तुम्हारी टूटी चारपाई के कोने में पड़कर सो जाने में जो सुख है वह पलंग पर कहाँ? एक रात की दूरी ने मुझे सालों की दूरी का अहसास दिला दिया। अब मैं यहीं रहूँगी। जब तक तुम नहीं चलोगी, मैं भी नहीं जाऊँगी।" रेवती ने अपनी दोनों बाँहें फैला दीं। मुनिया उसमें समा गई। दोनों रोने लगीं। तब तक रोती रहीं जब तक उस रात की दूरी धुलकर साफ नहीं हो गई। रेवती सोचने लगी ममता झूठी या सच्ची नहीं होती। ममता सिर्फ ममता होती है, सिर्फ ममता। ❍

गिद्ध

◈ **महेंद्र कुमार चतुर्वेदी**
राजकीय बाल उ.मा. विद्यालय
जीरो पुश्ता रोड, ब्रह्मपुरी, दिल्ली

चौकीदार किसना को लगा जैसे बैठक में पाँच आदमी नहीं पाँच गिद्ध हैं, जो जीवित इंसानों को ही नोंच-नोंचकर खा रहे हैं। उसके अंतर्मन से हूक उठी, "कौन कहता है कि गिद्ध खत्म हो गए? अरे गिद्ध खत्म नहीं हुए, उन्होंने तो बस अपना चोला बदल लिया है। उनमें से कोई सरपंच, कोई पटवारी, कोई साहूकार तो कोई विरोधी दल का नेता बन गया है।"

ग्राम सज्जनपुर में ग्राम पंचायत की तरफ से सार्वजनिक सभा का आयोजन था। भयंकर बाढ़ आने के बाद जिंदगी की गाड़ी धीरे-धीरे पटरी पर लौटने लगी थी, इसीलिए यह बैठक बुलाई गई थी। पंचायत सचिव हीरालाल ने पंचायत घर की चौपाल पर खड़े होकर सबसे पहले आज की पंचायत का एजेंडा सुनाया। उसके अनुसार आज के एजेंडे के दो मुख्य बिंदु थे जिन पर विचार किया जाना था, पहला बाढ़ के बाद गाँव में फैल रही महामारी से बचाव तथा दूसरा इस बाढ़ में अपना सब कुछ लुटाकर बेघर हुए लोगों के पुनर्वास की व्यवस्था।

सरपंच छिद्दा सिंह इस गाँव के एक पचास वर्षीय चौधरी हैं जो गाँव के हर सुख-दुःख में सदैव भागीदार रहते हैं, तभी तो चुनाव में उन्हें भारी बहुमत मिला है। चुनाव हारने वाले गाँव के ही हरसुखलाल ने खड़े होकर कहा, "भाइयो, हम पर बाढ़ के रूप में जो विपत्ति आई थी, वह तो गुजर गई, लेकिन अब आए दिन गाँव में मवेशी मर रहे हैं, लोगों में हैजा, बुखार, उल्टी-दस्त आदि बीमारियाँ फैल रही हैं। दूसरी तरफ बहुत सारे लोग ऐसे हैं,

जिनके सिर पर न तो छत है और न ही खाने को दो वक्त की रोटी। ऐसे में मैं चाहता हूँ कि सरपंच छिद्दा सिंह राज्य और केंद्र सरकार से जो मदद मिली है, उसका कैसे उपयोग कर रहे हैं, यह आम जनता के सामने स्पष्ट करें।"

सभी की नजरें सरपंच छिद्दा सिंह की तरफ उठ गई। सरपंच छिद्दा सिंह खड़े हुए, खँखारकर अपना गला साफ किया और विनम्र भाव से कहने लगे, "भाइयो, यह प्राकृतिक आपदा हमारा बहुत कुछ बरबाद कर गई है, लेकिन हिम्मत हारने से कोई काम नहीं चल सकता। मैं चाहता हूँ कि बाढ़ के बाद के हालात से हम सब मिलकर मुकाबला करें। जैसा कि मेरे भाई हरसुखलाल ने राज्य और केंद्र सरकार से मदद की बात पूछी है सो आज सुबह ही बी.डी.ओ. साहब और तहसीलदार साहब मेरे पास आए थे। उन्होंने बताया है कि प्रत्येक बेघर व्यक्ति को आवास व्यवस्था के तौर पर दो कमरों के पक्के मकान बनवा कर दिए जाएँगे तथा प्रत्येक जरूरतमंद को अपने परिवार के लिए दोनों वक्त का अनाज दिया जाएगा। आज शाम तक गेहूँ और चावल के ट्रक आ जाएँगे।

सबसे पहले पंचायत सचिव जरूरतमंद लोगों की सूची तैयार करेंगे, फिर राहत समिति द्वारा यह निर्णय लिया जाएगा कि किस व्यक्ति को कितने अनाज या आवास की वास्तविक जरूरत है। उसी की अनुशंसा पर राहत प्रदान की जाएगी। मैं चाहता हूँ कि सभी के साथ न्याय हो और राहत राशि का सही उपयोग हो सके, इसलिए सर्वसम्मति से पाँच व्यक्तियों की राहत समिति का गठन कर लिया जाए, जिसकी देख-रेख में राहत समिति वितरण और पुनर्वास का काम सही ढंग से चल सके।"

सरपंच छिद्दा सिंह के इस सुझाव का गाँव के सभी लोगों ने, चाहे वो युवा हो चाहे बुजुर्ग, एकमत से समर्थन किया।

पंचायत सचिव हीरालाल आज की कार्यवाही को रजिस्टर में अंकित करते जा रहे थे। सर्वसम्मति से राहत समिति का गठन हुआ, जिसमें समिति अध्यक्ष के तौर पर सरपंच छिद्दा सिंह तथा शेष चार सदस्यों में पंचायत सचिव हीरालाल, विरोधी गुट के हरसुखलाल, पटवारी माँगेराम तथा ग्राम सज्जनपुर के साहूकार बनवारीलाल को शामिल किया गया।

सरपंच छिद्दा सिंह ने खड़े होकर कहा, "भाइयो, सबसे पहला बिंदु, जिस पर हमें विचार करना है, वह है गाँव में फैल रही महामारी तथा गाँव के मरते हुए मवेशी, साथ ही बाढ़ में जो दूसरे गाँव से बहकर मृत पशु आ रहे हैं, वह सड़ गए हैं, लिहाजा उनकी बदबू ने जीना हराम कर रखा है।"

पटवारी माँगेराम, जो अब तक शांत बैठे सारी बातचीत सुन रहे थे, खड़े होकर कहने लगे, "भाइयो, ऐसा लगता है जैसे प्रकृति ही उलट हो गई है। दूर-दूर तक कहीं गिद्ध दिखाई नहीं पड़ते वरना एक पशु मरा नहीं कि झुंड-के-झुंड गिद्ध मिनटों में उसे नोंच-नोंचकर खा जाते थे। इससे पर्यावरण साफ रहता था और महामारी से भी बचाव था।"

"हूँ...आप सच कह रहे हैं पटवारी जी।" साहूकार बनवारीलाल ने 'हाँ' में हाँ मिलाई, "गिद्ध तो कहीं दिखाई ही नहीं देते, लगता है जैसे उनका कुलनाश ही हो गया है।" जब सभा जुड़ती है तो भीड़ में से नए-नए विचार, सुझाव और उपाय सुझाए जाते हैं। पंडित रामरतन शास्त्री ने संकटमोचन यज्ञ कराने का सुझाव दिया ताकि गाँव पर आई प्राकृतिक आपदा का प्रकोप महामारी के रूप में विकराल रूप न धारण कर ले। ओझा श्यामगिरी ने गाँव में जंतर कराने की बात कही तो महंत बृजमोहन ने अखंड कीर्तन का प्रस्ताव रखा।

अंत में तय हुआ कि कल सुबह दस बजे पंचायत घर पर पंचायत सचिव हीरालाल आपदाग्रस्त लोगों की सूची तैयार करेंगे। गाँव के सभी लोग कल पंचायत घर पहुँचकर अपने-अपने नुकसान और जरूरत के अनाज और कपड़ों का ब्यौरा दर्ज कराएँगे।

पंचायत की कार्यवाही समापन की ओर थी कि जिला मुख्यालय की तरफ से आने वाली सड़क पर गाँव की तरफ आते हुए ट्रकों की आवाज सुनाई पड़ी। बरबस सभी गाँव वालों का ध्यान उधर चला गया। सभी ट्रक पंचायत घर के पास आकर रुक गए। कुल चार ट्रक थे। सरपंच छिद्दा सिंह लपककर ट्रकों की तरफ बढ़े। अगले ट्रक में से तहसील का एक कर्मचारी कुछ कागजात लिए उतरा, कुछ पर सरपंच के हस्ताक्षर कराए और कुछ कागज सरपंच के हवाले किए।

लोगों की भीड़ ट्रकों के चारों तरफ जुट गई। सभी ने देखा एक ट्रक में कंबल और चादर भरे हुए थे। दूसरे में दवाएँ तथा सर्फ, साबुन के पैकेट थे तथा दो ट्रकों में गेहूँ और चावल के बोरे भरे हुए थे।

सरपंच छिद्दा सिंह ने वापस लौटकर पटवारी माँगेराम, नेता हरसुखलाल, साहूकार बनवारी लाल तथा पंचायत सचिव हीरालाल से कुछ मंत्रणा की और सभी ट्रकों को सामान खाली करने के लिए गाँव के बाहर सेठ बनवारी लाल के नए बने पक्के गोदाम में रखवाने के लिए भेज दिया। साथ में गाँव से चार मजदूर किसना चौकीदार के साथ सामान उतारने चले गए।

किसना चौकीदार गाँव सज्जनपुर का ही रहने वाला है। परिवार के नाम पर अकेला, काम के प्रति समर्पित, गाँव का प्रत्येक घर जैसे उसे अपने ही घर का सदस्य समझता है। इसलिए तो किसना ने कभी अपने लिए खाना नहीं बनाया। हर एक के सुख-दुःख में भागीदार किसना बाढ़ के बाद पैदा हुए हालात से बड़ा बेचैन है।

बनवारी लाल के नए बने खाली गोदाम पर ट्रकों में भरे सामान को उतरवाया, व्यवस्थित तरीके से सामान लगवाया और शाम को सरपंच छिद्दा सिंह को पूरी सूचना दी।

सरपंच बोले, "किसना, अंदर चौधराइन से खाना ले लो और खाट बिस्तर लेकर गोदाम पर ही जाकर सो जाना। किसी का क्या भरोसा कब नीयत खराब हो जाए। गोदाम में काफी सामान भरा है, कल से बाँटना शुरू कर देंगे।"

किसना ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया और अंदर जाकर चौधराइन से खाने की थाली लेकर खाने लगा। किसना ने घर से चारपाई-बिस्तर उठाया और गोदाम के बाहर चबूतरे पर खाट बिछाकर लेट गया। दिन-भर का थका हुआ किसना खाट पर लेटते ही सो गया। पारिवारिक जिम्मेदारियों का कोई बंधन नहीं, दिन-भर शारीरिक श्रम और भरपेट भोजन के बाद जो नींद आती है उसके आगे सब शोर-गुल गौण होकर रह जाता है।

किसना नमक की कीमत जानता है, उसने जिम्मेदारियों से कभी मुँह नहीं

मोड़ा, अचेतन मस्तिष्क में भी किसी कोने में अपने फर्ज का अहसास था, इसलिए जैसे ही उसे किसी इंजन की आवाज के साथ धीमे शोर-गुल का आभास हुआ, अचानक उसकी आँख खुल गई। तारों की तरफ देखकर समय का अनुमान लगाया। रात के बारह बजे होंगे। किसना को लगा जैसे किसी ने गोदाम के पिछवाड़े का छोटा लोहे का दरवाजा खोला हो।

किसना को अचानक कर्तव्य-बोध हुआ और खाट के सहारे रखी लाठी को उठाकर दबे पाँव दीवार के सहारे अपने आपको अंधेरे में छुपाते हुए गोदाम के पिछवाड़े बढ़ गया। दीवार के किनारे पहुँचकर सावधानी से झाँककर देखा तो गोदाम के पीछे वाले गेट के पास दो ट्रैक्टर, ट्राली लगे हुए खड़े थे। ट्रैक्टरों की हैडलाइट दरवाजे की तरफ जल रही थी और किसना ने देखा चार आदमी मुँह पर कपड़ा लपेटे हुए कद-काठी से तंदरुस्त दिखाई देने वाले खड़े हैं। पाँचवाँ व्यक्ति उन्हें धीरे-धीरे कुछ समझा रहा है जिसकी पीठ किसना की तरफ थी।

अचानक अपनी बात समाप्त करके वह आदमी गोदाम के दरवाजे की तरफ मुड़ा तो उसके मुँह पर ट्रैक्टर की लाइट पड़ी। उन आदमियों और ट्रैक्टर ट्राली को देखकर किसना उनकी मंशा समझ चुका था, लेकिन जैसे ही उसे पाँचवें आदमी की शक्ल दिखाई दी तो उसे लगा जैसे किसी ने उसे आसमान से जमीन पर ला पटका हो।

अनायास उसे अपनी आँखों पर भरोसा नहीं हुआ। अपनी आँखों को मलकर पुनः देखने लगा तब उसने माना कि यह भ्रम नहीं सच था। पाँचवाँ आदमी कोई और नहीं सरपंच छिद्दा सिंह का छोटा भाई दुर्जन सिंह था। किसना बड़े धर्म संकट में फँस गया। सरपंच छिद्दा सिंह का वह बेहद सम्मान करता था। आज अगर यह बात गाँव वालों के सामने उजागर होगी कि छिद्दा सिंह का भाई दुर्जन सिंह गोदाम से सामान चुराने आया है तो शायद छिद्दा सिंह किसी को मुँह दिखाने लायक नहीं रहें। अब तक की समाज सेवा और मान-मर्यादा सब मिट्टी में मिल जाएगी।

"हे भगवान! अब मैं क्या करूँ? देवता के घर में यह राक्षस कहाँ से भेज

दिया।" अचानक किसना के दिमाग में एक विचार बिजली की तरह कौंधा और वह तुरंत मुड़कर दौड़ पड़ा सरपंच छिद्दा सिंह के घर की तरफ।

सरपंच छिद्दा सिंह के घर के बाहर बैठक थी जिसके जंगला और रोशनदान से लालटेन का धीमा प्रकाश बाहर आ रहा था। दरवाजा बंद था। हाँफता हुआ किसना चौंका, इतनी रात गए बैठक में लालटेन? सरपंच छिद्दा सिंह बैठक का उपयोग दिन में ही करते थे, रात को केवल मेहमानों के आने पर ही उसमें बिस्तर बिछाए जाते थे।

उत्सुकतावश बिना कोई आहट किए किसना जंगला के पास जा पहुँचा। लोहे की सलाखों वाले जंगला की किवाड़ें खुली हुई थीं। किसना ने धीरे-से अंदर झाँककर देखा तो अंदर का दृश्य देखते ही उसे लगा अगर उसने जंगला की सलाखें न पकड़ी तो चक्कर खाकर गिर पड़ेगा।

जो कुछ उसने देखा और सुना उसकी तो वह कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था। बैठक के बीचोंबीच दरी बिछी हुई थी। उस पर गोल घेरा बनाकर पाँच आदमी बैठे थे, सरपंच छिद्दा सिंह, पंचायत सचिव हीरालाल, पटवारी माँगेराम, साहूकार बनवारी लाल और सरपंच का विरोधी हरसुखलाल।

बीच में अंग्रेजी शराब की एक खाली बोतल पड़ी थी, दूसरी बोतल में से हीरालाल पाँचों गिलासों में शराब उड़ेल रहा था, एक भगोने में पका हुआ गोश्त रखा था। एक बोटी मुँह में डालते हुए सरपंच छिद्दा सिंह कह रहा था, "बनवारी, इंतजाम तो बिलकुल पक्का है न?"

"अरे चिंता क्यों करते हो सरपंच साहब, किसी को कानोंकान भनक भी नहीं लगेगी। चारों आदमी मेरे पूरे वफादार हैं, दो घंटे बाद गोदाम का आधा माल मेरे शहर वाले गोदाम में होगा। कल सुबह ही मंडी में बेचकर हिसाब कर लेंगे।" बनवारी लाल ने एक हड्डी को चबाते हुए कहा।

पटवारी माँगेराम नशे में झूमता कह रहा था, "अरे चौकीदार किसना कोई अड़ंगा न डाल दे कहीं?"

हरसुखलाल ने गिलास उठाकर एक ही साँस में खाली किया और मूँछों पर ताव देकर कहने लगा, "किसना? अरे किसना के नाम तो कल एफ.आई.

आर. दर्ज कराई जाएगी कि उसने गोदाम से चोरी कराई है!" और पाँचों ठहाका लगाकर हँस पड़े।

चौकीदार किसना को लगा जैसे बैठक में पाँच आदमी नहीं पाँच गिद्ध हैं, जो जीवित इंसानों को ही नोंच-नोंचकर खा रहे हैं। उसके अंतर्मन से हूक उठी कौन कहता है कि गिद्ध खत्म हो गए? अरे गिद्ध खत्म नहीं हुए, उन्होंने तो बस अपना चोला बदल लिया है। उनमें से कोई सरपंच, कोई पटवारी, कोई साहूकार तो कोई विरोधी दल का नेता बन गया है।"

हाँ एक अंतर जरूर आया है, गिद्ध तो मरे मवेशियों को ही नोंचकर खाते थे, लेकिन इन गिद्धों का स्तर समय के हिसाब से कुछ बढ़ गया है। ये तो जीवित इंसानों को ही नोंच-नोंचकर खा रहे हैं। कहीं दूर से कुत्तों की रोने की आवाज सुनाई दी...

...और चौकीदार किसना चल पड़ा लाठी का सहारा लिए किसी अनजान राह की ओर। ❍

''आपके परिश्रम से देश का पेट भरता है। एक तरफ जीने के लिए फसल उगाते हो तो दूसरी तरफ ये जहर क्यों भइया, क्या तंबाकू व भाँग को उपजाना जरूरी है। भइया 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी'। आप इन चीजों को न उपजाओगे तो सब कुछ ठीक होगा।'' जब ढेर सारे पोस्टर तैयार हो गए तो घर से कॉलेज के बीच पड़ने वाले मुख्य-मुख्य स्थानों पर उसे चिपकाती गई।

धूप की किरण

◈ **किशोरी मोहन**
ज्ञान एजूकेशनल इंस्टीट्यूट
ज्योति कुची, लोखरा
गोवाहाटी, कामरूप, असम

आमतौर पर प्रत्येक माँ-बाप का सपना होता है कि उसका बच्चा सभ्य, सुसंस्कृत और कामयाबी के हर पायदान को पार करने वाला हो। वे अपने बच्चे में अपनी छवि देखते हैं और उनके माध्यम से अपने अधूरे सपने को पूरा करना चाहते हैं।

ऐसे ही एक माता-पिता थे जयदीप और ज्योत्सना। इनकी दो संतानें थीं एक बेटा और एक बेटी। बेटे का नाम 'सुधर्म', जो इनके मुताबिक सुंदर कर्म करने वाला और बेटी का नाम 'सुकृति', उसका भी अर्थ सुंदर कर्म करने वाला ही निकलता है। दोनों थे भी बड़े सुंदर और सुशील। भाई बड़ा होने का सारा फर्ज निभाता, बहन की सहायता करता, स्कूल के लिए तैयार करता, यहाँ तक कि उसके गृहकार्य करने तक में मदद करता। दोनों में खूब प्यार था।

समय बीतता गया। दोनों बड़े हो गए। दोनों बच्चे स्कूली कक्षा अच्छे अंकों से पास कर गए। बड़ा लड़का सुधर्म गणित पढ़कर इंजीनियरिंग में दाखिला पा गया और बेटी सुकृति बारहवीं में विज्ञान लेकर पढ़ रही थी। उसे मेडिकल की पढ़ाई करने की इच्छा थी। इस तरह जयदेव का परिवार एक

खुशहाल परिवार था। पर कहते हैं न कि 'समय सदा एक सा नहीं रहता', जीवन में उतार-चढ़ाव आता रहता है।

इनके समय ने भी करवट ली। हुआ यूँ कि एक दिन शाम के लगभग आठ बजे सुधर्म की छाती में दर्द उठा और वह अचानक पढ़ते-पढ़ते किताब पर सिर रखकर कराहने लगा। बगल में बैठकर पढ़ती हुई बहन ने हल्के हाथ से उसकी छाती सहलाई, ठंडा पानी पिलाया। फिर भी कुछ आराम न मिला तो वह दौड़ी-दौड़ी रसोईघर में माँ के पास गई और माँ से बोली, "माँ जल्दी आइए, देखिए न भइया को क्या हुआ?"

"क्या हुआ बेटा?" "पता नहीं माँ। कहता है छाती में दर्द है।" माँ दौड़ी-दौड़ी बेटे के कमरे में गई। जब तक वह पहुँची उसका हाल बेहाल हो चुका था। सुधर्म बिस्तर पर पड़ा लंबी-लंबी साँसें ले रहा था। ज्योत्सना ने पति को बुलाया और जल्दी से एंबुलैंस बुलाकर बच्चे को हॉस्पिटल ले गए। डॉक्टर ने अविलंब चिकित्सा आरंभ की। ऑक्सीजन दी गई, इंजेक्शन लगाया और जयदीप को आश्वस्त करते हुए कहा, "घबराने की कोई बात नहीं है। सब ठीक हो जाएगा।"

जयदीप ने पूछा, "क्या हुआ डॉक्टर?" "कल कुछ टेस्ट करेंगे तब सही कारण का पता चलेगा। पर मुझे लग रहा है कि आपका लड़का धूम्रपान करता है।" "धूम्रपान!" जयदीप और ज्योत्सना एक साथ बोले, "नहीं डॉक्टर, मेरा बच्चा ऐसा नहीं कर सकता।" "हो सकता है, अभी तो सिर्फ आशंका है टेस्ट करने के बाद सब कुछ साफ हो जाएगा।"

धूम्रपान करने की बात सुनते ही ज्योत्सना के तो जैसे आँखों के सामने अँधेरा छा गया। उसे कुछ-कुछ समझ में आने लगा। कई बार उसे बेटे के बैग और पॉकेट में धूम्रपान की सामग्री मिली थी, पर पूछने से बड़ी सफाई से वह झूठ बोल जाता, "जानती हैं माँ क्लास के कुछ लड़के मुझे ऑफर करते हैं। मैं नहीं लेता हूँ ना! सो ये लोग मुझे परेशान करने के लिए मेरे बैग में डाल देते हैं।" बस माँ खुश हो जाती और कहती, "बेटा मेरी लाज रखना।" वह भी हामी भर देता।

दूसरे दिन अल्ट्रासाउंड और सीटी स्केन आदि परीक्षण हुआ। कई तरह के खून के टेस्ट किए गए और साफ हो गया कि लड़का धूम्रपान करता है और

उसके फेफड़े में इन्फेक्शन हो गया। पिता को इलाज में लगने वाली रकम की चिंता सताने लगी तो माँ को अपनी दी हुई संस्कार, ममता तथा पालन-पोषण की कमी पर धिक्कार महसूस होने लगा। बहन को बचपन में खेले गए खेल पर पश्चाताप होने लगा।

वे दोनों अक्सर बचपन में डॉक्टर-डॉक्टर खेलते। भैया पेसेंट और वह खुद डॉक्टर बनती, और कहती, "भैया, तुम बिस्तर पर लेटकर बेहोश हो जाओ और मैं डॉक्टर बनकर तेरा इलाज करूँगी।" एकदम आज्ञाकारी भाई बनकर वह लेट जाता। कभी बेहोश हो जाता तो कभी लंबी-लंबी साँसें लेता। तब वह कभी छोटा-सा वाटी या कोई ढक्कन नाक पर रख देती और पाँच मिनट बाद कहती, "अब ठीक हो जाओगे, ऑक्सीजन दे दिया है।"

अब जब बड़ा होने पर भैया बीमार हो गया तो उसे पश्चाताप इस बात पर हो रहा था कि आखिर वह भैया को ही क्यों पेसेंट बनाती थी। तब तो खेलती थी तो भैया ठीक हो जाता था पर अब क्या होगा? वह मन-ही-मन ईश्वर से प्रार्थना करती कि हे ईश्वर बचपन के खेल की तरह अब भी मेरे भाई को ठीक कर देना।

घर में माता-पिता चिंता और तनाव में थे। इस बीच सुकृति ने महसूस किया कि माँ भैया के ठीक होने के लिए बेचैन तो थी पर आँखों में पहले जैसा प्यार नहीं था। वह जब भी भैया को देखती कुछ घृणा-सी महसूस होती। वह कहती, "हे भगवान! सब ठीक कर देना, मेरे परिवार पर अपनी कृपा बनाए रखना।" परंतु एक प्रश्न ने तो उसके मन में भी उथल-पुथल मचा रखी थी कि आखिर भैया ने ऐसा कैसे किया। उसने माँ-पिताजी के साथ इतना बड़ा विश्वासघात कैसे किया? स्वयं वह भी तो अधिकतर भाई के साथ रहती थी, तो वह भी कभी कैसे महसूस नहीं कर पाई? आखिर कितनी बड़ी मूर्ख है वह।

कुछ समय के पश्चात् सुधर्म की हालत में कुछ सुधार हुआ और डॉक्टर ने उसे घर ले जाने को कहा। डॉक्टर ने अभी ज्यादा बात करने को मना किया था, इसीलिए किसी ने इस विषय पर कोई चर्चा नहीं की। एक दिन पिताजी कहीं बाहर गए थे और माँ सब्जियाँ लाने के लिए बाजार गई थी। सुकृति से अब रहा नहीं जा रहा था, अतः मौका पाकर भाई का हाथ अपने हाथ में

रखकर बोली, "भैया, जो हो गया उस विषय में बात करके कोई फायदा नहीं परंतु भैया दिल नहीं मानता है। क्या बताओगे कि तूने ऐसा क्यों किया? तुझे माँ-पिताजी की इज्जत, उनकी उम्मीद, अपना स्वास्थ्य और अपनी बहन का प्यार याद नहीं आया? यह अपराध कैसे किया भैया?" पूछते हुए फफक-फफक कर रोने लगी वह।

"चुप हो जा बहन, रोने से क्या फायदा। पर क्या तुझे भी लगता है कि मैंने जान-बूझकर ऐसा किया होगा।" "तो तेरा मतलब क्या है भैया, किसी ने तुझे मजबूर किया? फालतू बात मत कर भैया। ठीक है तब तो कोई बात नहीं।" कहते हुए सुधर्म ने मुँह फेर लिया। "अच्छा बताओ क्या मजबूरी थी।" सुकृति ने कहा। सुधर्म बहन का हाथ पकड़कर, "विश्वास करोगी ना मेरी बहन?"

"बताओ तो सही।" वह बोलने लगी, "बात ग्यारहवीं कक्षा की है। मैं एक अच्छे विद्यार्थी की तरह कॉलेज जाता, क्लास करता और सीधे घर आता। अभी सप्ताह भी नहीं हुआ कि कुछ लफँगे टाइप विद्यार्थियों ने मुझे उँगली का इशारा करके बुलाया और कॉलेज के सामने वाली गली में इशारा करते हुए कहा, जा वहाँ से हमारे लिए सिगरेट और गाँजे का पत्ता लेकर आ। मैंने इन्कार कर दिया तो मेरे गाल पर एक थप्पड़ जड़ दिया और कहा, "सिनियर्स की बात काटेगा, जाता है या नहीं, यहाँ पढ़ना है तो हमारी बात माननी ही पड़ेगी। समझ गया ना। और लाकर चुपचाप मेरे बैग में रख देना, कुछ बोलना मत। पुलिस को हमारे ऊपर शंका हो चुकी है इसीलिए।"

मैंने बात बढ़ानी नहीं चाही, इसीलिए उन लोगों ने जैसा कहा, मैंने कर दिया। पर इतने पर भी यदि पीछा छोड़ देते तो कोई बात नहीं होती। उन्होंने मुझे पीने को भी मजबूर किया ताकि मैं भी आदी हो जाऊँ तो लाने के लिए इन्कार नहीं करूँगा। शरीफ दिखता हूँ, इसीलिए किसी की नजर में नहीं आऊँगा। इस तरह उनका काम चलता रहेगा। मेरे इन्कार करने पर उन्होंने मेरी जेब से मोबाइल निकाला, माँ का नंबर अपने मोबाइल में सेव किया और धमकाया कि ओ माँ के लाड़ले, ज्यादा ना-नुकुर किया ना तो तेरी माँ के नंबर पर मैसेज दे दूँगा कि आपका बेटा यहाँ चोरी-छिपे धूम्रपान करता है। फिर क्या होगा जानते हो? वे तुम्हें या तो कॉलेज से निकाल लेंगे या फिर तुझ पर शक

करेंगे तथा रोज-रोज टॉर्चर करते रहेंगे। तब तो दूसरी जगह दाखिला भी नहीं होगा। मैं उनकी बातों से डर गया और यह सोचकर कि कुछ दिन बाद खुद ही छोड़ देंगे, मैंने उनकी बात मान ली और यहीं से शुरू हुआ मेरा धूम्रपान का सिलसिला। समय के साथ उनका साथ तो छूट गया पर नशे ने मेरा साथ नहीं छोड़ा। धीरे-धीरे मैं अधिक ही लेने लगा।" कहते-कहते वह सुबक-सुबककर रोने लगा। बहन भी रोई, फिर खुद को सँभाला और भाई से कहा, "भइया, कोई भी काम साध्य से बाहर नहीं होता, तुम डर गए, भइया तुम्हें क्या लगता है किसी के मैसेज या फोन मात्र पर माँ भरोसा कर लेती। नहीं भइया। पर अब इन बातों से क्या? मगर अब वादा करो कि सब कुछ छोड़ दोगे।" उसने बहन का हाथ पकड़ते हुए हामी भरी।

दूसरे दिन सुकृति कॉलेज गई तो उसकी नजर कुछ ऐसे छात्रों पर पड़ी जो कक्षा से बाहर निकलकर बाथरूम के पीछे की तरफ जा रहे थे। भाई के साथ हुई घटना के बाद उसके मन में विचार कौंधा। प्रश्न आया आखिर जहाँ सरस्वती की साधना होती है, जहाँ जीवन को उजाले की ओर ले जाने का सुगम मार्ग सामने है, वहाँ ये अँधेरे की तरफ कैसे बढ़ जाते हैं? और इस तरह कितने को अपना ग्रास बनाएँगे? कहते हैं पीठ की रीढ़ की तरह नवयुवक देश की रीढ़ होते हैं। अगर ये कमजोर पड़ गए तो देश का क्या होगा? नहीं, हमें कोई कारगर कदम उठाना होगा, इन्हें सँभालना होगा। आखिर जानकर अनजान कैसे बन सकती हूँ।

उसे बेचैनी महसूस होती है और मन-ही-मन अणुव्रत लेती है कि इन्हें सचेत करूँगी, अँधेरी गली की तरफ नहीं बढ़ने दूँगी। परंतु कैसे करेगी वह यह सब? कहते हैं न कि नेकी करने वाले की ईश्वर भी मदद करता है, अतः तत्काल उसके दिमाग में आया विज्ञापन। विज्ञापन एक ऐसा माध्यम है जिसके सहारे हर दिल तक खबर पहुँचा सकता है। वह चित्रकला में निपुण थी। वह सोचने लगी आखिर उसकी ये कला कब काम देगी। परंतु यह भी विचार आया कि क्या यह काफी होगा? क्यों नहीं, सूर्य की एक किरण अँधेरे को चीरने के लिए काफी होती है। उसका काम भी कारगर साबित होगा।

अब वह अपनी पढ़ाई जारी रखते हुए इस काम में जुट गई। खूब मेहनत

करती और तरह-तरह के चित्र बनाती। किसी चित्र में धूम्रपान से हुए नुकसान को दिखाती तो किसी में इसकी वजह से हो रही मृत्यु के बाद परिवार के क्रंदन को। परंतु अनोखी बात यह थी कि उसने इन चीजों के व्यापारियों और इसके उत्पादन करने वाले को भी संदेश दिया। व्यापारी भाइयों को समझाया कि आमदनी का एकमात्र साधन यही तो नहीं, आखिर इसे बेचना छोड़ देंगे तो उनकी आमदनी कितनी कम होगी, किसी की जान से अधिक तो नहीं? आखिर कहीं-न-कहीं उनकी भी संतान हो सकती है।

किसान भाइयों से आपके परिश्रम से देश का पेट भरता है। एक तरफ जीने के लिए फसल उगाते हो तो दूसरी तरफ ये जहर क्यों भइया, क्या तंबाकू व भाँग को उपजाना जरूरी है। भइया 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी'। आप इन चीजों को न उपजाओगे तो सब कुछ ठीक होगा। जब ढेर सारे पोस्टर तैयार हो गए तो घर से कॉलेज के बीच पड़ने वाले मुख्य-मुख्य स्थानों पर उसे चिपकाती गई। बस क्या था...न्यूज चैनल वालों ने अज्ञात शुभचिंतक का यह संदेश बार-बार सचित्र अपने चैनल पर प्रसारित कर दिया।

इस संदेश से किस पर कितना असर डाला यह तो नहीं पता परंतु दो मासूम वर्ग के दिलों को खूब छूआ। जगह-जगह इस संदेश की चर्चा सुनाई पड़ती कि भाई सही है हम यदि इन चीजों को न उपजाएँगे तो फिर यह गलतियाँ होंगी ही नहीं। युवा वर्ग के दिल को भी यह बात बहुत छुई कि भइया हमारा भाई मत छीनो।

माँ का बेटे का हाथ पकड़कर रोने वाला चित्र-बेटा तुमसे ही मेरा जीवन है, तुम मेरे बुढ़ापे की लाठी हो, तुम्हारे बिना मेरा क्या होगा।

कई युवाओं को उस चित्र के सामने खड़ा होकर रोते हुए तथा यह कहते हुए पाया गया कि अब से न हम धूम्रपान करेंगे, न दूसरों को करने देंगे और इसके व्यापारी को भी पुलिस के हवाले करेंगे। सुकृति को संतोष हुआ कि वह अपनी माँ के दिए गए नाम को सार्थक बना रही है। वह अब और लगन से पढ़ने लगी कि पहले वह खुद को मजबूत बनाएगी तब जाकर देश के लिए हो रहे कल्याण कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेगी। इस तरह देश की बेटी होने के कर्तव्य का पालन करेगी। ❍

क्षमा

◈ **डॉ. विजेता आर्या**
विकास भारती पब्लिक स्कूल
सेक्टर-24, रोहिणी

आज उसका ध्यान वकीलों की बहस की ओर नहीं है। कभी उसकी आँखों के सामने उस मासूम बच्चे का चेहरा आता है तो कभी उसके मन का क्रोध हावी हो जाता है। कभी वह उस बच्चे के भविष्य के विषय में सोचती है तो दूसरी ओर उसे अपनी सौम्या दिखाई देती है। क्या कसूर था मेरी बच्ची का जो उसे अपने पिता का चेहरा भी देखना नसीब नहीं हुआ। वह बहुत दुविधा में है। वकीलों की बहस जारी है।

रोज की तरह सुनीता ने चाय की चुस्कियों के साथ समाचार-पत्र पर नजर डाली। उसका मन बेचैन सा हो गया। हर रोज की वही खबरें हत्या, मारपीट, झगड़ा, चोरी। आखिर किस ओर जा रहा है हमारा समाज। क्यों आता है उसे बात-बात पर गुस्सा? क्या वह अपने क्रोध को रोक नहीं सकता? क्या क्षमा करना इतना कठिन है? वे क्यों नहीं सोचते एक बार क्षमा करके देखो कितना सुकून मिलता है। मन शांत हो जाता है...। इस तरह सोचते-सोचते सुनीता न जाने किन विचारों में खो गई।

वह अपने विचारों में इतना डूब गई थी कि उसे ध्यान ही नहीं रहा उसे ऑफिस भी जाना है। सुनीता एक जानी-मानी कंपनी की सी.ई.ओ. है। परिवार में वह स्वयं और एक बेटी है जो पढ़ाई के लिए बैंगलोर में गई है। माँ का कुछ साल पहले देहांत हो गया। कई सालों से घर में काम करने वाली नौकरानी प्रभा अब उसी के साथ रहने लगी है। एक तरह से प्रभा अब सुनीता की माँ सी बन गई है वही पूरे घर की देख-रेख करती है।

"बिटिया, आज ऑफिस नहीं जाना क्या? अरे चाय भी नहीं पी, ठंडी हो

गई है। कभी-कभी तुम्हें क्या हो जाता है बिटिया कहाँ खो जाती हो? चलो तुम तैयार हो जाओ मैं दूसरी चाय बनाकर लाती हूँ।" प्रभा ने कहा। "नहीं अम्मा, रहने दो अब चाय का मूउ नहीं है।" कहती हुई सुनीता अपने कमरे की ओर चली गई।

सुनीता तैयार होकर आई तब तक प्रभा नाश्ता बना चुकी थी। सुनीता ने बेमन से नाश्ता किया और ऑफिस चली गई। आज ऑफिस में एक जरूरी मिटिंग थी, उसे पूरा किया। उसके बाद कुछ खास काम था नहीं तो मन फिर बेचैन हो गया। सौम्या के बैंगलोर जाने के बाद सुनीता इन फाइलों में ही अपना मन लगाती है। जीवन के खालीपन को दूर करने का प्रयास करती है। आज काम नहीं है तो वह कुर्सी पर सिर टिका अधलेटी सी हो जाती है और धीरे-धीरे खो जाती है अपने विचारों की दुनिया में।

विचारों में डूबी सुनीता अपने बचपन में चली जाती है। कितना प्यारा था उसका बचपन। बड़ा-सा एक संयुक्त परिवार। दादा-दादी, चाचा-चाचियाँ, उनके बच्चे, उसके मम्मी-पापा और सुनीता कुल मिलाकर 18 सदस्य थे उनके परिवार में। सुनीता अपने माता-पिता की इकलौती संतान थी। बचपन से ही बहुत सुंदर, बुद्धिमति और बातूनी।

अपनी मीठी-मीठी बातों से सबका मन मोह लेती थी। परिवार में उसके अतिरिक्त छोटे-बड़े छह और बच्चे थे परंतु सुनीता सबकी लाड़ली थी। पिताजी सरकारी अधिकारी थे, इसलिए शहर में रहते थे। सुनीता के जन्म के बाद वे अपनी पत्नी और बच्ची को भी शहर ले आए थे, वहीं उसका पालन-पोषण हुआ। छुट्टियों और त्यौहारों पर पूरा परिवार एक साथ होता। बहुत मजा आता था। सभी एक-दूसरे से प्यार करते थे। किसी प्रकार का कोई टकराव न था।

सुनीता ने बहुत अच्छे अंकों से बोर्ड की परीक्षा पास की। पिताजी व परिवार के लोग बहुत प्रसन्न हुए थे। पापा ने आगे की पढ़ाई के लिए सुनीता को हॉस्टल में भेज दिया था। परिवार ने विरोध किया था, लड़की को इतना पढ़ाने की क्या जरूरत है? परंतु पापा नहीं माने। उनकी निगाह में मैं किसी बेटे से कम न थी। बेटा न होने के कारण कभी-कभी दादी माँ को ताने मारती थी किंतु पापा माँ का बहुत ध्यान रखते थे, बहुत लगाव था उन्हें माँ से।

माँ भी कई बार पापा से कहती थी, "आप दूसरा विवाह कर लीजिए हो सकता है उसके भाग्य से ही बेटा हो जाए। पिताजी को यह बहुत बुरा लगता था। एक बार तो उन्होंने माँ को लगभग डाँटते हुए कहा था, "मनु आगे से ये बात कभी तुम्हारे मुँह से नहीं निकलनी चाहिए। मेरी सुनीता पर दसियों बेटे कुर्बान। दोनों की जगह मेरे जीवन में कोई और नहीं ले सकता।"

सुनीता कई साल से हॉस्टल में है। वह अपनी शिक्षा के माध्यम से अपने पापा का सिर गर्व से ऊँचा करना चाहती है। वह साबित करना चाहती है कि बेटे ही नहीं बेटियाँ भी कुल का नाम रोशन कर सकती है। सुनीता इस बात से अन्जान है कि उसका प्यारा-सा संयुक्त परिवार अब बिखर गया है। अब भाइयों में पहले सा प्यार नहीं रहा। सुनीता के पापा भी बिखराव के इस सदमे को सह नहीं पाए और बँटवारे के कुछ महीने बाद ही हृदय गति रुक जाने से उनका देहांत हो गया।

उसे वह दिन आज भी अच्छी तरह याद है वह अपने कमरे में पढ़ रही थी कि अचानक विद्या मैम उसके कमरे में आई थी। वह अंदर ही अंदर घबराई हुई थी परंतु ऊपर से शांत दिखने का प्रयास कर रही थी।

"सुनीता तुम्हारी मम्मी का फोन आया है, तुम्हारे दादा जी की तबीयत खराब है, तुम्हें घर जाना चाहिए। तुम अपना सामान पैक करो मैंने गाड़ी बुलवा दी है। तुम शाम तक घर पहुँच जाओगी। चिंता मत करना। कोई परेशानी हो तो मुझे फोन करना।" ऐसा कहकर विद्या मैम कमरे से बाहर निकल गई। मेरा मन अज्ञात आशंका से काँप गया था।

घबराई हुई सुनीता जब घर पहुँची तो वहाँ का दृश्य देख वह कुछ समझ नहीं पा रही थी। माँ बिस्तर में लेटी थी, घर में आने वालों का ताँता सा लगा था। सभी उसी ओर दया की दृष्टि से देख रहे थे। यह सब देखकर सुनीता और भी घबरा गई थी। उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी कि वह किसी से कुछ पूछे।

वह चुपचाप माँ के पास जाकर बैठ गई थी। दोनों शांत एकटक एक-दूसरे को देख रही थीं। बोलने की हिम्मत दोनों में से किसी की नहीं हो रही थी। आसपास बैठे लोगों की बातों से सुनीता को पता चला कि उसके पापा अब इस दुनिया में नहीं रहे। पापा का वो गर्वीला मुस्कुराता चेहरा उसकी आँखों

के सामने आ गया और वह फूट-फूटकर रो पड़ी थी। माँ-बेटी गले मिलकर जी भरके रोई थी। दोनों ने एक-दूसरे के विषय में सोचते हुए स्वयं को सँभाल लिया था।

परिवार में आई दरार को सुनीता भाँप गई थी। फिर भी उसके मन में एक आशा की किरण थी कि उसका परिवार माँ-बेटी को अकेले नहीं छोड़ेगा। किंतु जल्दी ही उसका ये भ्रम भी टूट गया। उसके चाचा उनके आसपास इसलिए मँडरा रहे थे अपनेपन का दिखावा कर रहे थे कि कोई चाहता था उसकी माँ उनके बेटे को गोद ले ले। कोई चाहता था कि भैया के स्थान पर भाभी मुझे नौकरी दिलवा दें। कोई शहर का मकान ही हड़पना चाहता था। जब वे अपने मनोरथ पूरे न कर सके तो वापस गाँव चले गए। दादा-दादी भी माँ के साथ नहीं रहे। माँ ने सुनीता को समझाकर पिता के सपनों का वास्ता देकर वापस हॉस्टल भेज दिया।

सुनीता हॉस्टल में आकर भी गुमसुम व उदास रहती थी, पढ़ाई से उसका मन उचट गया था। उसकी मनःस्थिति को विद्या मैडम ने ही तो समझा था और उसे घूमने के बहाने बाहर ले गई थी। बातों ही बातों में विद्या मैडम ने सुनीता को धैर्य व साहस का रहस्य समझाया था। विपरीत परिस्थितियों से डटकर सामना करना उसे विद्या मैम ने ही सिखाया था।

वे कहती थी, "कोई गलत करता है अपने लिए, उसका परिणाम वह खुद भोगेगा, हमें अपनी तरफ से किसी का बुरा नहीं करना चाहिए। कोई हमारे साथ गलत कर रहा है, सावधान रहो पर उसके प्रति क्रोध अपने मन में मत पालो। क्षमा वीर का आभूषण है। तुम्हारे परिवार वाले तुम्हारे साथ गलत कर रहे हैं। एक दिन उन्हें पछतावा होगा। तुम उनके साथ गलत मत करना। अपने व्यवहार में कोई परिवर्तन मत लाना। हाँ, इस उदासी को त्यागकर अपने पापा का सपना साकार करो। अपनी माँ का सहारा बनो। अपने पापा की बात को सच साबित करो कि बेटियाँ बेटों से कम नहीं हैं।"

सच में विद्या मैडम की बातों का सुनीता पर गहरा प्रभाव पड़ा था और वह अपनी परीक्षा की तैयारी में जुट गई थी। परीक्षा समाप्त होने पर जब वह घर आई तो परिवार के लोग बारी-बारी से किसी-न-किसी बहाने से आते और

सुनीता की माँ पर उसके विवाह के लिए दबाव डालते। कई जगह से रिश्ते लेकर आए जो किसी भी सूरत में सुनीता के योग्य नहीं थे। मना करने पर घर में कलह होती।

सुनीता की माँ सब सहती पर उस पर आँच न आने देती। सुनीता को वह इस सबसे दूर रखती थी। इसी बीच पापा के एक मित्र रिश्ता लेकर आए। लड़का अच्छी सर्विस में था और बहुत समझदार भी। सुनीता की माँ को लड़का पसंद आया परंतु वह चाहती थी कि दोनों बच्चे आपस में एक-दूसरे से मिलकर ही कोई निर्णय लें।

सुनीता पहली बार ईश से मिली थी। अपने पापा के कमरे में यहाँ बैठकर ही वह सुकून महसूस करती थी। ईश ने सुनीता को देखते ही विवाह के लिए अपनी स्वीकृति दे दी थी किंतु अंतिम निर्णय सुनीता पर छोड़ दिया था। सुनीता का मन पहली मुलाकात में ही ईश पर विश्वास कर बैठा था और उसने अपने अंदर का सारा गुबार ईश के सामने निकाल दिया था। अब वह अपने आपको बहुत हल्का महसूस कर रही थी। ईश ने उसके विश्वास का मान रखा और उसे विश्वास दिलाया कि वह उसके सपनों की उड़ान पूरी करने में पूरा सहयोग देगा।

ईश व सुनीता विवाह बंधन में बंध गए। ईश ने सुनीता का प्रवेश एक कोचिंग सेंटर में कर दिया जहाँ वह अपनी आने वाली परीक्षाओं की तैयारी में जुट गई। विवाह के एक महीने बाद ही सुनीता को पता चला कि वह गर्भवती है। जब यह सूचना उसने ईश को दी तो वह खुशी से झूम उठा था। सुनीता की माँ भी बहुत खुश हुई थी। परिवार में खुशी का माहौल था। समय बहुत प्रसन्नता, खुशी से गुजर रहा था। दिन-प्रतिदिन ईश और सुनीता का रिश्ता दृढ़ होता जा रहा था। दोनों को देखकर लगता था मानो भगवान ने दोनों को एक-दूसरे के लिए ही बनाया है। परंतु ईश्वर को शायद कुछ और ही मंजूर था। किसी की नजर दोनों के प्यार को लग गई थी।

सुनीता उस मनहूस दिन को आज भी नहीं भूली है। उस दिन उसका मन नहीं चाह रहा था कि वह एक पल के लिए भी ईश से अलग हो। वह चाहती थी आज ईश ऑफिस न जाए पर रोकने का कोई बहाना वह न बना सकी।

रोज की तरह ईश ऑफिस गया। वह दरवाजे तक उसके साथ आई। देर तक वह उसी ओर देखती रही जिस ओर ईश गया था।

अंदर आकर नाश्ता करने बैठी। नाश्ता खत्म भी नहीं कर पाई थी कि गार्ड दौड़ता हुआ आया और घबराकर ईश के विषय में बताया। सुनीता पूरी बात सुने बिना ही ईश के ऑफिस की ओर भागी। कुछ दूरी पर उसने सड़क के बीच ईश को पड़े देखा था। वह उसे पहचान भी नहीं पाई थी, क्योंकि सुंदर गोरा-सा चेहरा बिलकुल काला-सा पड़ गया था।

वह बेहोश हो वहीं पर गिर गई। जब उसे होश आया तो घर लोगों से भरा हुआ था। उसकी माँ व चाचा आदि उसके पास खड़े थे। मुसीबत की इस घड़ी में कुछ दिनों के लिए ही सही सुनीता के चाचा उसके रक्षक बनकर खड़े हो गए थे।

सुनीता की तो जिंदगी ही वीरान हो गई थी। उसकी माँ भी नहीं समझ पा रही थी कि वह सुनीता को क्या कहकर समझाए। अब कोई सहारा नहीं बचा था। सुनीता चार महीने की गर्भवती थी। ईश्वर ने उसे हौंसला दिया। उसे आज फिर विद्या मैडम की बहुत याद आई थी। उनकी बातों ने उसे बहुत सहारा दिया था। वही बातें उसे स्मरण हो आई थीं। धैर्य और साहस से हर मुसीबत को दूर किया जा सकता है। अब सुनीता अपने होने वाले बच्चे के लिए जी रही थी। उसने सब ओर से ध्यान हटाकर अपनी पढ़ाई पर केंद्रित कर लिया था।

कई बार वह बहुत परेशान हो जाती थी कि ईश जैसे सज्जन का भी कोई शत्रु हो सकता है। वो भी इतना बड़ा कि उसे बीच बाजार में मार डाले। क्या कारण होगा? क्यों मारा होगा ईश को? क्या बिगाड़ा था मैंने उसका? अनेक प्रश्न थे उसके मन में जिनके उत्तर वह चाहती थी।

ईश उच्च पदाधिकारी के साथ एक अच्छे इंसान भी थे। पुलिस ने दिन-रात एक करके एक महीने के अंदर ही तीनों अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया था। सुनीता उन तीनों को देखकर हैरान रह गई थी। वे तीनों ईश के मित्र ही थे। वे ईश की तरक्की से जलते थे। यही एक कारण था जिस वजह से उन्होंने ईश की हत्या की थी।

समय का काम तो चलना है। अच्छा हो या बुरा बीतता जाता है। बच्चे के जन्म की तिथि नजदीक आ रही थी। सुनीता की माँ उसे अपने साथ ले आई थी। समय आने पर सुनीता ने एक सुंदर-सी बेटी को जन्म दिया।

सुनीता और उसकी माँ प्रसन्न है। बच्ची की सूरत ईश से बहुत मिलती है। ससुराल वाले उदास, उन्हें उम्मीद थी कि बेटा होगा। ईश का नामलेवा कोई तो होगा, किंतु बेटी के जन्म की खबर सुनकर उन्होंने किनारा कर लिया था। सुनीता की जिम्मेदारियाँ बढ़ गई थीं। एक तो उसकी परीक्षा नजदीक थी, दूसरी बच्ची बहुत छोटी थी। पिता व पति दोनों के सपनों को पूरा करना था। माँ-बेटी ने मिलकर जिम्मेदारी बाँट ली थी। माँ ने बच्ची को सँभाला तो बेटी ने सपनों को।

आज सुनीता की परीक्षा का परिणाम आया है। टॉप 10 रैंक में एक नाम सुनीता का भी है। उसे एक अच्छी कंपनी से सर्विस के लिए ऑफर भी मिला है। आज सुनीता के सपनों को पंख मिल गए। उसने ऑफिस जाना शुरू कर दिया है। बच्ची एक साल की हो गई है। ईश के केस की तारीखें भी आगे बढ़ती जा रही हैं।

अगली दो-तीन तारीखों में केस का फैसला होने वाला है। उसे विश्वास है अपराधियों को सख्त सजा मिलेगी, शायद फाँसी भी हो जाए। आज कोर्ट की तारीख है। सुनीता समय से पूर्व ही कोर्ट पहुँच गई। वह अंदर जा ही रही थी कि एक महिला लगभग दो साल के बच्चे के साथ उसके पैरों में गिर जाती है। दूसरी ओर एक बूढ़ी-सी औरत हाथ जोड़े खड़ी है। दोनों गिड़गिड़ा रही हैं। सुनीता समझ नहीं पाई यह उसके साथ क्या हो रहा है। कौन हैं ये औरतें और उसके सामने क्यों गिड़गिड़ा रही हैं। पूछने पर पता चला कि ईश के हत्यारों में एक इस बुढ़िया का बेटा तथा दूसरा इसका पति है। दोनों अपने-अपने पुत्र व पति की जान की भीख माँगने आई हैं।

बुढ़िया ने कहा, "बेटी मैं तेरा दुख नहीं बाँट सकती हूँ न कम कर सकती हूँ। तेरे लिए मेरा मन बहुत दुखता है। अपने बेटे को दिन-रात कोसती हूँ, फिर भी माँ हूँ, उसका जीवन चाहती हूँ। वही मेरे बुढ़ापे का सहारा है, उसे बचा ले बेटी। मेरे बुढ़ापे का सहारा है, उसे बचा ले बेटी।"

दूसरी महिला अपने बच्चे का वास्ता देती है। उस नन्हें बच्चे को देख सुनीता की आँखों के सामने सौम्या का चेहरा घूम गया। पिता के बिना बच्चे का जीवन कैसा होता है, वह अच्छी तरह समझती है। दूसरी ओर वह ईश को न्याय दिलाना चाहती है। उसके मन में हत्यारों के प्रति आक्रोश है। वह दुविधा में पड़ जाती है और बिना कुछ कहे वहाँ से निकलकर अंदर कोर्ट में घुस जाती है।

आज उसका ध्यान वकीलों की बहस की ओर नहीं है। कभी उसकी आँखों के सामने उस मासूम बच्चे का चेहरा आता है तो कभी उसके मन का क्रोध हावी हो जाता है। कभी वह उस बच्चे के भविष्य के विषय में सोचती है तो दूसरी ओर उसे अपनी सौम्या दिखाई देती है। क्या कसूर था मेरी बच्ची का जो उसे अपने पिता का चेहरा भी देखना नसीब नहीं हुआ। वह बहुत दुविधा में है। वकीलों की बहस जारी है।

आज फिर उसे विद्या मैडम की याद आ रही है। जब भी वह दुविधा में होती है तो अपने गुरु को स्मरण करती है। उनका ज्ञान उसे हमेशा सही निर्णय लेने के लिए प्रेरित करता है। उसे याद आता है मैडम अक्सर कहा कहती थी, "क्षमा वीर का आभूषण है। क्षमा करने वाला हमेशा बड़ा होता है। क्षमा करने के लिए बहुत बड़ा दिल चाहिए। कई बार हम गलती करने वाले को दंड देकर नहीं क्षमा करके सुधार सकते हैं।"

उसने तुरंत निर्णय ले लिया। पत्नी हार गई किंतु माँ जीत गई। उसने सोच लिया वह दोनों अपराधियों को क्षमा कर देगी। इनके किए की सजा इनके परिवार को नहीं भोगने देगी।

जिस ईष्या व क्रोध ने एक परिवार उजाड़ दिया था आज उस पर सुनीता ने विजय पा ली थी। उसने अपनी क्षमता से दो परिवारों को बचा लिया था। वह सौम्या के पिता को तो नहीं ला सकती किंतु एक मासूम को उसका पिता लौटा सकती थी। अपने पति को खो चुकी थी परंतु दूसरी के पति को बचा सकती थी। वह तुरंत अपनी सीट से उठकर जज के सामने जाती है और दोनों को क्षमा कर अपना केस वापस ले लेती है।

जज समेत सभी लोग हैरान हैं किंतु वह अपने निर्णय से खुश है। आज उसने दो परिवारों को बचा लिया है। वह बिना किसी की प्रतिक्रिया जाने कोर्ट से बाहर आ जाती है। गाड़ी में बैठ ड्राइवर को घर चलने के लिए कहती है। घर आकर माँ को सब बताती है और पूछती है, "मैंने सही किया ना माँ!" माँ सुनीता को गले लगा लेती है और कहती है, "सुनीता, तू सच में बेटों से बहादुर है। ऐसे निर्णय लेना सबके बस की बात नहीं है।"

इस बात को आज दस वर्ष बीत गए, सुनीता ने दोबारा पीछे मुड़कर नहीं देखा। उसकी जिंदगी उसके ऑफिस और बच्ची के चारों ओर ही घूमती है।

सुनीता को कई घंटे एक ही स्थिति में बैठे देख चपरासी अंदर आकर पूछता है, "मैडम, तबीयत खराब है क्या? बहुत देर से देख रहा हूँ आप कुछ उदास हैं। आपके लिए कॉफी बना लाऊँ।" "नहीं काका, आज कॉफी का मन नहीं है। यूँ ही पुराने विचारों में खो गई थी।" सुनीता ने उत्तर दिया।

चपरासी चला गया। सुनीता ने घड़ी पर नजर डाली पाँच बजने वाले थे। उसने जल्दी से फाइलें समेटीं, बैग उठाया और घर की तरफ बढ़ गई। आज उसे घर जाकर कई काम करने हैं, कल सौम्या आने वाल है ना...।

काश! सभी सुनीता की तरह सोचने लगें। ऐसा करने से कितने जीवन बच सकते हैं। क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। क्षमा सबसे बड़ा गहना। ❍

सुबह

◈ **आकांक्षा शर्मा**
आदर्श रा.उ.मा.वि.
सकतपुरा, कोटा, राजस्थान

राघव की मम्मी अर्णव की मम्मी की बात सुनकर चिंता में पड़ गईं। उन्होंने यह बात राघव के पापा को बताते हुए कहा, ''ऐसा कीजिए, कल आप राघव की क्लास टीचर से बात करना। हालाँकि हमारा बेटा इससे पहले वाले स्कूल में सदैव कक्षा में अव्वल आता रहा है, लेकिन हमें इस स्कूल में भी तो उसकी प्रगति के बारे में मालूम होना चाहिए।''

अर्णव और राघव दोनों कक्षा 9 में पढ़ते थे। कक्षा में भी पास ही बैठते थे। दोनों के बीच अच्छी मित्रता हो गई थी। दोनों पढ़ने में होशियार भी थे। दोनों का घर भी पास-पास ही था। राघव के पिताजी का ट्रांसफर अभी-अभी इसी शहर में बैंक मैनेजर के रूप में हुआ था।

अर्णव कक्षा में सदैव प्रथम आता रहा था। पहले अर्णव स्कूल से घर आकर होमवर्क करता, फिर ट्यूशन जाता, वहाँ से आकर ट्यूशन में दिया गया होमवर्क करता। शाम को तो खैर उसे खेलने का समय ही नहीं मिल पाता था, लेकिन घर पर भी वह और कोई अन्य काम नहीं कर पाता, न ही टी.वी. आदि मनोरंजन का समय उसे मिल पाता। पढ़ाई के कारण देर रात तक सोने के कारण वह अक्सर स्कूल लेट पहुँच पाता। कई बार प्रार्थना सभा में बताई गई महत्त्वपूर्ण बातों को भी नहीं सुन पाता था।

स्कूल में होने वाली साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग तो लेना चाहता था किंतु समयाभाव के कारण नहीं ले पाता था। उसके पिताजी का मानना था कि पढ़ाई से अधिक जरूरी और कुछ नहीं। वह अक्सर कहा

करते थे, "देखो बेटा! इन सब एक्स्ट्रा एक्टीविटीज के लिए तो पूरा जीवन ही पड़ा है। ये सब शौक तो बाद में भी पूरे किए जा सकते हैं किंतु पढ़ाई का जो महत्त्वपूर्ण समय निकल गया वह दोबारा नहीं आएगा। तुम्हारी रैंक, परसेंटेज और बढ़ता कॉम्पीटिशन बस! ये सब ही तुम्हें ध्यान रखने हैं। ये सब एक्स्ट्रा एक्टीविटीज समय की बर्बादी के सिवा कुछ नहीं है। इन सबसे तुम्हारा कंसन्ट्रेशन खत्म हो सकता है।"

इधर आश्चर्य की बात यह थी कि राघव न तो ट्यूशन जाता था, न ही किसी ने उसे घर पर बहुत अधिक पढ़ते हुए देखा था। वह स्कूल सदैव समय पर जाता। वहाँ मन लगाकर पढ़ता और स्कूल की प्रत्येक अतिरिक्त गतिविधियों में भी बराबर सम्मिलित होता। खेल-कूद, संगीत और भाषण सभी में वह अग्रणी रहता। घर पर आकर वह टी.वी. भी देखता, शाम को खेलने भी जाता और घर के कार्यों में अपने बड़ों की मदद भी करता।

वह हमेशा दस बजे तक सो जाया करता था। अर्णव की मम्मी कई बार राघव की मम्मी से कहा करती थी, "भाभीजी, आपका राघव तो मैंने कभी पढ़ते ही नहीं देखा। या तो टी.वी. देखता रहता है या फिर खेलता रहता है। अरे हाँ! वह तो ट्यूशन भी तो नहीं जाता। देखो बुरा मत मानना भाभीजी! आजकल बच्चों में कॉम्पीटिशन कितना बढ़ गया है? आप अपने राघव को थोड़ा समझाया करो। आखिर उसके भविष्य का सवाल है।"

फिर बड़े गर्व से सबसे कहती, "देखो हमारा अर्णव तो दिन-रात केवल पढ़ाई ही करता रहता है और बच्चे तो जब देखो टी.वी. से चिपके रहते हैं या खेलते रहते हैं, हमारा अर्णव तो रात को भी 12:30 बजे तक पढ़ता है।"

राघव की मम्मी अर्णव की मम्मी की बात सुनकर चिंता में पड़ गई। उन्होंने यह बात राघव के पापा को बताते हुए कहा, "ऐसा कीजिए, कल आप राघव की क्लास टीचर से बात करना। हालाँकि हमारा बेटा इससे पहले वाले स्कूल में सदैव कक्षा में अव्वल आता रहा है, लेकिन हमें इस स्कूल में भी तो उसकी प्रगति के बारे में मालूम होना चाहिए।"

अगल दिन राघव के पिताजी उसके स्कूल जाकर उसकी क्लास टीचर से

मिले। उन्हें देखकर उनकी क्लास टीचर बहुत खुश होती हुई बोली, "अरे! आइए मिस्टर शर्मा! मैं भी चाह रही थी कि एक बार राघव के पेरेंट्स से मिलूँ। अच्छा हो गया आप स्वयं ही आ गए।"

टीचर की बात सुनकर राघव के पिताजी थोड़ा असहज हो गए, उन्हें लगा शायद राघव की कोई शिकायत सुनने को मिलेगी। बोले, "क्या बात है मेम! क्या राघव की कोई शिकायत है?" मुस्कराते हुए उनकी मैडम बोली, "अरे नहीं। आपका बेटा तो काबिले-तारीफ है। उसकी तो जितनी तारीफ करो उतनी कम है। पढ़ने में भी तेज है और अन्य गतिविधियों में भी अव्वल। विनम्रता और ज्ञान दोनों के संस्कार आपने अपने बेटे को दिए हैं। मैं तो उसी का उदाहरण कक्षा के अन्य बच्चों को देती हूँ। हालाँकि कक्षा में और भी बच्चे हैं जो पढ़ाई में होशियार हैं किंतु पढ़ाई में होशियार होना ही तो जीवन में पर्याप्त नहीं है। सबसे बड़ी संपदा तो स्वास्थ्य है। मैंने राघव को बीमारी के लिए कभी एक भी छुट्टी लेते नहीं देखा। राघव हमेशा समझ के पढ़ता है। सदैव विद्यालय समय पर आता है। समय की पाबंदी और अनुशासन से ही बच्चों की प्रतिभा निखरती है। आश्चर्य की बात है जो पाठ हम पढ़ाते हैं उसकी जानकारी पहले से ही उसे होती है। इसका मतलब वह उस पाठ को पहले घर से समझकर आता है। इसके अलावा खेलकूद में उसका एनर्जी लेवल बहुत प्रशंसनीय है। उसकी आर्ट टीचर अक्सर मुझसे उसके क्रिएटिविटी की प्रशंसा करती रहती है।" राघव के पापा कक्षाध्यापिका जी की बात सुनकर संतुष्ट हो गए और अपने बेटे की चिंता से मुक्त भी।

कुछ दिनों बाद बच्चों की परीक्षाएँ हो गईं। राघव सहज और निश्चिंत होकर अपनी परीक्षा दे रहा था और उधर अर्णव परीक्षा के दिनों में अधिक-से-अधिक पढ़ाई करता हुआ भी उतना सहज और निश्चिंत नहीं था। उसके मन में सदैव यही व्याकुलता रहती कि कहीं मेरी रैंक पिछड़कर नीचे नहीं चली जाए। मेरे पर्सेंटेज कहीं अपेक्षा से कम नहीं आ जाएँ। खाना-पीना, सोना तो जैसे अर्णव परीक्षा में भूल ही जाता था। उसका चेहरा इन दिनों बहुत पीला और कमजोर हो गया था।

उन्हीं दिनों उनके घर कुछ रिश्तेदार अचानक आ गए। अणर्व की माँ की तो जैसे हालत ही खराब हो गई, मानो इन दिनों उन्होंने आकर कोई बहुत बड़ा अपराध कर दिया हो। दो दिन बाद तो अर्णव की मम्मी ने हद ही कर दी और उनके सामने स्पष्ट बोल दिया, "अभी अर्णव की परीक्षा चल रही है और जब हमारे बेटे की परीक्षा होती है, समझो हमारी भी परीक्षा ही होती है। हम लोगों का न खाने का ठिकाना होता है और न सोने का। ऐसे में हम आपकी आवभगत नहीं कर पाएँगे। क्षमा कीजिए। बेटे के भविष्य से बढ़कर हमारे लिए कुछ नहीं।" अपना-सा मुँह लेकर रिश्तेदार चले गए।

कुछ दिनों में आखिर परीक्षाएँ भी समाप्त हो गईं। लेकिन परीक्षाएँ खत्म होते ही अर्णव के माता-पिता ने अर्णव को एक नए कोचिंग में भेजना शुरू कर दिया। जहाँ छह घंटे की कोचिंग लेकर अर्णव घर आता और घर आकर भी वही पढ़ाई। उस दिन अचानक मोर्निंग वॉक करते हुए राघव और उसके पापा को साथ देखकर अर्णव के पापा मुस्कुराते हुए बोले, "अरे राघव बेटा! आज तुम भी मोर्निंग वॉक करने आ गए। और तुम लोगों का रिजल्ट कब आ रहा है?"

राघव ने मिस्टर गुप्ता को बताया कि वह इन दिनों जब से छुट्टियाँ लगी हैं, प्रतिदिन पापा के साथ मोर्निंग वॉक पर जाता है और उसके बाद फिर फुटबाल मैच के लिए अपने साथियों के पास चला जाता है। फिर राघव ने अचानक अर्णव के बारे में पूछ लिया, "अंकल अर्णव दिखाई नहीं देता! वैकेशन में कहीं बाहर गया है क्या?" सुनकर अर्णव के पापा बड़े गर्व से सीना फुलाकर बोले, "अरे नहीं! तुम्हें पता नहीं राघव! वो तो परीक्षा खत्म होते ही प्रतिभा कोचिंग क्लासेज में जाने लग गया है। तुम भी बेटा खेलना-वेलना छोड़ो और पढ़ाई पर ध्यान दो। इस बार बोर्ड की क्लास है तुम लोगों की।"

राघव कुछ बोलता इससे पहले उसकी फुटबॉल टीम के साथी उसको बुलाने आ गए। राघव के चले जाने पर राघव के पापा मिस्टर गुप्ता से पूछ बैठे, "अभी तो छुट्टियाँ चल रही हैं और अभी तो बच्चों का रिजल्ट भी नहीं

आया। भाई साहब! अभी अर्णव कौन-सी कोचिंग में जा रहा है?" अर्णव के पापा बड़ी जोर से हँसते हुए बोले, "शर्मा जी! आप कौन-से जमाने में रहते हैं? आजकल तो बच्चे छोटी-छोटी क्लासेज से ही इन कैरियर कम कोचिंग क्लासेज में जाने लग जाते हैं ताकि भविष्य में वे आई.आई.टी., मेडिकल जेसी परीक्षाएँ पास कर सकें। उनका एक साल भी बेकार नहीं हो इसलिए छोटी क्लासेज से ही उन्हें अधिक-से-अधिक पढ़ाई से जोड़ना भी तो जरूरी है। और आपको तो पता ही है कि हमारा अर्णव तो वैसे ही कितना होशियार है? सदैव प्रथम रैंक आती है और अब तो उसकी बोर्ड की क्लास भी है। फिर उसे मेडिकल के क्षेत्र में जाना है। अब तो उसका एक-एक क्षण कीमती है। आपने राघव को भी कोचिंग भेजना शुरू किया या नहीं? वैसे वहाँ पर एडमिशन होना इतना आसान नहीं है। पहले एन्ट्रेंस एक्जाम में उत्तीर्ण होना पड़ता है, उसके बाद फीस, वो भी तो कितनी ज्यादा है।"

अर्णव के पापा की बात सुनकर मिस्टर शर्मा कुछ गंभीर होते हुए बोले, "देखिए, गुप्ता जी! आपकी बात सही है कि अपने भविष्य के प्रति बच्चों को जागरूक करना और उसके लिए तैयार करना आवश्यक है किंतु प्रत्येक उम्र की अपनी सीमाएँ होती हैं। यदि हमने बच्चों से उनका बचपन ही छीन लिया तो क्या बड़े होने पर उनका जीवन एकांगी एवं नीरस नहीं हो जाएगा? बचपन की उन छोटी-छोटी खुशियों से क्या वह महरूम नहीं हो जाएँगे? खेलने से बच्चों का शारीरिक ही नहीं, मानसिक एवं सामाजिक विकास भी तो होता है। यदि अभी से उन्हें हमने उस पढ़ाई के बोझ से लाद दिया जो उनके स्तर से कहीं अधिक है, तो क्या उनकी पढ़ने की स्वाभाविक रुचि समाप्त नहीं हो जाएगी? बच्चे सहजता से जो सीखते हैं वो अधिक दीर्घ व स्थायी होता है। कोचिंग क्लासेज उन बच्चों के लिए ठीक है, जिन्हें किसी विषय विशेष को लेकर समस्या है। किंतु क्या यह सही है कि छोटी-छोटी क्लासेज से ही बच्चों को भेड़-बकरियों की तरह कोचिंग में हाँक दिया जाए। अपनी समस्याओं को स्वयं हल करना बच्चा कैसे सीख पाएगा? केवल दूसरों के दिए निर्देशों का पालन करने से तो बच्चा स्वयं भी एक मशीन की तरह

ही हो जाएगा। जिसकी अपनी भावनाएँ, संवेदनाएँ और इच्छाएँ खुलकर साँस भी नहीं ले पाएँगी। जीवन में एक काम के साथ विश्राम भी तो आवश्यक है। उसकी रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता क्या घुटकर दम नहीं तोड़ देगी? फिर आपने देखा होगा, सुना होगा और पढ़ा भी होगा कि हमारे समाज में किस तरह छोटे-छोटे बच्चे डिप्रेशन में आने लगे हैं। आत्महत्या की प्रवृत्ति बच्चों और युवाओं में बढ़ने लगी है। मेरी बात पर थोड़ा विचार अवश्य कीजिएगा। चलिए अब मैं चलता हूँ।"

अपनी बात पूरी करके राघव के पापा घर की ओर चल दिए किंतु मिस्टर गुप्ता वहीं खड़े रह गए और गहरी चिंता में पड़ गए सच! अपने बेटे को मैंने कई दिनों से खुलकर हँसते हुए नहीं देखा। कहीं हम अपने बच्चे के भविष्य की चिंता को लेकर उसका वर्तमान तो उपेक्षित नहीं कर रहे। बेचारा! आजकल कितना कमजोर और टेंशन में रहता है। खाना, सेहत और खेल इन सब पर तो हमने कभी ध्यान ही नहीं दिया। पढ़ाई, रैंक और परसेंटेज के अलावा तो हम उससे कोई बात ही नहीं करते। क्या यह उचित है? इन्हीं सब विचारों में खोए हुए मिस्टर गुप्ता कब घर आ गए पता ही नहीं चला।

मिसेज गुप्ता ने जब उन्हें विचारों में खोए हुए देखा तो पूछने लगी, "क्या बात है? आज मोर्निंग वॉक से जब से आए हो न जाने किस चिंता में पड़े हो? जरा मुझे भी तो बताओ।" मिस्टर गुप्ता ने राघव के पापा से हुई वार्तालाप के बारे में बताया और बोले, "रेखा! कहीं हम अपने बच्चे के ऊपर उसकी क्षमता से अधिक बोझ तो नहीं डाल रहे हैं? वो तो कुछ कहता नहीं, किंतु तुमने भी देखा होगा आजकल कितना गंभीर और थका हुआ लगता है। उसको खुलकर हँसते हुए देखे भी कितना समय हो गया है?"

पति की बात सुनकर मिसेज गुप्ता बुरा-सा मुँह बनाती हुई बोली, "तुम भी गजब करते हो! बस किसी ने दो बातें समझा दीं और तुम्हारी समझ में आ गईं। क्या हमारे पास दिमाग नहीं है? और फिर आप किसकी बात का विचार कर रहे हो? उनका बेटा जो हमेशा खेलने और मोज-मस्ती में लगा रहता है। उहँ! चिढ़ते होंगे मेरे बेटे की मेहनत और प्रतिभा से। खुद का

अपना बेटा तो सुधरता नहीं, लगे दूसरों को नसीहत देने। तुम उनकी फालतू बातों पर ध्यान मत दो। देखना अभी रिजल्ट वाले दिन उनके बेटे की सारी पोल खुल जाएगी।"

आखिर रिजल्ट का दिन भी आ पहुँचा। रिजल्ट स्कूल के प्रार्थना कक्ष में सभी के सामने कक्षाध्यापक को घोषित करने थे। कक्षा 9 और 11 में प्रथम आने वाले विद्यार्थी का नाम स्वयं प्रधानाचार्य घोषित करने वाले थे और उन विद्यार्थियों को सबके सामने पुरस्कृत भी किया जाना था। आज ही के दिन विद्यालय की अन्य सहशैक्षणिक गतिविधियों के पुरस्कार भी विद्यार्थियों को दिए जाने थे। निश्चित समय पर सभी कक्षाध्यापक एवं प्रधानाचार्य जी आ पहुँचे।

कक्ष खचाखच भरा हुआ था। अधिकांश बच्चों के साथ उनके माता-पिता भी आए थे। अर्णव व राघव के माता-पिता भी अपने बच्चों के साथ सभा में उपस्थित थे। पहले कक्षा 11 का परिणाम सुनाया, फिर कक्षा 9 का। अंत में दोनों कक्षाओं में प्रथम स्थान पर रहने वाले विद्यार्थियों के नाम स्वयं प्रधानाचार्य जी ने घोषित किए। जब कक्षा 9 में प्रथम आने वाले छात्र का नाम घोषित होने जा रहा था मिस्टर गुप्ता पहले से ही अर्णव को लेकर आगे आकर खड़े हो गए। प्रत्येक वर्ष उन्हीं का पुत्र कक्षा में प्रथम आता रहा था, इसलिए इस वर्ष भी उन्हें पूरा विश्वास था कि इस बार भी अर्णव ही प्रथम रहेगा।

"कक्षा 9 में जो बालक प्रथम आया है उसका नाम घोषित करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। मुझे प्रसन्नता इस बात की है कि वो बालक न केवल कक्षा 9 में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाला छात्र है अपितु विद्यालय की अन्य गतिविधियों में भी बराबर सक्रिय रहा है। उसका नाम है राघव शर्मा।"

प्रधानाचार्य के इस उद्‌बोधन के बाद पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट के साथ गूँज उठा। राघव को कक्षा 9 में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए पुरस्कृत किया गया। अंत में जब बेस्ट स्टूटेंड अवार्ड का नंबर आया, जो उस

छात्र को दिया जाता है, जिसने विद्यालय में होने वाली विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक व खेलकूद से जुड़ी सभी गतिविधियों में सबसे अधिक भाग लिया हो और उनमें श्रेष्ठ स्थान बनाया हो। जब बेस्ट स्टूडेंट अवार्ड के लिए भी राघव का नाम घोषित किया गया तो अर्णव के मम्मी-पापा के तो आश्चर्य का कोई ठिकाना ही नहीं रहा।

वो समझ नहीं पा रहे थे कि आखिर बिना किसी कोचिंग के राघव इतने अच्छे अंक कैसे लाया? सदैव मस्त रहने वाला, टी.वी. और खेलकूद में लगा रहने वाला राघव, जिसे उन्होंने कभी भी गंभीर होते हुए नहीं देखा था, उन्हें तो राघव की प्रतिभा का अंदाजा ही नहीं था। राघव को स्टेज पर बुलाया गया। प्रधानाचार्य जी ने उसे बेस्ट स्टूटेंट का अवार्ड प्रदान किया। प्रधानाचार्य जी जो कि बहुत ही मनोवैज्ञानिक सोच के धनी थे, उन्होंने सभी बच्चों को प्रेरित करने के उद्देश्य से राघव को स्टेज पर आकर अपनी सफलता का राज सबके बीच सम्मिलित करने का आग्रह किया।

राघव ने बड़ी ही विनम्रता और सहजता से बोलना शुरू किया, मेरे दादाजी मुझसे अक्सर कहा करते हैं, "बेटा, जो प्रातः जल्दी उठता है, ईश्वर का आशीर्वाद सबसे पहले उसी को मिलता है। सूर्य प्रतिदिन अपनी किरणों का आलोक सबके लिए बिना किसी पक्षपात के फैलाता है। सुबह की इस अमृत बेला का लाभ हम कितना उठा पाते हैं, बस यह हम पर निर्भर है। मैंने उन्हें सदैव बहुत सबेरे तारों की छाँव में उठते देखा है। उन्हीं को देखकर मैं भी धीरे-धीरे जल्दी उठने लगा और शायद यही कारण है कि सब लोग यही सोचते हैं कि ये तो कभी पढ़ता ही नहीं है। आखिर! इसके इतने अच्छे अंक कैसे आ जाते हैं? मैं प्रतिदिन प्रातः चार बजे से आठ बजे तक अपनी पूरी पढ़ाई नियमित रूप से करता हूँ। चाहे गर्मी की छुट्टियाँ हों या अन्य दिन, पुस्तकों का साथ मैंने कभी नहीं छोड़ा। हाँ! बस पढ़ने का समय केवल सुबह का ही होता है। विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले पाठों का पूर्व में अवलोकन व दोहरान करता हूँ। इसके अलावा पाठ्य-पुस्तकों के किसी विशेष अंश को लेकर समस्या आने पर मैं इंटरनेट व अन्य सहायक पुस्तकों की मदद लेता

हूँ। मैं अपने साथियों से यही कहना चाहता हूँ कि हम पाठ्य-पुस्तकों को अपना मित्र बनाएँ। बने-बनाए नोट्स रटने से हमारे मस्तिष्क पर जरूरत से ज्यादा बोझ पड़ता है। इसलिए अपने नोट्स मैं स्वयं ही बनाता हूँ। रात को सोने से पहले एक बार उन नोट्स को रोजाना सरसरी निगाह से देखकर सोना, यही मेरा क्रम रहता है। टी.वी. पर प्रसारित होने वाले ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों से मैं नियमित रूप से जुड़ा हुआ हूँ, जिसमें साइंस, जियोग्राफी, हिस्ट्री, क्विज और लैंग्वेज से जुड़ी कई नवीनतम जानकारियाँ मिलती रहती हैं। एन.सी.ई.आर.टी. के कार्यक्रमों का प्रसारण भी मैं अक्सर टी.वी. पर देखता हूँ। मैं अपने माता-पिता को भी धन्यवाद देना चाहूँगा, जिन्होंने मुझे कभी भी खेलकूद आदि मेरी अभिरुचियों को करने से रोका नहीं जिसके कारण मैं सदैव तरोताजा महसूस करता हूँ। मेरे अध्यापकों ने मुझे सदैव प्रोत्साहित किया है। शायद यही कारण है कि आज आप सबका स्नेह व सम्मान पा सका हूँ। धन्यवाद!"

राघव की इस छोटी व सुंदर स्पीच के लिए पूरे हॉल में तालियों की गड़गड़ाहट गूँज उठी। इस गूँज में अर्णव के माता-पिता ने भी शायद अपने बेटे की अनकही पीड़ा और व्यथा को समझ लिया था। उन्होंने अर्णव को गले लगाते हुए कहा, "बेटा! आज से हमारे जीवन में भी एक नई सुबह आई है और उस सुबह का स्वागत हम पूरे उत्साह के साथ करना चाहते हैं। अब तुम्हारे चेहरे पर भी हमेशा मुस्कान होगी। ये हमारा तुमसे वादा है।" शायद सुबह की किरणों ने अपनी दस्तक दे दी थी। ❍

नई राह की ओर

आगे पढ़ने की मेरी हिम्मत न हुई। क्या भाग्य की मार ऐसी होती है? शराब की एक बुरी लत ने चार ज़िंदगियाँ तबाह कर दी थीं। मैंने तय किया कि मैं अपने जीवन में ऐसा न होने दूँगी। अपने आपको इतना शिक्षित करूँगी कि आवश्यकता पड़ने पर अपने पैरों पर खड़ी हो सकूँ। यह मन में धारण करके मेरे जीवन के एक-एक करके वसंत बीतने लगे।

◈ **रजनी कंसल**
विकास भारती पब्लिक स्कूल
सेक्टर-24, रोहिणी, दिल्ली

दसवीं की परीक्षा नजदीक थी। रात का समय था। मैं पढ़ रही थी। इतने में अचानक वही जानी-पहचानी बहकी-बहकी-सी आवाज सुनाई दी।

"हट...अरे...किसकी मजाल है जो मुझे रोके...जानती नहीं, मैं..." धम्म...।

फिर वही सन्नाटा। लगता है, रोज की तरह वह फिर बेहोश होकर गिर पड़ा था। यह सब सुन-सुनकर मैं खीझने लगी थी। रात के समय शेर की तरह दहाड़ते हुए नशे में धुत होकर घर जाना और सुबह नशा उतर जाने पर भीगी बिल्ली बनकर घर के भीतर छिप जाना।

धीरे-धीरे लत बढ़ने लगी। जो नशा पहले रात में होता था, वह दिन में भी होने लगा। जब कभी नशे में न होता और पत्नी संग खड़ा होकर, मम्मी-पापा से हँसकर बातें कर रहा होता तो मन करता कि इस जोड़ी को बस देखते ही रहो...नजरें न हटाओ। कितना सुंदर रूप-रंग, लंबी कद-काठी दोनों जन जवान थे, हसीन थे, दो छोटे लड़के, सरकारी नौकरी, सरकारी मकान...और क्या चाहिए था?

परंतु जाने किसकी कुदृष्टि हुई और हँसता-खेलता परिवार बर्बादी के कगार पर आकर खड़ा हो गया था। और फिर वही हुआ, जिसका डर था। वह काला दिन, जब वह पत्नी से लड़कर बच्चों की फीस के लिए सँभालकर रखे पैसे लेकर आखिरी बार शराब पीने चला गया परंतु लौटा चार छूट ससुराल, दोनों वहीं हैं। वहाँ उसके बच्चों की अच्छी देखभाल भी हो जाएगी। बच्चों के मामा उसे अंग्रेजी माध्यम वाले स्कूल में पढ़ाएँगे।" माँ ने पूरी कहानी ही सुना डाली।

"हूँ! ये अंग्रेजी स्कूल में पढ़ेंगे! और मैं देखो, सरकारी स्कूल में पढ़ रही हूँ।" मैंने नाक-भौं सिकोड़कर कहा।

"न जाने, इसे अक्ल कब आएगी?" माँ इतना करते हुए मेरी नादानी पर पैर पटकते हुए चली गई।

थोड़े दिनों में हमारा पड़ोस खाली हो गया। जहाँ शाम होते ही शोर-गुल रहता था, वहाँ घुप्प अँधेरे व सन्नाटे का राज था। मैं अंकल के भूत के डर से घर के पिछवाड़े न जाती थी।

अनु आँटी को लिवाने उनके भाई भटिंडा से कार लेकर आए थे। उन दिनों घर में कार होना बड़ी बात थी। दोनों छोटे बच्चे कार देखकर ऐसे खुश हो रहे थे मानो पहली बार देख रहे हों। आँटी माँ के गले से लिपटकर ऐसे रो रही थीं मानो माँ या बड़ी बहन से विदा लेते हुए दुल्हन रोती है। माँ ने भी रिश्ता निभाने में कोई कसर न छोड़ी थी। जाने कितने ही अवसरों पर तन, मन व धन से उनकी सहायता की थी।

रोने की आवाज सुनकर आस-पड़ोस की अन्य औरतें भी बाहर निकल आईं थीं। वातावरण बोझिल-सा हो गया था। मैं यह सब देखकर भी गहराई समझ न पाई परंतु भीतर कुछ बिखरन सी महसूस कर रही थी।

धीरे-धीरे दिन बीतने लगे और स्थिति सामान्य होने लगी। बढ़ती कक्षा में बढ़ते पढ़ाई के बोझ के कारण मैं धीरे-धीरे अनु आँटी व उनके साथ हुए हादसे को भूलने लगी।

गुड़गाँव में सोहना से आगे ठेठ मेवाती क्षेत्र है नूँह, जहाँ उन दिनों में सीनियर सैकेंडरी स्कूल नहीं हुआ करते थे, अतः मुझे दसवीं से आगे की

पढ़ाई वहाँ के एकमात्र कॉलेज 'यासीन मेव डिग्री' कॉलेज से करनी पड़ी। उस कॉलेज में उन दिनों लड़के-लड़की का अनुपात बहुत ही कम था, तकरीबन सौ लड़कों पर अधिकतम दस लड़कियाँ।

इस खराब अनुपात के चलते लड़कियों को बहुत सँभलकर चलना पड़ता था, विशेषकर हिंदू लड़कियों को, क्योंकि मुस्लिम बाहुल्य उस क्षेत्र में हम जैसे नौकरी-पेशा हिंदू ही अपनी लड़कियों को दसवीं से आगे पढ़ाते थे।

एक दिन इक्नोमिक्स के पीरियड में एक प्रश्न का उत्तर न दे पाने के कारण मेरी खिल्ली उड़ाई गई। इस कारण मैं बहुत खराब मूड लेकर घर आई थी। घर आकर पाया कि माँ भी उदास थीं। न मैंने माँ से कुछ कहा, न माँ ने मुझसे। खाना खाकर मैं सो गई।

अगले दिन अपनी पुस्तकों को छानते हुए मेरे हाथ पंद्रह पैसे वाला एक पोस्टकार्ड लगा जिस पर लिखे हुए लफ़्ज कुछ इस प्रकार थे

"आदरणीय दीदी,

नमस्कार!

आशा है आप सपरिवार कुशल होंगी। मैं भी ठीक हूँ। आपके अलावा और कोई सूझा ही नहीं इसलिए सोचा, अपने मन की बात आपसे कर लूँ। बड़ी उम्मीद लेकर यहाँ आई थी परंतु ससुराल वालों ने तो देखकर दरवाजा ही बंद कर लिया। मायके वाले भी मुँह छिपाते दिखे। 'तीन-तीन जन का बोझ कौन सँभालेगा' भाभी का ताना सुन घर में कदम रखने का मन न किया।

"मगर, मैं और मेरे बच्चे बोझा कैसे? मेरे पति की तो सरकारी नौकरी थी। उनकी मृत्यु के बाद तो मुझे नौकरी मिलनी थी।"

"अरी! दसवीं फेल को तो चपरासिन की नौकरी भी न मिलेगी।" भाभी ने फिर ताना दिया। अब आप ही बताइए, दीदी, उस घर में कैसे रहती। ठिकाना ढूँढ़ रही हूँ। मिलने पर चिट्ठी लिखूँगी। बस आप अपनी दोनों लड़कियों को पढ़ा-लिखाकर अपने पैरों पर ज़रूर खड़ा करना। कहीं मेरी तरह..."

आगे पढ़ने की मेरी हिम्मत न हुई। क्या भाग्य की मार ऐसी होती है? शराब की एक बुरी लत ने चार ज़िंदगियाँ तबाह कर दी थीं। मैंने तय किया

कि मैं अपने जीवन में ऐसा न होने दूँगी। अपने आपको इतना शिक्षित करूँगी कि आवश्यकता पड़ने पर अपने पैरों पर खड़ी हो सकूँ। यह मन में धारण करके मेरे जीवन के एक-एक करके वसंत बीतने लगे।

...दिल्ली की सड़कों पर तेजी से कार दौड़ते हुए और कनॉट प्लेस की रंगीनियों का मजा लेते हुए मैं, पति और बेटे के साथ जा रही थी कि अचानक सिग्नल पर हमारी कार के साथ एक 'मारुति वैगन आर' कार आकर रुकी। युवा चालक के शीशा नीचे करने पर अचानक मेरी दृष्टि उसके बगल में बैठी अधेड़ महिला पर गई।

इससे पहले कि मैं कुछ कह पाती, सिग्नल ग्रीन हो गया और उनकी गाड़ी मुड़ गई। परंतु मैंने किसी प्रकार उनकी गाड़ी का नंबर नोट कर लिया। मैं पसोपेश में थी क्या सचमुच मैंने उन्हीं को देखा या वह मेरा भ्रम था।

उलझन की स्थिति से निकलकर मैंने उनसे मिलने का निश्चय किया। तकनीक व व्यवस्था के आधुनिकीकरण से मैं उनका पता, जोकि ग्रेटर कैलाश का था, ढूँढ़ने में सफल हो गई और एक दोपहर ऑटो से मैं अपने गंतव्य पर पहुँच ही गई। दरवाजे पर लगी नेम प्लेट पर 'अनु शर्मा, रोहित शर्मा, मोहित शर्मा' लिखा देखकर मेरे दिल की धड़कनें बेकाबू होने लगीं। काँपते हाथों से मैंने कॉल बेल बजाई। अंतर्मन में युद्ध चल रहा था, क्या कहूँगी, कैसे पूछूँगी, क्या हुआ? आदि...इत्यादि।

इतने में दरवाजा खुलने से विचारों की तंद्रा टूटी। "जी कहिए, किससे मिलना है?" आवाज आई तो देखा कि सामने खड़ी स्त्री घर की मालकिन तो नहीं लग रही है।

"जी, अनु शर्मा जी से!"

"मालकिन तो घर पर नहीं हैं। किसी काम से गई हैं। आने वाली हैं। यदि आप इंतजार कर सकती हैं तो ड्राइंगरूम में बैठ जाइए।"

"ठीक है।" मैं उनसे मिलने का मौका नहीं छोड़ना चाहती थी।

ड्राइंगरूम की दीवारों पर लगे चित्रों को देखकर अंदाजा लगाना बहुत आसान था कि वे समाज-सेवा के कार्य में काफी आगे बढ़ चुकी हैं। मैं चित्रों को निहार रही थी कि इतने में दरवाजे पर कॉल बेल बजी। थोड़ी देर में अनु

आँटी अंदर आईं, बिलकुल बदली हुई सी, थोड़ी झुकी हुई कमर, आधे सफेद हो चुके बाल परंतु चेहरे पर अजीब सी शांति व सौम्यता झलक रही थी।

शिष्टाचारवश उन्होंने हाथ जोड़कर अभिवादन किया। मैं मूर्ख, जड़वत् उन्हें देखती रही। जैसे ही वे मेरे करीब आईं, मैं स्वयं पर से नियंत्रण खो बैठी और उनके गले लगकर फूट-फूटकर रोने लगी। वे मेरी पहचान से बेखबर, मातृवत् मेरे सिर पर हाथ फेरती रहीं। मेरे शांत हो जाने पर उन्होंने मेरे बारे में पूछा।

"अरे! रजनी! कितनी बड़ी हो गई हो। और यहीं दिल्ली में सत्रह साल से हो! मुझे पता ही न था। दीदी कैसे हैं? कितनी चिट्ठियाँ लिखीं पर एक का भी जवाब न आया।"

"दरअसल आँटी, पापा का तबादला जींद हो गया था। शायद इसीलिए आपकी चिट्ठियाँ मिली ही नहीं।"

"चलो! अच्छा हुआ जो तुम मिलीं; मुझे दीदी का फोन नंबर देना। लंबा अरसा हुआ उनसे बात किए। अब उनसे खुलकर बात करूँगी।" धीमी हँसी से उन्होंने कहा। मैंने देखा कि माँ के बारे में बात करते हुए उनकी आँखों में चमक आ गई थी।

हम बातें कर ही रहे थे कि इतने में महरी चाय ले आई, साथ में वही बिस्किट, जो मैंने बचपन में छोटे मोहित को थप्पड़ मारकर छीन लिए थे। थोड़ी देर में रोहित भी आ गया।

डायनिंग टेबल पर साथ खाना खाने बैठे तो बातों का सिलसिला चल निकला। रोहित का अपना व्यवसाय है, मोहित की वकील की पढ़ाई पूरी होने वाली है। अगले महीने तक वह वापस आ जाएगा।

"बहुत मेधावी है, हमारा मोहित! उम्मीद है काबिल वकील बनेगा।" रोहित ने बताया। "मोहित के वापस आते ही रोहित की शादी कर देंगे। बहुत अच्छी लड़की है। पढ़ी-लिखी, सुंदर। तुम्हें सपरिवार शादी में शामिल होना होगा।" आँटी ने न्यौता देते हुए कहा।

"जी आँटी, जरूर।" मैंने हँसते हुए स्वीकृति दी। फिर मिलने का वादा करके मैंने भारी मन से विदा ली। कई बार ठहरे हुए पानी में पत्थर नहीं

मारना चाहिए क्योंकि तूफान भी आ सकता है। आँटी ने इन सत्रह सालों का सफर कैसे तय किया होगा? यह प्रश्न अब भी मेरे दिमाग में गूँज रहा था और मेरा दिमाग फट गया होता यदि अगले दिन माँ का फोन न आया होता।

आँटी की मुस्कुराहट के पीछे जो दर्द छिपा था, वह सहन करना सबके वश में नहीं है। दोनों घरों से निकाले जाने के बाद आँटी ने 'विधवा आश्रम' की राह पकड़ी। परंतु दोनों बच्चों को वहाँ रखने के लिए उन्हें कीमत चुकानी होगी, ऐसा अंदाजा था उन्हें। बड़ा बेटा, मात्र आठ साल की उम्र में पूरे आश्रम में झाड़ू-पोंछा करता, आँटी चार साल के मोहित को गोद में लेकर पूरे आश्रम का खाना पकातीं, बर्तन माँजती व संचालक की वासना भरी हरकतों का शिकार होतीं। जिस दिन पानी सिर पर से निकला, हाथों में हथियार उठा लिए। आश्रम की अन्य पीड़ित महिलाओं ने भी साथ दिया। बाजी पलट गई। आश्रम के संचालन का काम आँटी ने अपने हाथों में लिया। उनकी हिम्मत देखकर आश्रम की विधवाएँ उनकी कायल हो गईं।

सबसे पहले उन्होंने बुनाई के माध्यम से स्त्रियों को अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाया। औरतें एक से एक नमूने बनाने लगीं। उनकी आमदनी का एक जरिया बना। धीरे-धीरे वे अचार, बड़ियाँ, पापड़ आदि बनाने लगीं। उनके बनाए पापड़ 'हिज्जत पापड़' के नाम से पूरे भारत में बिकते हैं। आँटी ने आश्रम के संचालन का काम एक अन्य योग्य बहन को सौंपकर आँटी निकल पड़ीं उन वजहों को समाज से मिटाने जिन्होंने उनके हँसते-खेलते जीवन को बर्बाद कर दिया।

उनके दो अणुव्रत थे लड़कियों की शिक्षा के लिए अभिभावकों को प्रेरित करना, शराब आदि नशे की लत से समाज को मुक्त कराना।

अपनी इस मुहिम को चलाते हुए कब उनके बाल आधे सफेद हो गए, पता ही न चला। रोहित ने बखूबी उनका साथ दिया। वह स्वयं पढ़ न पाया परंतु फिर भी वक्त के साथ चलते हुए अपना निजी व्यवसाय खड़ा किया। उस विधवा आश्रम की स्त्रियों द्वारा बनाई गई वस्तुओं को उसने देश-विदेश तक पहुँचाया। वह उन्हें न केवल अच्छा वेतन देता है, बल्कि शादी-ब्याह आदि अवसरों पर आर्थिक सहायता भी करता है। छोटा भाई मोहित, वकील

बनकर 20 प्रतिशत केस करीबों के लेगा व मुफ्त में उन्हें न्याय दिलाएगा।

माँ की बातें सुन-सुनकर मेरा सिर चकरा रहा था। कहाँ आँटी का दर्द से भरा जीवन...कहाँ मेरा सुखमय निजी जीवन। फिर भी समाज-कल्याण की ओर देखने के लिए मेरे पास समय नहीं है, साधन नहीं है। धिक्कार है।

अनु आँटी के जीवन की दास्ताँ ने मुझे झकझोर कर रख दिया। मैंने निश्चय किया कि सही वक्त आने पर मैं समाज के कमजोर व पिछड़े वर्ग को शिक्षा प्रदान करूँगी। यही आज से मेरा अणुव्रत है। ईश्वर मेरे मनोबल को बनाए रखे।

"मम्मी, जल्दी से खाना दो, मुझे कोचिंग के लिए देर हो रही है।" चीनू की आवाज सुनकर मेरी तंद्रा टूटी। चेहरे पर दृढ़ निश्चय भरा तेज लिए मैं रसोईघर की ओर बढ़ गई। ❍

मानवता

◈ **डॉ. अरुण कुमार वर्मा**
जवाहर नवोदय विद्यालय
सिरमौर, रीवा, मध्य प्रदेश

"कैसे भूल सकती हूँ बेटा? तुम्हारे पिता के बिना बीस साल का समय मैंने कैसे बिताया है? अनाथ होने का दर्द मुझे अच्छी तरह से पता है। शौकत के साथ वैसा ही हो जाए जैसा हम लोगों के साथ हुआ? एक और परिवार में अनाथ नहीं होने दूँगी। कष्ट तो कष्ट होता है, चाहे वह हिंदू हो या मुसलमान। हिंदू और मुसलमान तो मनुष्य के द्वारा बनाई व्यवस्था का नाम है। ईश्वर ने तो सिर्फ मनुष्य बनाया है।"

दूरदर्शन पर शाम के छः बजे एक खबर प्रसारित हुई। मुंबई के धारावी इलाके में बम ब्लास्ट में एक बड़े हिंदूवादी नेता को देश ने खो दिया। यह खबर पूरे शहर में बिजली की तरह फैल गई। धर्मों का उन्मादी रूप आमने-सामने आया। ओछी धार्मिकता मानवता पर प्रहार करने लगी। मानवता असहाय करुण सिसकियाँ ले रही थी। परिणामस्वरूप शहर में अफरा-तफरी मच गई। दुकानों के शटर गिरने लगे। खोमचे वाले, पाटी वाले, पट्टा बारदान वाले, फेरी वाले, डिब्बा वाले, टैक्सी ड्राइवर, मील में काम करने वाले कामगार, दुकानों पर नौकरी करने वाले सभी अपनी खोली की ओर लौटने लगे। थोड़ी ही देर में पूरे शहर में सन्नाटा पसर गया।

सांप्रदायिक उन्माद को देखते हुए प्रशासन ने शहर में कर्फ्यू की इत्तला कर दी। उन्माद की खबर इधर-उधर न पहुँचे, इसलिए फोन के नेटवर्क को काट दिया गया। रास्ते में फँसे लोगों के परिजन फोन न लगने से परेशान। बाहर से रोजी-रोटी के लिए आए लोगों के घरों में मायूसी छा गई। एक-दूसरे के यहाँ आकर बस यही पूछते कुछ खबर मिली। लोग दूरदर्शन अथवा रेडियो

के पास शांत बैठे खबरों पर ध्यान लगाए हैं। दूसरे धर्म को मानने वाले लोगों को परेशान करने में सच्ची धार्मिकता समझने वाले मनचले लोग एक-दूसरे के खून-खराबे पर उतर आए। गली-कूचे में फँसे लोगों पर वार कर अपनी धार्मिकता को पुख्ता करने में जुट गए। बहुत सारे निरपराध लोग इसका शिकार होने लगे।

चार साल पूर्व शौकत मुंबई आया। एक दूर के रिश्तेदार ने टैक्सी चलाने का हुनर सिखाया और अपने यहाँ रहने की शरण दी। बूढ़े माँ-बाप और चार बहनों की शादी से उबरने के लिए शौकत खूब परिश्रम करने लगा। भाड़े की टोह में सदैव तत्पर रहता। नाके पर टैक्सी लगा कभी आराम फरमाने में अपना समय जाया नहीं करता। कर्फ्यू की सूचना से लोग टैक्सी खड़ी कर भागने की हड़बड़ी में हैं परंतु भाड़ा उठाने के चक्कर में शौकत अपनी टैक्सी लगाए रहा। वह इंतजार कर ही रहा था कि तीन भाड़ा कांदेवली का मिल गया। उसने मीटर गिराया और कांदेवली की तरफ चल पड़ा।

कांदेवली पहुँचकर मुख्य सड़क से जैसे ही गली की तरफ मुड़ा, गली सुनसान थी। ज्यों ही वह आगे बढ़ा, पाँच-छः लोग पूरी सड़क घेरे खड़े थे। सभी के हाथों में धारदार हथियार थे। वे लोग टैक्सी रुकवाकर उसमें बैठे लोगों से पूछताछ करने लगे। संयोग से वे लोग हिंदू निकले। शौकत उनकी बातचीत सुन टैक्सी छोड़ वहाँ से भागा। दो लोग इसे दौड़ा लिए। खतरा देख शौकत जान लगाकर भागा। इसे खेदने वाले काफी पीछे थे। दौड़ते हुए गली के दाईं तरफ एक पतली गली की ओर मुड़ गया। अब दौड़ने का साहस इसमें नहीं था, परंतु पीछा करने वाले का डर बना था। वह भागने में असमर्थ होकर एक घर के दरवाजे को हाथ से दो-तीन बार पीटा व आवाज दी।

भंवर में फँसा आदमी किसी भी सहारे की तलाश करता है। एक वृद्ध महिला ने दरवाजा खोला। शौकत हाँफते हुए बोला, "माँ जी, मेरी जान बचा लीजिए। मुझे मार डालेंगे।" शौकत हाथ जोड़े खड़ा था। महिला ने शौकत को अंदर बुला दरवाजा बंद कर लिया। उसे कुर्सी पर बैठने को कहा। शौकत सहमा हुआ कुर्सी पर बैठा दरवाजे के पल्ले की साँस से बाहर की ओर देख

रहा था। दो व्यक्ति दिखाई दिए। इधर-उधर देखकर बोला, "भाग गया कहीं।"

दोनों को लौटते देख शौकत की जान में जान आई। "शुक्रिया माँ जी आपने मेरी जान बचा ली।" शौकत बोला, "आप कौन हो और क्या काम करते हो?" वृद्ध महिला ने पूछा। "मेरा नाम शौकत है माँ जी, मैं उत्तर प्रदेश के फैजाबाद का रहने वाला हूँ। यहाँ मलाड़ में रहता हूँ। मैं टैक्सी चलाता हूँ। भाड़ा छोड़ने आ रहा था। कुछ हिंदुओं ने मुझे मार डालने की नियति से दौड़ाया था। आप न होती तो आज...।" "यह घर भी तो हिंदू का है।" वृद्ध महिला बोली, "परंतु तुम्हें चिंता करने की कोई बात नहीं है। माहौल थोड़ा शांत होने दो, मैं चलकर तुम्हें मेन सड़क तक छोड़ आती हूँ। मुहल्ले में सब मेरी जान-पहचान के हैं।"

"बहुत मेहरबानी माँ जी, मैं चला जाऊँगा।" यह कहते हुए शौकत की आँखें भर आईं। वह हाथ जोड़े खड़ा हो गया। "बैठो चाय बनाती हूँ, अभी जाना ठीक नहीं है।" शौकत बैठ गया। उस महिला के स्नेह में कभी भावविभोर तो कभी संशय और दुविधा में एक-एक पल बीत रहा था। कभी वह महिला शांति की साक्षात् देवी लगती तो कभी लगता कहीं उसके साथ कोई षड्यंत्र तो नहीं चल रहा है।

शौकत बैठा एक-एक पल हर परिस्थिति के लिए अपने को समर्पित करने को तैयार था। इतने में दरवाजा खटखटाने की आवाज आई। शौकत सहम गया। उसे उसका संशय सही होता दिखा। दरवाजा खोलने की उसकी हिम्मत नहीं हुई। महिला ने आकर दरवाजा खोला। बाइस-तेइस साल के युवक के प्रवेश करते ही शौकत के प्राण सूख गए। जिन पाँच-छः लोगों ने टैक्सी रुकवाई थी उनमें से एक यह युवक भी था। "मुझे यहाँ से निकल जाना चाहिए था।" शौकत ने सोचा।

"तुम यहाँ!" आए हुए व्यक्ति ने कड़ककर पूछा? "ये शौकत है बेटा।" महिला बोली, "अभी कुछ लोगों ने बेचारे को मारने के लिए दौड़ाया था। धर्म के उन्माद में आदमी भोले-भाले लोगों को कत्ल कर रहे हैं।" "माँ, आप भी

हद करती हो। ये बेचारे हैं? इसी समुदाय के लोगों ने तो नेता जी को बम से उड़ा दिया। क्या पिताजी की मृत्यु को आप भूल गई हो? इसी समुदाय के लोगों ने कितनी बुरी तरह से पिताजी का कत्ल कर दिया था?"

"कैसे भूल सकती हूँ बेटा? तुम्हारे पिता के बिना बीस साल का समय मैंने कैसे बिताया है? अनाथ होने का दर्द मुझे अच्छी तरह से पता है। शौकत के साथ वैसा ही हो जाए जैसा हम लोगों के साथ हुआ? एक और परिवार मैं अनाथ नहीं होने दूँगी। कष्ट तो कष्ट होता है, चाहे वह हिंदू हो या मुसलमान। हिंदू और मुसलमान तो मनुष्य के द्वारा बनाई व्यवस्था का नाम है। ईश्वर ने तो सिर्फ मनुष्य बनाया है।"

"यह क्या कह रही हो माँ? पिताजी की मृत्यु का बदला लेने का अवसर आया तो...।" "यदि हम एक-दूसरे से बदला लेते रहे तो यह बदला तो कभी पूरा ही नहीं होगा। इस बदले की आग ने ही तो मनुष्य को मनुष्य का दुश्मन बना दिया है। मानवता ही मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है बेटा! इसकी रक्षा करना ही मनुष्य की सबसे बड़ी धार्मिकता और मानवीय एकता में विश्वास करना मनुष्य का सबसे बड़ा कर्तव्य है।"

माँ का एक-एक शब्द उसके अंतर्मन को झकझोर रहा था। आज माँ उसके लिए दुनिया की सबसे बड़ी धर्म की व्याख्याता थी। वह बोला, "माँ, मैं पथ से भटक गया था। तुमने मेरी आँखें खोल दीं। आज से मैं मानवीय एकता के लिए काम करूँगा।"

शौकत ने कभी सोचा नहीं था कि माँ किसी की भी हो, मजहब की दीवार ममता को मार नहीं सकती। ❍

एक थी सपना

◈ **सुशीला तंवर**
श्रीमती उत्तमीबाई आर्य कन्या व.मा विद्यालय
भिवानी, हरियाणा

वह खयालों में खोई थी कि अचानक किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा। पीछे मुड़कर देखा तो पतिदेव खड़े थे। उन्होंने प्यार भरे स्वर में कहा, "सपना! तुम आगे पढ़ोगी, जितना चाहो आगे बढ़ोगी। मैं तुम्हारे सपने पूरे करने में तुम्हारी मदद करूँगा।" सुनते ही उसका मुरझाया चेहरा कमल की तरह खिल उठा।

दूध गर्म करते-करते वह अचानक पुरानी यादों में खो गई। वह पूरी कक्षा में सबसे होशियार छात्रा के रूप में जानी जाती थी। कॉलेज की हर गतिविधि में भाग लेकर ढेर सारे पुरस्कार जीते थे उसने। वह पंख लगाकर आकाश में उड़ रही थी। प्रतिदिन अध्यापकों द्वारा की गई प्रशंसा उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती थी। भविष्य के लिए ढेर सारे सपने बुने थे उसने। आगे जाकर वह किसी बड़े पद पर प्रतिष्ठित होने के लिए पढ़ाई करना चाहती थी।

किंतु यह दुनिया का नियम है कि जब कोई आगे बढ़ना चाहता है तो उसे सबसे पहले उसके अपने ही पीछे धकेलने की पुरजोर कोशिश करते हैं। वही उसके साथ भी हुआ। रिश्तेदारों के दबाव में आकर उसकी पढ़ाई बीच में ही छुड़वाकर जबरदस्ती शादी कर दी गई। उसे आशा थी कि पति के घर जाकर पति की मदद से वह अपने सपनों को पूरा कर पाएगी।

लेकिन यह क्या! पति ने भी उसे आगे पढ़ने से साफ इन्कार कर दिया। उसके सपने बिखरकर रह गए। किसी ने भी उसकी इच्छाओं को समझने की कोशिश नहीं की। वह मन ही मन टूट गई। गुमसुम-सी रहने लगी थी वह।

उसे मनोवैज्ञानिक के पास ले जाया गया तो उसने उसकी सारी व्यथा गौर से सुनकर पति को बताई।

एक दिन जब वह घर पर अकेली थी और सोच रही थी कि यह दुनिया कितनी खराब है कि जब कोई आगे बढ़ने लगता है तो यह दुनिया उसकी जमकर टाँगें खींचती है और जब टाँग खिंचाई के बाद भी आगे बढ़ जाता है तो दुनिया उसके साथ हो लेती है।

वह खयालों में खोई थी कि अचानक किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा। पीछे मुड़कर देखा तो पतिदेव खड़े थे। उन्होंने प्यार भरे स्वर में कहा, "सपना! तुम आगे पढ़ोगी, जितना चाहो आगे बढ़ोगी। मैं तुम्हारे सपने पूरे करने में तुम्हारी मदद करूँगा।" सुनते ही उसका मुरझाया चेहरा कमल की तरह खिल उठा।

जो पति उसे राक्षस नजर आता था, देवता नजर आने लगा। उसके सपनों को मानो पंख लग गए और वह आकाश में उड़ने लगी। एक दिन आई.ए.एस. की परीक्षा पास कर उच्च अधिकारी बन गई।

अभी तो कुछ और भी बाकी था। आज उसका जन्म दिन था। वह बेसब्री से शाम को पति का इंतजार कर रही थी कि अचानक पतिदेव ने आकर उसकी आँखें बंद कर लीं और बोले, "देखो सपना, मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ। आँखें खोलीं तो वह आश्चर्यचकित रह गई। सामने हारमोनियम रखा था। जिस पति ने उसके संगीत के शौक पर पूर्णतया प्रतिबंध लगा दिया था वही आज उसके लिए हारमोनियम लेकर आए थे। उसे लगा, यह एक सपना है। लेकिन नहीं यह हकीकत थी। उसके मन में मधुर तानें बजने लगीं।

अब वह खाली समय में संगीत का शौक पूरा करती थीं तथा मंच पर स्टेज प्रोग्राम भी देती थी। जिस बीमारी का इलाज डॉक्टर न कर पाए थे वह उसके पति ने कर दिखाया था। उसकी जो इच्छाएँ मर चुकी थीं, पुनः जीवित हो उठीं। काश! सभी महिलाओं को ऐसा पति मिले जो उसकी इच्छाओं को समझ सके, वह सोच रही थी।

दुनिया में गिराने वाले तो बहुत लोग होते हैं, किंतु गिरे हुए को उठाने वाला कोई बिरला ही मिलता है, जो उसके पतिदेव थे। क्यों लोग नहीं समझ पाते कि धन-दौलत और चमक-दमक के पीछे भी महिलाओं को कितनी घुटन होती है। उनकी सारी डिग्रियाँ व्यर्थ हो जाती हैं और याद रह जाता है केवल बच्चों, पति को समय पर खाना देना, कपड़े धोना।

अचानक दूध उफनने की आवाज से उसकी तंद्रा भंग हुई। पीछे मुड़कर देखा तो पतिदेव मुस्कुरा रहे थे। उसने कृतज्ञता भरी नजरों से उन्हें देखा और प्यार से गले से लिपट गई। ❍

निरंतर स्नेहा के सान्निध्य में रहने के कारण मैं उसकी तरह सोचने लगी हूँ ऐसा मुझे लगने लगा है। मैं विश्व शांति और निःशस्त्रीकरण के पक्ष में पूर्णतः हूँ। मेरे से तो मच्छर भी नहीं मारा जाता है, मैं उसे उड़ा देती हूँ। भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि काश! ये मच्छर, मक्खी आदि नहीं होते तो इन्हें मारने का प्रश्न ही नहीं होता। विश्व में यदि किसी के पास शस्त्र नहीं होते तो उसका प्रयोग करके होने वाली हानि से बचा जा सकता है।

संकल्प

◈ **माया अंबुलकर**
तेजस्विनी विद्या मंदिर
गणेश नगर, नंदनवन
नागपुर, महाराष्ट्र

स्नेहा के बारे में प्राप्त जानकारी से एक बात बिलकुल स्पष्ट है कि वह एक अच्छी इंसान थी। इतनी भोली कि किसी ने जरा से भी अच्छे से बात की तो दूसरी बात उसे काम की याद दिलाने की भी जरूरत नहीं पड़ती। फोन, पेट्रोल, समय का ध्यान न रखते हुए लक्ष्य की तरफ अग्रसर। झटका तब लगता जब किए हुए काम के बदले में धन्यवाद भी दुर्लभ हो जाना, सहेलियाँ कहतीं 'नेकी कर सूली चढ़'।

यह एक स्नेहा की कहानी नहीं है, ऐसे अनेक लोग हैं जो अपने काम करवाने के लिए ऐसे ही किसी कमजोर कड़ी की तलाश में घूमते हैं। मुझे अच्छा नहीं लगता, लेकिन स्नेहा को इससे कोई शिकायत नहीं, वह थोड़े ही दिनों में सब भूलकर फिर से जग भलाई करने चल पड़ती। मेरे टोकने पर मुझे ही बताती कि शायद इन लोगों के संस्कार ही ऐसे हैं। उसकी बड़ी-बड़ी बातें मेरे सिर के ऊपर से गुजर जातीं। कहती, "पारिवारिक वातावरण, संस्कार और अनुकरण वृत्ति का मानव जीवन के निर्माण में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसलिए पारिवारिक वातावरण अच्छा होना चाहिए, बच्चा अपने आसपास जो

देखता है, उससे ही सीखता है। अनुकरण का अर्थ ही है जैसा देखना, वैसा ही करना।"

फिर कहती, "परिवार समाज का दर्पण है। अगर हमें पूरा समाज एक साथ देखना हो तो एक परिवार को देख लीजिए। जिस तरह हमें पूरे पेड़ को हरा-भरा देखना हो तो पानी उसकी जड़ में ही दिया जाता है। जड़ में पानी पहुँचने पर पेड़ अपने आप पुष्पित और पल्लवित होगा। संस्कारों का संबंध भी पेड़ की जड़ के समान है। जितने अच्छे संस्कार, उतना अच्छा परिवार, जितने अच्छे परिवार उतना अच्छा समाज। एक अच्छे परिवार का समाज में जब नाम होता है, तब सब उसके जैसे बनने का प्रयत्न करते हैं।"

एक दिन तो स्नेहा ने हद कर दी, मुझसे कहती है, "हमारी जितनी भी सामाजिक समस्याएँ हैं उनको हम पूरी तरह दूर कर सकते हैं, बस इसके लिए हमें छोटे-छोटे संकल्प करने होंगे जैसे पर्यावरण समस्या। मैंने कहा, "छोड़ो स्नेहा, यह समस्या सामाजिक कहाँ हुई? यह तो सरकारी काम है हम कहाँ पर्यावरण बिगाड़ते हैं?"

स्नेहा मुस्कराई और बोली, "ऐसी ही बात तो सभी करते हैं। पेड़ काटने का काम तो मनुष्य ही करता है न! अगर हमने छोटा-सा संकल्प किया कि मैं वृक्षों का वर्धन करूँगा, उसे काटूँगा नहीं तो हो गया न पर्यावरण समस्या का समाधान। वृक्ष मानवीय जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है।"

"मैं समझ गई स्नेहा की बात में दम है, इतने शांति से इतनी बड़ी समस्या का हल जो उसने बता दिया। उसकी मंद मुस्कान से मुझे पता चल गया कि जरूर यह कुछ और भी बताना चाहती है। मैंने कहा, "बोलो-बोलो।"

थोड़ी देर वह रुकी, फिर उसने कहा, "जब लोग पानी, बिजली का सही उपयोग नहीं करते हैं तब भी भीषण समस्या खड़ी होती है।" अब मुझसे नहीं रहा गया। मैंने कह दिया, "स्नेहा तुम्हारा दिमाग है कि भानूमति का पिटारा? क्या बोले जा रही हो? पानी, बिजली तुम्हें कहीं अगला चुनाव तो नहीं लड़ना?"

स्नेहा हँसते हुए बोली, "अरे नहीं! मैं तुम्हें समझाती हूँ कि कैसे हम बिजली का अपव्यय करते हैं? जब एक कमरे में हमारा अभी कोई काम नहीं

है, हम दूसरे कमरे में हैं तो उस समय तुम लाइट-पंखा बंद करती हो, कि अभी फिर आना ही तो है ऐसा सोच कर चली जाती हो।"

मैं मुस्कराई, "कहाँ बार-बार लाइट बंद करूँ। मैं तो शाम को पूरे घर की लाइट जलाकर ही रखती हूँ, क्योंकि लक्ष्मीजी जो आती हैं। स्नेहा ने कहा, "वाह! लक्ष्मीजी आती नहीं चली जाती है, लाइट के बिल के साथ। पर तुम समझोगी नहीं।" ऐसा कहकर वह थोड़ी देर चुप्पी साधती है।

मुझे लगता है कि स्नेहा ने 'बूँद-बूँद से घट भरता है' इस कहावत को सिद्ध करने का विचार किया है तभी तो छोटी-छोटी घर से आरंभ होने वाली समस्याओं के प्रति वह जागरूक है। कल ही उसने मुझे बताया कि उसके पड़ोस में रहनेवाले एक व्यक्ति की मृत्यु नशीले पदार्थों के कारण हो गई। नशीले पदार्थ शराब, गाँजा, चरस हेरोइन आदि अति घातक हैं, साथ ही भाँग, तंबाकू, गुटखा आदि भी कम खतरनाक नहीं है। इससे पैसे तो खर्च होते ही हैं किंतु स्वास्थ्य पर इसका विपरीत परिणाम होता है। घर में यदि किसी व्यक्ति को इसका सेवन करने का चस्का है तो साथ में रहने वाले अन्य लोगों को इसकी सजा भुगतनी पड़ती है, क्योंकि ऐसा व्यसनी व्यक्ति बहुत चिड़चिड़ा, क्रोधी और मूड़ी रहता है। समाज में शराबी व्यक्तियों की संख्या शायद कम हो पर खर्रा गुटखा खाने वाले अनगिनत हैं।

मैंने कहा, "स्नेहा तुम्हारी बात सच है पर इससे छुटकारा कैसे हो सकता है? क्या कोई ऐसी आदतें छोड़ सकता है?" तब उसने कहा, "धीरे-धीरे प्रयास करने पर इस आदत को कम करके बाद में पूरी तरह रोकने का प्रयत्न करना चाहिए।"

एक बार स्नेहा ने मुझे अखबार दिखाया, किसी ने आत्महत्या की थी, ऐसा समाचार था। तब उसने कहा कि 'आत्महत्या मुश्किलों का ऐसा हल, जो बिगाड़े अपनों का कल'। उसकी बात से इस बार मैं भी पूरी तरह सहमत थी। जाने वाला तो चला जाता है, उसके परिवार वालों का क्या? लोग सहानुभूति तो बहुत दिखाते हैं, लेकिन जीवन-यात्रा में उनकी सहानुभूति अधिक दिनों तक साथ नहीं देती। इस समस्या को दूर करने में पारिवारिक एकता और प्रेम, विश्वास ही संबल का काम कर सकता है। जैसे अपनी जान

वैसे ही दूसरे का भी जीवन, चाहे वो पशु-पक्षी ही क्यों न हो, हमें उनको मारने का शौक रखने का अधिकार नहीं है।

एक बार स्नेहा ने मुझे बताया कि विश्व शांति और निःशस्त्रीकरण के लिए जो प्रयास करता है, इस तरह का लेखन करता है, उन्हें नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। मैंने स्नेहा से कहा कि मुझे आत्मचरित्र और रेखाचित्र से संबंधित लेख पढ़ना अच्छा लगता है, इसलिए नोबल पुरस्कार और अल्फ्रेड नोबलजी से मैं प्रभावित हूँ। काश! सबको इस तरह शौक हो तो लड़ाई, झगड़ा, खून-खराबा होने से बचा जा सकता है। 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी'।"

निरंतर स्नेहा के सान्निध्य में रहने के कारण मैं उसकी तरह सोचने लगी हूँ ऐसा मुझे लगने लगा है। मैं विश्व शांति और निःशस्त्रीकरण के पक्ष में पूर्णतः हूँ। मेरे से तो मच्छर भी नहीं मारा जाता है, मैं उसे उड़ा देती हूँ। भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि काश! ये मच्छर, मक्खी आदि नहीं होते तो इन्हें मारने का प्रश्न ही नहीं होता। विश्व में यदि किसी के पास शस्त्र नहीं होते तो उसका प्रयोग करके होने वाली हानि से बचा जा सकता है।

स्नेहा ने मुझे बताया कि मूलतः मनुष्य शांतिप्रिय होता है। किसी से झगड़ा, मारपीट, खून-खराबा उसे पसंद नहीं होता, किंतु उस पर अत्याचार जब होता है तब सामना करने का सही तरीका अर्थात् आत्मविश्वास और हिम्मत का अभाव होने के कारण मनुष्य गलत रास्ते का अर्थात् आक्रमण का प्रयास करता है। ऐसी स्थिति में उसके संस्कार उसके काम आते हैं।

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति,
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
आस्वाद्यतोयाः प्रभवन्ति नद्यः
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः।।

अर्थात् जिनके पास अच्छे संस्कार अर्थात् गुण होते हैं वे अपनी बुद्धि से मार्ग निकालते हैं उससे घबराकर मार्ग नहीं बदलते, जबकि विपरीत स्थिति में गलत रास्ता अपनाकर दुःख का कारण बनते हैं। गुणी व्यक्ति के पास गुण पहुँचने पर उसका महत्त्व बढ़ता है जबकि निर्गुणी व्यक्ति के पास गुण भी

निर्गुण अथवा अवगुण हो जाता है। जैसे नदियों का पानी मीठा होता है किंतु सागर में मिलते ही मीठा पानी खारा हो जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने जैसे लोग तैयार करता है। 'नीच निचाई नहीं तजै, सज्जन हूँ के संग।'

अगर हमने संकल्प किया कि चाहे कुछ भी हो जाए, किसी प्रकार की हिंसात्मक एवं तोड़-फोड़मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा, तभी हम बच सकते हैं, अन्यथा कोयले की दलाली में हाथ काले।

स्नेहा का मैं क्या करूँ? ईश्वर ने जबरदस्त आत्मिक शक्ति उसको दी है। कितनी भी विकट स्थिति हो रास्ता ढूँढ़ ही लेती है और मुझे भी संभाल लेती है। उसकी एक विशेषता तो मैं भूल गई थी, अच्छा हुआ याद आ गई। उसने बताया कि संगठन, एकता में बड़ी शक्ति होती है। बहुत दिनों पहले उसने एक कहानी सुनाई थी 'सुनहरा मुर्गा, काला बंदर और लाल अमरूद का पेड़'। ये तीनों मित्र थे जब कोई बंदर को पकड़ने आता तो पेड़ के पके अमरूद गिराता, ताकि पकड़ने वाले फिसलकर गिर जाएँ, मुर्गा कुकुडू-कू करता हुआ धूल उड़ाता जिसके कारण बंदर को पकड़ने वाले भाग जाते, उसी प्रकार जब कोई मुर्गे को पकड़ने आता तो बंदर उनका जाला लेकर पेड़ की ऊपरी शाखा पर पहुँच जाता, जब कोई पेड़ काटने आता तो बंदर उनको डराता। तीनों की एकता के कारण वे सुरक्षित थे।

स्नेहा ने कहा, "कबूतरों की कहानी जिसमें जाले सहित एक साथ उड़ने पर कबूतर शिकारी की पहुँच से दूर हो जाते हैं, ऐसी एकता के कारण हम संकट से उबर जाते हैं। एक और एक ग्यारह होते हैं, जिसमें पारिवारिक एकता की बात ही कुछ और है, समाज में ऐसी एकता बहुत मायने रखती है, आवश्यक भी है।

इस प्रकार की एकता तो प्रायः होती है, ऊपरी तौर पर शत-प्रतिशत हो सकती है किंतु अंदरूनी सुधार की आवश्यकता है। प्रायः परिवार में बहुएँ कभी-कभी दूसरे शहर की दूसरे प्रदेश की हो सकती हैं। इससे क्या फर्क पड़ता है? विवाह से पहले आपको और सबको पता होता है कि आने वाली कन्या किस परिवार, किस प्रदेश की है, उसकी शैक्षणिक योग्यता क्या है? एक बार गृह प्रवेश के पश्चात् अगर लड़की सीधी-सादी है तो शुरू हो जाती है जिंदगी की चलने

वाली अग्नि-परीक्षा। परिवार के कुछ सदस्य काम करवाने के समय मीठा बोलते हैं, बाद में ताने मारने से बाज नहीं आते बोलते हैं, थर्ड क्लास एज्युकेशन है, सर्टिफिकेट झूठे हैं। उस प्रदेश की लड़कियाँ तो बड़ों को पूछती नहीं, उनको सम्मान नहीं करतीं जबकि उनकी अपनी बेटी परिवार में किसी को नहीं पूछती। बहू ने कितना भी अच्छा खाना बनाया हो तो उसकी प्रशंसा नहीं करती, बेटी द्वारा बने खाने में नमक-मिर्च भी सही मात्रा में नहीं डला होने पर उसकी तारीफ करती है। क्या इसको रोका नहीं जा सकता। 'जो तू बोए बबूल का तो आम कहाँ से होय'। प्रेम देंगे तो प्रेम मिलेगा।

पारिवारिक एकता सुदृढ़ करने के लिए इस प्रकार का दृष्टिकोण हमें बदलना होगा। बहू कोई वस्तु नहीं है जिसको बदला जा सके। हमें अपने नजरिए को बदलना होगा। इसी प्रकार रंग भेद के आधार पर भी कुछ सुधार अपेक्षित है। सभी रंग ईश्वर निर्मित हैं, उसमें ईश्वर ने मुख्य रूप से दो रंग इंसान के लिए बनाए हैं। गोरे रंग का सभी स्वागत करते हैं, किंतु काले से सभी चिढ़ते हैं जबकि काले रंग के या साँवले व्यक्ति अधिक कार्यदक्ष, अधिक मिलनसार और अधिक अच्छे होते हैं।

मुझे लगता है कि अब मुझे स्नेहा की हर बात को मान ही लेना चाहिए क्योंकि मैं चाहकर भी उसकी बात को काट नहीं सकती, बात सही हो तो भला उसे गलत कहने का सामर्थ्य किसमें होगा? उसने मुझे बताया कि प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक सहिष्णुता रखनी चाहिए, ऐसा संकल्प करना चाहिए। विविधता में एकता रखने वाला हमारा देश है। अलग-अलग धर्म, भाषा, रीति-रिवाज पर हमारी पहचान है। ऐसी स्थिति में संपूर्ण देश की एक ही भाषा या धर्म संभव नहीं। ऐसी स्थिति में यदि हम दूसरे की आलोचना करेंगे या खुद के जाति धर्म को श्रेष्ठ समझेंगे तो जीवन-भर लड़ने के अलावा कुछ हासिल नहीं होगा।

जिस प्रकार अलग-अलग फूलों से बनी माला अधिक सुंदर दिखाई देती है। अलग-अलग फूलों से बना पुष्पगुच्छ अधिक आकर्षक दिखाई देता है, वैसे ही हमें भी अलग धर्म, जाति, भाषा के प्रति समान आदर रखना होगा तभी सामाजिक समस्याएँ मुँह नहीं उठाएँगी।

दरअसल समाज में अधिकतर लोग शांतिप्रिय होते हैं। उपद्रवी लोग न के बराबर होते हैं और जैसे दूध में एक बूँद नींबू उसे खराब करने के लिए काफी होता है, उसी प्रकार कुछ ऐसे लोग धर्म, जाति की आड़ में सांप्रदायिक उत्तेजना फैलाते हैं। इसको रोकने के लिए हमें एक छोटा-सा संकल्प लेना होगा कि इस प्रकार के विवादों से हम दूर रहेंगे। 'फूट डालो और शासन करो' इस प्रकार की नीति में हम सहभागी नहीं होंगे। क्या ऐसा संभव नहीं?

मैंने स्नेहा को आश्वस्त करते हुए कहा, "आज से मैं बिलकुल ऐसा ही करूँगी। सांप्रदायिक उत्तेजना से जन-जीवन अस्त-व्यस्त होता है। ऐसी स्थिति अगर अधिक दिनों तक बनी रही तो उस प्रदेश विशेष की उन्नति पर उसका विपरीत परिणाम होता है।"

स्नेहा के अनुसार अपने व्यवहार और व्यवसाय में ईमानदारी रखना-अपने फायदे के लिए दूसरे को हानि नहीं पहुँचाने का संकल्प भी सामाजिक समस्या को दूर करने का स्थाई उपाय है। आज प्रत्येक व्यक्ति चाहे वो व्यापारी हो या अन्य कोई कार्य करता है, अपने-अपने स्वार्थ की सिद्धि में संलग्न है। स्वार्थ सिद्धि कोई बुरी बात नहीं है। स्वार्थ सिद्धि को बुरा तब कहा जाएगा, जब वो दूसरों का हक छीने या दूसरों को गलत पद्धति से पीछे छोड़े या दूसरों के स्वार्थों को विघटित करके अपना स्वार्थ साधे। समाज में इस बुराई के प्रति जब तक घृणा उत्पन्न नहीं होगी तब तक केवल ईमानदारी से कार्य करने का संकल्प इकतरफा होगा।

'चुनाव' के संबंध स्नेहा के विचारों ने मुझे झकझोर दिया। मुझे लगा काश! ऐसा संभव हो, क्यों लोग इन बुरी पद्धतियों का अवलंबन करते हैं। चुनाव जीतने के लिए जो आवश्यक है, चुनाव जिताने के लिए भी उतनी सावधानी और ईमानदारी की आवश्यकता है। जैसे जो वोट डालने जा रहा है वो कम-से-कम इतना संकल्प तो कर ही सकता है कि मैं किसी के बहकावे में आकर वोट नहीं दूँगा। किसी लालच या भय से वोट नहीं दूँगा या नकली नाम से, जाली नाम से मतदान नहीं करूँगा। ऐसा यदि वास्तव में हो जाए तो जीतकर आने वाला व्यक्ति अपना कार्यभार उचित रूप से निभाएगा जिससे समाज व्यवस्था पर इसका परिणाम अच्छा होगा।

स्नेहा एक अच्छी वक्ता भी थी। वह अपने श्रोताओं को प्रोत्साहित करती थी। जो भी उनको जानता था उनकी मानवता सादगी और विनम्रता को स्वीकार करता था। स्नेहा का मेहनत में विश्वास था। संकल्पों पर विश्वास था।

संकल्प भी बड़े-बड़े नहीं बल्कि छोटे-छोटे जैसे मैं परिश्रम, स्वावलंबन और आडंबर के बिना कार्य करूँगी। भेद-भाव नहीं करूँगी। नैतिक जीवन जीऊँगी।

स्नेहा बताते-बताते रुक गई, "मैंने पूछा क्या हुआ? बोल क्यों नहीं रही हो?" उसने कहा, "कुछ तबीयत ठीक नहीं लग रही है।" मैंने कहा, "तुमको कुछ नहीं होगा..." पर ऐसा हुआ नहीं। उसकी कही बातें मेरे दिमाग में गूँजती रहती हैं। उसने एक महत्त्वपूर्ण बात ऐसी कही जो आज भी पूरी तरह से सत्य है। अक्सर लोग अपनी गलतियों का, अपनी असफलताओं का दोष दूसरों पर लगा देते हैं। सफलता मिली है तो हमारे कारण। अगर असफलता मिली तो फिर दूसरा दोषी कैसे हो सकता है? कहने का तात्पर्य मनुष्य की आरोप लगाने वाली वृत्ति पर यदि लगाम लग जाए तो भी सामाजिक समस्याएँ दूर हो सकती हैं।

बस आवश्यकता है, फिर से एक संकल्प करने की, कि मैं कभी किसी पर आरोप नहीं लगाऊँगी। इस संबंध में मेरा ऐसा मानना है कि सफलता का श्रेय दूसरों को ही देना चाहिए। स्नेहा सद्‌गुणों का बीज थी। प्रेम का सागर। विश्वास की समानार्थी। अवगुण की विरुद्यार्थी, भटके पथिक की मार्गदर्शक। आशा का दीप...ऐसे ही लोगों से समाज उन्नत होता है और राष्ट्र मजबूत।

❍

आत्मा मानव शरीर को लेकर चलती है तो खिड़की पर बैठे स्वामी ने सावधान किया, "हे आत्मज! तू इतना बड़ा उपहार लेकर जा रहा है, पृथ्वी लोक पर लाखों प्राकृतिक बाधाएँ हैं, तू इस शरीर रूपी उपहार को कैसे सुरक्षित रखेगा?" इसको बचपन, जवानी एवं बुढ़ापा आदि कई अवस्थाओं से गुजरना पड़ेगा। स्वयं तेरे जैसी अन्य शक्तिशाली देहें भी नुकसान का कारण बनेंगी।

यात्रा

◈ **डॉ. नीना**
गवर्नमेंट गर्ल्स सी.से. स्कूल
भिवानी, हरियाणा

कवि ने शब्द चित्रों को आत्मा का रूप देकर दिव्य उड़ान भरी और पाया कि यात्रा के लिए कुछ जरूरी सामान तो लेना ही है, तभी वह आत्मा उस पंक्ति में खड़ी हो गई जहाँ लिखा था देह विभाग।

आत्मा ने देखा कि वहाँ हाथी, शेर, मानव सभी प्रकार की देह इस शर्त पर मिलती है कि देह विभाग के नियम तोड़ने पर पाप रूपी जुर्माना लगेगा जिसका निर्णय देहांत के पश्चात् होगा। कोई भी पंक्तिबद्ध यात्री अपनी इच्छा से किसी प्रकार की भी देह ले जा सकता है। इस तरह मानव की देह सौ वर्ष तक सुचारु रूप से काम कर सकती है।

आत्मा मानव शरीर को लेकर चलती है तो खिड़की पर बैठे स्वामी ने सावधान किया, "हे आत्मज! तू इतना बड़ा उपहार लेकर जा रहा है, पृथ्वी लोक पर लाखों प्राकृतिक बाधाएँ हैं, तू इस शरीर रूपी उपहार को कैसे सुरक्षित रखेगा?"

इसको बचपन, जवानी एवं बुढ़ापा आदि कई अवस्थाओं से गुजरना पड़ेगा। स्वयं तेरे जैसी अन्य शक्तिशाली देहें भी नुकसान का कारण बनेंगी।

इस शरीर के पीछे, 'मृत्यु' नाम की मोहर लगी है जिससे बचने का प्रकृति के पास कोई रास्ता नहीं होगा। जो वैद्य रास्ता निकालेगा वह भी मृत्यु का ग्रास बन जाएगा।

खिड़की पर बैठे देह-दाता की चेतावनी सुनकर आत्मा चिंतित होकर पूछती है, "हे स्वामी, मुझे इस विषय में कोई जानकारी नहीं है। क्योंकि

अनजान ही चल पड़े सफर के लिए।
दिशा निर्देश चाहिए नर के लिए।
सांसारिक शक्तियाँ बाधा बनेंगी।
उपाय नहीं देह मंदर के लिए।

यह सुन खिड़की पर बैठे देह स्वामी ने ठहाका मारकर कहा, "अरे वाह, तेरी आत्मा कविता भी जानती है। चल इस खुशी में मैं तुझे खोपड़ी रूपी उपहार देता हूँ, इससे तू कुछ भी कर सकता है। लेकिन इतना ध्यान रहे कि इसका अनुचित उपयोग न करना और इसकी बताई विधियों से इस अनमोल शरीर को लंबे समय तक बचाए रखना। देखो, यह खोपड़ी जादू की पिटारी जैसी है। इससे केवल ज्ञान ही आ सकता है। यह खोपड़ी तुझे सत्य, अहिंसा, त्याग, तप और त्रिरत्न का मार्ग बताएगी।"

"लेकिन महाराज, मुझे करना क्या है?"

"ऐ भोली आत्मा, तुझे अभी तक पता नहीं चला? खोपड़ी का उपहार लेकर तो पृथ्वी यात्री, रोज, सम्राट, वैज्ञानिक, ऋषि, मुनि व जीवनदाता, वैद्य बन गए। जा, तू अणुव्रत धारण कर। आगे का मार्ग अपने आप दिखाई देगा। देह दाता ने विस्तार से समझाया। "अरे वाह, मेरा तो इस तरफ ध्यान ही नहीं था। यह रास्ता तो चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने पहले से पृथ्वीवासियों को सुझाया था।" 'शाकाहार, शुद्ध विचार, अणुव्रत जीवन आधार'।

तब आत्मा पूर्ण जागृत होकर झूमने लगती है। झूमते-झूमते अणुव्रत का यह गीत गाती है

'हे धर्मवीर, निर्मल हो शरीर तू अणुव्रत लिए धार रे
जग बाधा से छुटकारा हो।

अणुव्रत का ऐसा मार्ग सागर सी गहराई।
शरीर साधना निर्मल वाणी अणुव्रत की बताई।
थोड़ा कष्ट भोग, ना पनपे रोग, हो मन के शुद्ध विचार रे।
जग पापों से निस्तारा हो।
जन्म लिया तो व्रत हजारों, मानव ने अपनाए।
अणुव्रत का चिंतन करके लाखों लाभ उठाए।
मन होगा साफ, फिर अपने आप दूर हो शरीर विका रे
ना बाधा कोई दुबारा हो।
अति छोड़ना नियम व्रत का, अणुव्रत का चिंतन गहरा।
दूर करेगी शरीर साधना, तामस मन का पहरा।
नीना के गीत, ले मन को जीत, मंत्र गूँजे नवकार रे।
धर्म से मोक्ष द्वारा हो। ❍

नई धाराएँ

◈ **अभिलाष राजपूत**
रोज पब्लिक स्कूल, सुल्याली
जिला : काँगड़ा, हिमाचल प्रदेश

जब महक दस दिन की छुट्टी लेकर आई तो दोनों बहनें अपने गाँव अपने माता-पिता के पास मिलने गईं। गाँव, घर, हर कोई उन दोनों बेटियों को सलाम कर रहा था। पिता अपने आँसुओं की धारा पता नहीं क्यों रोक नहीं सके। वह उनकी माता को ऐसी बेटियों की माता होने के लिए धन्यवाद कर रहे थे। आज उनके दिल में पुत्र न होने की कोई लालसा नहीं थी।

झरनों से बहता हुआ पानी, भिनी-भिनी फूलों की खुशबू को साथ लेकर चलती हुई मंद मस्त हवा, अनोखी सी मदहोश कर देने वाली प्राकृतिक छटाओं से घिरा हुआ गाँव, उदयपुर। जितना खूबसूरत प्राकृतिक सौंदर्य, उतने ही जिंदादिल और खूबसूरत इस गाँव में रहने वाले लोग। अपने भाईचारे और मिलनसारता से लबालब इस गाँव में सांस्कृतिक धरोहर और परंपराओं का समागम अद्‌भुत था।

यहाँ हर एक घर, ग्रामवासी, एक जागरूक नागरिक था। अपने अधिकारों के प्रति सजग और कर्तव्यपरायणता इन लोगों में देखने को मिलती थी। गाँव में 'मनरेगा' का संचालन, निर्मल जलधारा योजना इन सब सरकारी नीतियों के प्रति लोगों की सजगता और सतर्कता हैरान कर देने वाली थी। गाँव का हर बच्चा शिक्षा के महत्त्व से वाकिफ था। गाँव की औरतें अपने आर्थिक स्वावलंबन के प्रति आस्था व जोश का प्रमाण दे रही थी। गाँव की पंचायत भ्रष्टाचार मुक्त, भाई-भतीजावाद से हर एक अलग तरह की सोच को क्रियान्वित करने की मिसाल बनने को अग्रसर था। हैरान होता था कोई भी

यह जानकर कि इतनी भौगोलिक रुकावटों के बावजूद इस गाँव की इतनी ऊर्जा का संचालन हुआ कहाँ से होगा।

इसी गाँव के एक कोने में एक दो मंजिला घर था। यह गाँव के मास्टर जी का घर था। लोग उन्हें मास्टर जी ही बुलाते थे। वह पास के गाँव में प्राइमरी स्कूल के अध्यापक थे। उनकी दो बेटियाँ थीं निकिता और महक और पत्नी थी नानको। मास्टर जी एक ईमानदार और मृदुभाषी और काफी ऊर्जावान व्यक्ति थे। उनकी पत्नी एक धार्मिक विचारधारा वाली सीधी-साधी महिला थी। उन्हें अंदर ही अंदर पुत्र न होने का गम सालता रहता था और उनकी भावनाओं को चिंगारी देने का काम मास्टर जी की दोनों बेटियो करती। जोशीले अंदाज में बोलने या पहनाने में आधुनिकता के प्रति झुकान की झाँकी देखते ही झल्लाहट में बदल जाती थी।

महक और निकिता दोनों अपनी माँ की भावनाओं को खामोशी से सुनती, आहत होती पर चेहरे पर शिकन भी न आने देती। दोनों अपने पिता की बातों से बहुत प्रेरित थीं। माँ को जरा सी आँच भी न आने देती। महक बड़ी थी लेकिन उसके शौक खेल-कूद, शारीरिक दुर्बलता को चुनौती देना, जैसे पहाड़ों पर चढ़ना, गाय के लिए घास लेकर आना, नालों के तेज बहाव वाले पानी में युक्त लगाकर बहादुरी से पार करना। उसे अगर किसी चीज से जी चुराने की आदत थी, तो वह थी खाना बनाना। कई बार उसे अपनी गलतियों की सजा रसोई में काम करके देनी पड़ती थी और यह सजा सुनाई जाती थी उसकी माँ द्वारा।

निकिता छोटी बेटी, उसकी बातों में अलग-सा जोश था। वह घर का हर काम करती, रसोई में पूरी भागीदारी निभाती, उसकी सोच में समाज और देश के प्रति कुछ कर गुजरने का जज्बा था। वह एक अच्छी वक्ता थी और सामाजिक कार्यों में बढ़चढ़कर हिस्सा लेती थी। गाँव में जागरूकता रूपी रक्त का संचार करने वाली धमनियाँ सही माइने में यही दो बहनें थीं।

अपनी बारहवीं की पढ़ाई पूरी करने के बाद दोनों ने विजयपुर शहर के राजकीय महाविद्यालय में दाखिला ले लिया। एक नई दुनिया, नए दोस्त, नई चुनौतियाँ, नए अरमान और एक अलग तरह का जोश लिए हुए, इन्होंने

अपनी पहचान का दिव्य स्वरूप इस परिवेश में भी उजागर कर ही दिया। महक अपनी पसंद के अनुरूप खेलों में नाम करने लगी। एन.सी.सी. कैडेट के रूप में अपनी हर उस क्षमता को दक्षता की अग्नि में डालकर प्रकाशमान होने को अग्रसर थी।

निकिता ने अपनी उत्कृष्ट भाषा शैली व संगठन, निर्माण शैली के आधार पर अपनी एक पहचान बना ली। यहीं पर उसकी मुलाकात एक विजय नामक युवक से हुई, जोकि महाविद्यालय के एससीए में प्रधान के पद पर नियुक्त था। दोनों में प्रगाढ़ता बढ़ती गई। विजय एक अच्छी राजनीतिक विचारधारा और कूटनीतिक शैली अपनाने वाला महत्त्वकांक्षी युवक था। उसने निकिता की योग्यता की सही पहचान की। वह उसे आगे बढ़ने का पूरा अवसर प्रदान करता। शायद दोनों का सामाजिक विचारधारा के प्रति लगाव ही उनकी मित्रता का आधार था।

आखिरकार ग्रेजूएशन भी हो गई। महक ने सेना में जाने का फैसला किया। माँ ने दो दिन किसी से भी बात नहीं की। आखिरकार महक सीडी एस का इम्तिहान पास करते हुए ओटीए हैदराबाद के लिए रवाना हो गई। माँ खामोश ही रही, बस स्टॉप पर बस रुकवाने पर महक ने अपनी माँ के गालों पर दो बूँद आँसुओं की टपकती हुई देखी तो वह अपने आपको रोक न पाई और माँ से गले लग गई। शायद माँ मन-ही-मन उसकी कामयाबी पर खुश थी पर हमेशा उसे कचोटते रहने की वजह से अपने शब्दों की खुशी उजागर नहीं कर पा रही थी। जैसे कोई मुजरिम अपराध बोध से मौन खड़ा रहता है।

निकिता आगे बढ़ते हुए शहर के सामाजिक जागरूकता अभियानों में बढ़चढ़कर हिस्सा लेने लगी। उसके महिलाओं के प्रति जागरूकता अभियानों ने शहर और आसपास के गाँवों में पताका फैला दी। उसके लक्ष्य हर किसी के लिए स्पष्ट थे। वह केवल काम को अंजाम देने के लिए सजग रहती थी। उसके राजनीतिक महत्त्वों या परिणामों से उसे कुछ भी लेना-देना नहीं था।

समय का चक्र चलता रहा। आखिर विजय और निकिता ने शादी करने का फैसला कर लिया। विजय के घर पर इस प्रस्ताव पर किसी ने खुशी नहीं जताई।

कारण विजय एक रईस बाप का बेटा था। समाज में उसके परिवार की एक अलग पहचान थी, मगर इकलौते बेटे के आगे किसी ने कुछ न कहा।

वहीं मास्टर जी इतना अच्छा रिश्ता पाकर अपने आपको धन्य समझ रहे थे। शादी भी बिना दहेज के थी पर माँ बेचारी एक बार फिर बड़ी बेटी कुंवारी, छोटी को पता नहीं क्या आग लगी है शादी की। हाय राम! लोग क्या कहेंगे? कैसा निर्लज परिवार है मास्टर जी का। माँ फिर से चुन्नी बाँधे हुए दो तीन दिन का मौन धारण किए हुए रही और फिर भी यह सोचकर कि क्या पता महक के बारे में भी वह ऐसी ही सोच रखती थी। बाद में उन्हें अपनी गलती का अहसास हुआ। उस डर से कहीं इस बार फिर परिवार में उपहास का पात्र न बन जाऊँ, सोचकर सामान्य हो गई। लेकिन माँ तो माँ ही है बेटी की डोली उठी तो वह अपनी लाड़ली की बिदाई में भावनाओं के सैलाब को रोक न पाई।

निकिता को भी आज यह अहसास हो रहा था जैसे झटके से ही किसी ने कोई गहरा जुड़ाव तोड़ डाला और एक दर्द की कराह और अनजाना-सा डर शरीर में अनायास सी एक सिरहन भी छोड़ गया। बारातियों की भावनाओं का क्या कहना उनके अरमानों में तो पानी ही फिर चुका था। रिश्तेदारों की कानाफूसी, फीकी और बनावटी मुस्कराहटें शायद इसलिए ही परिवार के करीबी ही बारात में आए हुए थे। कुल मिलाकर 30-35 व्यक्ति, गाँव के माहौल में खुशी और लाड़ली बेटी के बिछोह की चर्चा थी। उसके कारनामों और उसके ससुराल वालों के कसीदों की प्रशंसा जहाँ-तहाँ पूरे इलाके व शहर में तो नामी-गिरामी हस्तियों में शुमार है। इस परिवार के लाड़ले विजय का सियासी गलियारों में भी नाम काफी इज्जत व प्रतिष्ठा अर्जित कर गया।

ससुराल में आते ही निकिता को अपने कहलाने वालों के बीच अंजान और अजनबी होने का अहसास होने लगा। वह चाहकर भी कुछ हिचकिचाहट से भरी हुई थी। उसकी शादी में महक, न आ सकी। उन्हीं दिनों उसकी 'पाटिंग आउट परेड' की तैयारियाँ चल रही थीं। शादी के दो महीने बाद निकिता के माता-पिता और विजय उसकी परेड देखने गए।

मास्टर पिता और माँ के द्वारा जब उसे स्टार लगाया गया तो वह पल उसके लिए खुशियों से भरा हुआ था। निकिता की आँखों में भी खुशी के आँसू आ गए। मास्टर पिता गौरवान्वित थे। एक छोटी-सी पहाड़ी गाँव की लड़की को सेवाधिकारियों के रूप में देखकर, माँ कुछ सोचकर मुस्करा दी। शायद अपनी उस दकियानूसी लड़कियों को कमजोर समझने वाली विचारधारा की वजह से।

समय चलता रहा, विजय ने अपनी राजनीतिक प्रतिष्ठा को बढ़ा लिया था। निकिता के सामाजिक योगदान ने इस दंपति को काफी प्रसिद्धि दिला दी और विजय एम.एल.ए. की टिकट प्राप्त करने में कामयाब हो गया। उसकी राजनीतिक गतिविधियों और निकिता का योगदान उसका कद इतना ऊँचा कर चुका था कि चुनावों में भारी मतों से उसकी विजय हुई।

सत्ता के गलियारों में प्रवेश करते ही विजय पर इसका नशा हावी होने लगा। वह जब भी स्वागत समारोह में शामिल होता लोग निकिता के प्रति ज्यादा आकर्षित होते। अक्सर उससे भी उसके बारे में पूछा जाता। उसकी सफलता में निकिता के योगदान का श्रेय अधिक समझा जाता।

आखिरकार स्वार्थ और अहंकार ने उद्दंडता का रूप लेना शुरू कर दिया। वह अपने आपको अपनी पत्नी द्वारा हारा महसूस करने लगा और उस सोच ने रिश्तों पर ऐसी चोट दे मारी कि सब कुछ बुरी तरह से तार-तार हो गया। निकिता चार माह से गर्भवती थी। अचानक उसके परिवार जन उस पर उपहास करने लगे। चलते-फिरते टोका-टोकी, और तो और छोटे-मोटे ऐसे काम करने को कहना जो कि नौकर किया करते थे।

अचानक आए इस बदलाव ने निकिता को अचरज में डाल दिया। मगर ठेस उसे तब लगी जब उस पर उसकी सास द्वारा दहेज का ताना दिया गया और उसका पति खामोशी से चाय की चुस्की लेता रहा। अपने माता-पिता पर किए गए आर्थिक प्रहार का उसने अपने स्वाभिमान के आधार पर जब जवाब दिया तो पति ने जोरदार थप्पड़ रसीद कर दिया, जैसे पता नहीं कितनी पुरानी हसरत पूरी हो गई।

लेकिन इस एक पल ने किसी के प्यार, विश्वास और आस्था पर घात लगाकर हमला कर दिया। बस यह सिला अब एक सिलसिला बन चुका था। उस पर बाहर जाने की पाबंदी लग गई। उसका मेडिकल चेकअप करवाया गया। गर्भ में बेटी यह जानकर भ्रूणहत्या की कोशिशें शुरू हो गईं। आखिर कब तक समाज में रिश्तों की आड़ में छिपे हुए भेड़िए रह सकते थे। वे सामने आ चुके थे। बस अब सामने पड़े शिकार को नोंच-नोंचकर खाने की तैयारी थी।

विजय का असली चेहरा सामने आ चुका था। चुनावों के परिणामों में उसे वह खुशी न मिलती थी जो अब अपनी पत्नी को अपनी तरह से समाज के सामने पेश करने में मिल रही थी। वह खुश था। एक औरत के स्वाभिमान को ध्वस्त कर। आखिरकार इस कहर ने उसके बदन को भीतर ही भीतर खोखला करना शुरू कर दिया।

निकिता अपने माता-पिता से अनायास ही आस लगा बैठी थी, मगर वह भी मजबूरी का पिटारा खोलकर सामने रख गए। बेटी को ही 'पति ही परमेश्वर' का पाठ पढ़ा दिया। माँ अपनी बातों को इस तरह से कहने लगी जैसे उसे आज वकालत करने का मौका मिला। पिता ने अपनी इज्जत की लाज बचाए रखने हेतु बेटी को समझाकर ससुराल भेज दिया। विजय इस सब के लिए तैयार न था और अब छोटी-छोटी बातों पर तिरस्कार व मारपीट आम होने लगी।

महक अपनी पहली दो महीने की छुट्टी लेकर घर आई और उसे पूरे मसले की जानकारी हुई। वह निकिता को घर वापस ले आई। उसने उसे मानसिक रूप से मजबूत बनाया। अपने माता-पिता को बुरे वक्त में साथ न देने पर कोसा व उसे लेकर वह छुट्टियाँ मनाने अपने साथ ले गई। हालात का सामना करने की हिम्मत महक ने अपनी बहन में भर दी। अपनी बहन को हर उस कानूनी महारत की जानकारी उपलब्ध करवाई जो विजय जैसे मौकापरस्त लोगों का सिर नीचा करवा सकती थी। आखिर छुट्टियाँ भी खत्म होने को आ गईं। महक ने निकिता को अपनी लड़ाई खुद लड़ने की सलाह दी।

निकिता ने वापस आकर सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर अपनी उपस्थिति

देनी शुरू कर दी और विजय से तलाक लेने की अर्जी अदालत में दायर कर दी। अचानक आए इस फेरबदल से विजय झुँझला उठा। राजनीतिक गलियारों से लेकर आम जनमानस में बातें होने लग पड़ीं। विजय एक घमंडी शख्श की पहचान बन चुका था। लोग भी बदलाव देखना चाहते थे।

निकिता के सामाजिक अभियानों ने ऐसी जागरूकता जगा दी थी कि लोग उसमें एक योग्य नेता के गुण देखने लगे। आखिरकार चुनाव नजदीक आ चुके थे। विजय को तो मानो साँप सूँघ गया हो। उसे समझ नहीं आ रहा था कि चुनाव के लिए टिकट से लेकर कुर्सी तक पहुँचने के लिए किसका सहारा ले। इसी दौरान निकिता को अदालत से तलाक भी मिल चुका था और उसने विजय की राजनीतिक पार्टी में जुड़े रहने पर सहमती भरी। उसने चुनाव लड़ने के लिए आयोजन घोषित करते हुए निकिता को टिकट दे दी गई। आखिर वह हार कैसे मान सकता था। अहंकार में डूबा हुआ व्यक्ति जब डूबता है तो उसे अपनी काबलियत पर जरूरत से ज्यादा ही विश्वास हो जाता है और यही उसके पतन का कारण बन जाता है। उसने अपने आपको आजाद उम्मीदवार घोषित कर दिया।

नतीजतन निकिता को चुनावों में भारी मात्रा में मत मिले तथा वह जीत गई। आखिरकार एक घमंडी और मौकापरस्त आदमी हार का मुँह देख चुका था और उसे अपनी गलतियों का अहसास हो गया था। मगर अब देर हो चुकी थी।

निकिता गम, ग्लानी, घृणा, उपहास के अंधकार को पार कर बाहर आ चुकी थी। उसकी बहन महक एक रौशनी बनकर उसके जीवन में आई और वह अपनी योग्यताओं के आधार पर एक नई पहचान बनाने में कामयाब रही।

जब महक दस दिन की छुट्टी लेकर आई तो दोनों बहनें अपने गाँव अपने माता-पिता के पास मिलने गईं। गाँव, घर, हर कोई उन दोनों बेटियों को सलाम कर रहा था। पिता अपने आँसुओं की धारा पता नहीं क्यों रोक नहीं सके। वह उनकी माता को ऐसी बेटियों की माता होने के लिए धन्यवाद कर रहे थे। आज उनके दिल में पुत्र न होने की कोई लालसा नहीं थी। ❍

रुक्कमी बोली, "फिर मुझसे शादी क्यों की, ये बच्चे पैदा क्यों किए, ये घर-बार अपने भाइयों से क्यों लिए? दो मिनट रुकिए, स्टूल से नीचे उतरिए।" किसना स्टूल से नीचे उतर गया। रुक्कमी अंदर से एक गिलास भरकर लाई और बोली, "ये लीजिए जहर पी लीजिए। कायर, डरपोक व्यक्ति को फाँसी से तकलीफ होगी। इसे पीने से ही प्राण पखेरू उड़ जाएँगे।"

फाँसी की रस्सी

◈ **विनोद नायक**
ज्ञान विकास माध्यमिक विद्यालय
973-जे, नंदनवन, नागपुर, महाराष्ट्र

किसना की पत्नी और तीनों बेटियाँ सो गई थीं। किसना ने बिना आवाज किए अपनी पत्नी रुक्कमी को जगाया और कहा, "एक रस्सी दालान के कीले से और एक अंदर के कमरे में बाँध दी है। अब चलो सब गहरी नींद में सो रहे हैं।"

रुक्कमी ने कहा, "तुम मुझसे अलग फाँसी लगाओगे?"

किसना ने धीमे स्वर में कहा, "तू कहे तो एक ही कमरे में..."

रुक्कमी ने सिर हिलाकर हामी भरी और उसी क्षण बोला, "लेकिन..."

किसना ने कहा, "क्या लेकिन?"

रुक्कमी ने ममता के हृदय से कहा, "इन तीन बेटियों को कौन देखेगा?"

किसना का हृदय पत्थर हो गया था। गुस्से से बोला, "कल बैंक वाले, बीज वाले और खाद-पानी वाले सबके सब जब मुझे घसीट-घसीटकर मारेंगे, तुझे तब समझ में आएगा।"

रुक्कमी, किसना के गुस्से के आगे शांत स्वर में बोली, "पर जी...पहले फाँसी पर आप लटकोगे?"

किसना बोला, "ठीक है।"

रुक्कमी का ममतामय हृदय एक बार फिर बोला, "सुनो जी, अनाथ हो जाएँगी बेटियाँ।"

किसना बोला, "बेटियाँ, बेटियाँ, बेटियाँ...अरे, ये जी लेंगी। इन्हें कोई कर्ज नहीं देना। इनके पास खेती है, घर है, दादा-दादी हैं। तू छोड़ इनकी चिंता।"

रुक्कमी ने कहा, "आपके पास भी तो खेती, घर और दादा-दादी हैं।"

किसना ने गुस्से से कहा, "न तू मरेगी और न ही मुझे मरने देगी। कल सुबह लोग मुझे जीते जी मारेंगे, तब तुझे समझ में आएगा।"

रुक्कमी ने गुस्से में कहा, "अरे, कैसे मारेंगे, कर्ज लिया है तो देंगे, आज नहीं तो कल।"

किसना ने कहा, "तेरी सरकार है कि आज नहीं तो कल देंगे और वो मानकर हँसते हुए चले जाएँगे। पिछली बार नहीं देखा टी.वी., मोटर साईकिल और बर्तन-भाँडे सब उठा ले गए थे।"

रुक्कमी बोली, "ससुर जी, गाँव के लोग और आप थे, अगर मैं निकलकर उनसे बात करती तो..."

किसना बोला, "तेरे गहने रखकर ही सामान वापस लाया था, पता है न तुझे।"

रुक्कमी ने कहा, "हाँ...लेकिन कर्ज के कारण फाँसी? भगवान इस साल नहीं तो अगले साल देगा।"

किसना बोला, "यही तो रोना है, पिछले साल ओलावृष्टि से फसल नष्ट हो गई, इस साल सूखा पड़ गया और तीन साल पहले अतिवृष्टि से हाहाकार मच गया था। एक दाना अनाज का पैदा नहीं हुआ।"

रुक्कमी बोली, "ये सब किसान के साथ हुआ। तुम्हें फाँसी लगाना है तो लगाओ, मैं फाँसी नहीं लगाऊँगी।"

किसना बोला, "ठीक है, मैं ही अकेला फाँसी लगा लेता हूँ।" तैयार फाँसी में अपना सिर डाल लेता है। रुक्कमी नजदीक पहुँचकर बोली, "तुम सच में

फाँसी लगा रहे हो?" किसना गुस्से में बोला, "नहीं, मजाक में। अब इन औरतों को कौन समझाए?" वह रस्सी और स्टूल ठीक करने लगा।

रुक्कमी ने कहा, "औरतें तो मैं समझा लेती, लेकिन सुना है आजादी के पहले भी किसान दाने-दाने को मोहताज थे, लेकिन उन्होंने तो फाँसी नहीं लगाई और तुम भी आठ भाई-बहन हो, फिर भी तुम्हारे पिताजी ने तो फाँसी नहीं लगाई, पिताजी ही नहीं दादाजी, परदादाजी तक ने भी...फिर तुम क्या डरपोक और कायर हो? शेर का बच्चा, गीदड़ कैसे हो सकता है?"

किसना ने गुस्से में कहा, "हाँ-हाँ, मैं शेर का बच्चा नहीं गीदड़ का बच्चा हूँ, गीदड़ का..."

रुक्कमी बोली, "फिर मुझसे शादी क्यों की, ये बच्चे पैदा क्यों किए, ये घर-बार अपने भाइयों से क्यों लिए? दो मिनट रुकिए, स्टूल से नीचे उतरिए।" किसना स्टूल से नीचे उतर गया। रुक्कमी अंदर से एक गिलास भरकर लाई और बोली, "ये लीजिए जहर पी लीजिए। कायर, डरपोक व्यक्ति को फाँसी से तकलीफ होगी। इसे पीने से ही प्राणप खेरू उड़ जाएँगे। ये लो एक घूँट पी लो। बैंक वालों के नाम, खाद-बीज वालों के नाम और हम सबके नाम से छुटकारा मिल जाएगा।"

किसना शांत स्वर में बोला, "मैं-मैं जहर नहीं पीऊँगा।"

रुक्कमी बोली, "तो फाँसी लगाओगे?" किसना बोला, "नहीं।"

रुक्कमी चिल्लाकर बोली, "तो फिर क्या करोगे?"

किसना बोला, "रुक्कमी तूने आज मुझे जगा दिया। हरि चाचा से सफल किसानी के गुण सीखूँगा। तभी तीनों बेटियाँ जाग गईं और फाँसी की रस्सी निकालने लगीं। ❍

असर

◈ **अमित कुमार**
आंध्र शिक्षण संस्थान
बी-3, जनकपुरी, दिल्ली

कई विद्यालय जो अपने आर्थिक-शैक्षिक संसाधनों में पिछड़े थे व जहाँ विद्यार्थी अपनी बुरी संगत तथा निर्धनता के कारण आगे नहीं बढ़ पा रहे थे, अब अणुव्रत की संकल्प शक्ति से उन्होंने भी अपनी बुरी संगत, नशा, अभद्रता व अनुशासनहीनता, झूठ बोलना इत्यादि को नियंत्रित करना शुरू कर दिया।

अंशुमन बचपन से ही विचलित, अपनी समस्याओं में व्यथित व शंका-समाधान के उलझे जाल में खोया रहता था। कई बार कक्षा में पढ़ते-लिखते हुए उसका ध्यान भटक जाता व जब कक्षा के अध्यापक- अध्यापिका उससे पढ़ाए गए पाठ के विषय में कुछ पूछते तो वह घबरा जाता तथा बगलें झाँकने लगता।

शिक्षकों को इस बात का कतई शक नहीं था कि अंशुमान में एक बेहतर विद्यार्थी बनने के सारे गुण हैं, फिर भी वे क्यों अपनी योग्यता का पूर्ण प्रयोग नहीं कर पाता, यह सचमुच मानो एक पहेली के समान था।

एक दिन अंशुमन के विद्यालय में 'अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास' के तत्त्वावधान में योग शिक्षा व संकल्प शक्ति विषय को लेकर विशेष कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। अंशुमन ने भी अपने कक्षा अध्यापक के कहने पर उसमें सक्रिय रूप से हिस्सा लिया तथा वहाँ सीखी गई सभी शिक्षा विधियों व क्रियाओं को अपने जीवन में लागू करने का प्रयास शुरू कर दिया।

हालाँकि शुरुआत में अंशुमन अपने व्यक्तित्व व व्यवहार में आए परिवर्तनों को लेकर आशंकित था पर शीघ्र ही अपने सहपाठियों व अध्यापकों से मिलने

वाली प्रशंसा व प्रोत्साहन ने उसे अत्यंत आत्मविश्वास व उल्लास से भर दिया। अब अंशुमन ने अणुव्रत रूपी जीवन व उसकी महान संकल्प शक्ति का प्रयोग सामाजिक, शारीरिक व मानसिक समस्याओं व चुनौतियों का समाधान करने के लिए निश्चय कर लिया। कल का डरा-सहमा व चुनौतियों को देख भागने वाला अंशुमन आज अपनी बुद्धि, कार्यकुशलता, व्यवहार व दृढ़-संकल्प व साहस के लिए जाना जाने लगा।

अंशुमन ने अणुव्रत के सिद्धांतों व छोटे-छोटे संकल्पों के माध्यम से विद्यार्थियों में सुधार लाने हेतु सफलतापूर्वक साफ-सफाई, अनुशासन, भद्र भाषा का प्रयोग, पर्यावरण, सुरक्षा इत्यादि अनेक अभियान चलाए जो शीघ्र ही बेहतर परिणामों के रूप में अपना असर दिखाने लगे। अंशुमन के साथ जुड़े विद्यार्थियों ने अब समाज की अनेक कुरीतियों जैसे दहेज प्रथा, जाति प्रथा, ऊँच-नीच, लिंग भेद के खिलाफ अपनी आवाज को बुलंद किया व देश को आगे ले जाने के लिए अनेकता में एकता, न्याय, मानवता व अवसरों की समानता व आवश्यकता आदि विषयों पर समाज को जागृत करने का कार्य करना शुरू कर दिया।

विद्यालय व उससे जुड़े अनेक कार्यक्रमों की रूपरेखा जब बेहतर शैक्षिक व गैर-शैक्षिक गतिविधियों, जैसे नाटक प्रदर्शन, कविता, झाँकी, वाद-विवाद, चर्चा-विचर्चा व लेखों के माध्यम से शिक्षा के जिला अधिकारी तक पहुँच गई तो उन्हें भी खुलकर विद्यालय व उसके विद्यार्थियों के प्रयासों की सराहना करनी पड़ी।

जिला शिक्षा अधिकारी ने जब विद्यालय की प्रधानाचार्य से विद्यालय के काया-पलट प्रयासों व बदलावों का राज पूछा तो उन्होंने इसके पीछे अंशुमन व उसके मित्रों द्वारा धारण किए हुए अणुव्रत की संकल्प शक्ति को विद्यालय द्वारा लागू करने को कारण बताया। जिला शिक्षा अधिकारी ने उसी समय शीघ्रतापूर्वक अन्य विद्यालयों में भी अणुव्रत रूपी शिक्षा गतिविधियों व कार्यशालाओं को आयोजित करने का संकल्प ले लिया। शीघ्र ही अन्य विद्यालयों में भी इसका सकारात्मक परिणाम दिखने लगा।

कई विद्यालय जो अपने आर्थिक-शैक्षिक संसाधनों में पिछड़े थे व जहाँ विद्यार्थी अपनी बुरी संगत तथा निर्धनता के कारण आगे नहीं बढ़ पा रहे थे, अब अणुव्रत की संकल्प शक्ति से उन्होंने भी अपनी बुरी संगत, नशा, अभद्रता व अनुशासनहीनता, झूठ बोलना इत्यादि को नियंत्रित करना शुरू कर दिया।

अब यहाँ के विद्यार्थियों को भी निराशा, शोक, चिंता, तनाव, चुनौतियाँ तनिक परेशान न करतीं, क्योंकि अब इन्होंने भी अणुव्रतों के द्वारा हर कार्य को सफलता से निपटा व सर्वांगीण विकास के हर पहलू को अपनाना शुरू कर दिया था। अब ये विद्यार्थी पढ़ाई-लिखाई, खेल-कूद, अनुशासन, भद्रता आदि सभी में अच्छा प्रदर्शन कर समाज की उन्नति में भागीदार बन सफल जो हो चुके थे।

परिवर्तन की बयार समाज में पुनः बड़े-बुजुर्गों का सम्मान, अपनी संस्कृति से प्यार, नारी इच्छा व शिक्षा का सम्मान, छोटों को प्यार व धर्म, जात-पात, अमीरी-गरीबी की ढहती दीवारों व मिटती लकीरों के रूप में सामने आई। समाज का नया उन्मुख होता चेहरा, टीवी व अखबारों, पत्रिकाओं में परिवर्तन की क्रांति के रूप में दिखने लगा। सामाजिक बदलाव आर्थिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक परिवेश में भी देश-विदेश रूपी चर्चा के रूप में दिखने लगे।

अब कोई चुनौती समस्या न होकर संपूर्ण मानवता के लिए आपसी सहयोग करने का एक अवसर समान होती। समाज के सभी वर्ग आगे बढ़कर एक खुशनुमा वातावरण बनाने के लिए बेहद सक्रिय होते। अब वैश्विक संकट यथा वातावरण, प्रदूषण, पर्यावरण, पेड़-पौधे, जैव-विविधता, संसाधनों का संकट, हवा, पानी, जीवन इत्यादि समस्याएँ न रहीं। सभी का जीवन सुखी व समृद्ध होने लगा।

सचमुच किसने सोचा था कि छोटे-छोटे संकल्प रूपी अणुव्रत से स्वयं को बदलने वाला अंशुमन आज पूरे विश्व को ही बदलाव की ओर प्रेरित करेगा व मानव को सही मायने में उसकी क्षमताओं के पूर्ण प्रयोग को प्रोत्साहित करेगा।

हमें नहीं भूलना चाहिए कि हमारे देश-विदेश के इतिहास में आज तक जितने भी महापुरुष हुए, चाहे वो महान भारत से चंद्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक, समुद्रगुप्त, बादशाह अकबर, महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, रानी झाँसी लक्ष्मीबाई, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, बी.आर. अम्बेडकर, सुभाष चंद्र बोस, लाल-बाल-पाल हो या विदेश से महान सिकंदर, मैकयावली, मैडम क्यूरी, मदर टेरेसा, मार्टिन लूथर किंग व अब्राह्म लिंकन, इन सभी ने अपना जीवन अत्यंत सामान्य व्यक्तित्वों के रूप में शुरू किया, किंतु अपने दृढ़-संकल्पों से ये सभी महान उपलब्धियाँ पाने में सफल रहे। क्या आप जानते हैं कि इन सबके विशाल दृढ़-संकल्पों की शुरुआत कहाँ से हुई, इसी अणुव्रत की संकल्प शक्ति, स्वस्थ चिंतन व उत्साहित प्रयासों के द्वारा। ❍

वह कार ड्राइवर

◈ **डॉ. उर्मिला विश्वकर्मा**
दिल्ली पब्लिक स्कूल
निकट कोबा सर्कल
गांधीनगर, गुजरात

विधि की वक्रता तो देखिए! चार जनवरी को पापा का जन्मदिन और उसी दिन गिरीश के जीवन का अंतिम दिन। कैसा संयोग कहें या कुसंयोग। यह दिन हम कभी नहीं भूलते। हमारा और गिरीश का पिछले जन्मों का कोई ऋणानुबंध अवश्य रहा होगा। इस जन्म में पूरा करने के लिए ही जैसे वह धरती पर आया था। दरवाजे के बाहर एसेंट गाड़ी (दूसरी) अब भी खड़ी है, पर बेबस, लाचार, अनाथ।

विषम परिस्थितियों से जूझते-जूझते व्यक्ति के सपने कब छूमंतर हो जाते हैं, पता ही नहीं चलता, बावजूद इसके मेरे पिताजी का एक सपना था कार खरीदना। लोग मजाक उड़ाते। समय ने करवट ली, घर के सामने मारुति झेन आकर खड़ी हो गई। लोग अचंभित। अब हमारे सामने सबसे बड़ा सवाल था गाड़ी चलाएगा कौन? अतः खोज-बीन के बाद एक चालक रखा गया। नाम था अनिल।

एक दिन किसी कारणवश वह नहीं आया तो फिर प्रश्न खड़ा हुआ कि पापा कारखाने कैसे जाएँ। उस दिन हमारे कारखाने से एक लड़का आया, जो वहीं काम करता था। वही पापा को लेने और छोड़ने आया। इसके बाद तो जब भी अनिल नहीं आता गिरीश ही आता। देखते-ही-देखते गिरीश कब पापा का कार ड्राइवर बन गया, पता ही नहीं चला। अब अनिल का स्थान गिरीश ने ले लिया। घर-बाहर सब जगह गिरीश छा गया। कोई भी काम वह बड़ी तन्मयता से करता। किसी को कहीं जाना हो, तो वह न दिन देखता न रात, हाजिर हो जाता। मुझे याद नहीं कि किसी काम को करने के लिए उसने मना किया हो। देखते-ही-देखते वह पापा का दाहिना हाथ बन गया।

हमारे इलाके में लोग मुझे उर्मिला के नाम से कम, दीदी के नाम से ज्यादा जानते हैं। मैं आबाल-वृद्ध सबकी दीदी। मेरी बहन का बेटा मुझे 'मौसी दीदी' कहकर ही बुलाता है। गिरीश भी मुझे दीदी कहकर ही बुलाता। गज़ब का अपनापन था उसमें। हमें कभी एहसास ही नहीं होता कि हमारे दो ही भाई हैं। हम राखियाँ भी तीन-तीन ही खरीदते। जो काम मुझसे नहीं हो पाता, वह सारा काम गिरीश के हिस्से में चला जाता। उस काम को वह बड़ी खुशी-खुशी करता, जैसे उसे कोई खजाना मिल गया हो। टेलीफोन बिल भरना हो, स्कूटी ठीक करवाना हो, बैंक का काम हो, या फिर सरनेम बदलवाना हो...इत्यादि सभी काम वह करता।

माँ यदि गोरखपुर गईं हों तो गिरीश का काम दुगुना हो जाता। पापा के लिए पानी गरम करता, कपड़े प्रेस करता, जूता पॉलिश करता, चाय बनाता। तब वह माँ-मय बन जाता। घर तो जैसे वह केवल सोने के लिए जाता। सुबह सात बजे से लेकर रात के नौ-दस बजे तक पापा के साथ ही रहता। वह पिताजी के इतने करीब हो गया था कि दोनों भाइयों को उससे ईर्ष्या होने लगी। मेरे छोटे भाई की पत्नी यानी मेरी भाभी से कभी-कभी वह मजाक करता तो भाई को बिलकुल भी पसंद नहीं आता। भाई कुछ भी उसे अनाप-शनाप बोल देता तब भी गिरीश कुछ नहीं बोलता। बस अपनी मर्यादा में आ जाता। फिर तो मजाल है कि वह घर के अंदर आता। बाहर-ही-बाहर रहता। गाड़ी साफ करता, गाने सुनता और पापा के टिफिन का इंतजार करता। छुट्टी के दिन जब मैं घर पर रहती तो उसके इस क्रियाकलाप को देखकर पूछ बैठती : 'गिरीश क्या हुआ?' क्यों घर के अंदर नहीं आता? तब वह कहता 'बस एमज'। फिर भाभी बताती कि जब से तुम्हारे भाई ने उसे डाँटा है, वह घर में नहीं आता। फिर मैं उसे मनाती। कुछ ही देर बाद वह फिर पहले की भाँति हो जाता। जैसे कुछ हुआ ही न हो।

गिरीश मूलतः गुजरात के धोलका के पास किसी गाँव का रहने वाला था। अपने माता-पिता तथा भाई-बहन के साथ वह कणभा गाँव में (अहमदाबाद) रहता था। दिखने में आकर्षक व्यक्तित्व, गठीला बदन, रंग साँवला, तीखे

नाक-नक्स। हृस्ट-पुष्ट शरीर। जाति का प्रजापति यानी कुम्हार तो कतई नहीं लगता। बाहर के लोग तो यही समझते कि यह शर्माजी का ही बेटा है। वह भी मेरे पापा को पापा कहकर ही बुलाता। एक बार की बात है। मेरे विद्यालय में 26 जनवरी का उत्सव मनाया जा रहा था। पापा के साथ गिरीश भी आया। मेरी कुलिग लवीना ने पूछा : 'यार ये तेरे पापा के साथ कौन बैठा है? मैंने कहा हमारा कार ड्राइवर। उसने तुरंत कहा 'यार तेरा ड्राइवर कितना स्मार्ट है।' वह बहुत सुंदर तो नहीं, हाँ एक चुंबकीय आकर्षण था उसमें, ऊपर से गज़ब का आत्मविश्वास उसके साँवले चेहरे को दीप्त कर देता।

गिरीश की एक खूबी यह भी थी कि वह कार चलाने में माहिर था। जैसे उसने इसमें महारत हासिल की हो। बड़ौदा-एक्सप्रेस हाइवे पर आने के बाद तो वह हवाओं से बातें करने लगता। क्या गाड़ी चलाता। मजाल है कोई माई का लाल हमारी कार को ओवर टेक कर दे। एक-के-बाद एक गाड़ी को ओवरटेक करते हुए द्रूतगति से कार चलाता। हम भयभीत हो जाते। मैं कहती, "गिरीश गाड़ी धीरे चलाओ।" तब लगता जैसे वह हमारी बात सुनता ही न हो। तेज गति से कार चलाते हुए भी कार पर उसका जबरदस्त नियंत्रण रहता।

एक बार तो हम बाल-बाल ही बचे। पावागढ़ जाते हुए एक घुमावदार मोड़ पर ट्रक और हमारी कार का एक्सीडेंट होते-होते बचा। उसे हमारी कार से बहुत लगाव था। हम दर्शन करने पावागढ़ की ओर बढ़ते तो वह कार की रखवाली के लिए वहीं रुकता। फिर देखता कि हम सब नीचे उतर रहे हैं, तो वह चढ़ना प्रारंभ करता और कुछ ही देर में दर्शन करके नीचे आ जाता।

कुछ वर्षों बाद मेरी भी शादी हो गई। मेरा ससुराल कुछ ही अंतराल पर था। गिरीश कभी-कभी मुझसे मिलने आया करता। कंपनी के किसी पेपर पर मेरे हस्ताक्षर करवाना होता तो गिरीश लेकर आता। मैंने गौर किया था, वह कुछ उदास रहने लगा था। शादी के बाद मेरी पहली गर्मी की छुट्टियाँ आईं। अपने पति के साथ मध्यप्रदेश, उनके गाँव गई।

नया साल बस आने ही वाला था। एक दिन दोपहर के समय गिरीश का फोन आया, "केम छो दीदी?", "मजा माँ ने?" मैंने कहा, "हाँ मैं ठीक हूँ।"

फिर उसने नए वर्ष की शुभकामनाएँ दीं। मुझे और मेरे पति को अपने घर आने का निमंत्रण दिया। मैंने भी कहा, "हाँ गिरीश, हम दोनों जरूर साथ में तुम्हारे घर पर आएँगे।" फिर दूसरे दिन गिरीश का एक संदेश आया

न आना उसे लेकर मेरे जनाजे में,
मेरी मौहब्बत की तौहीन होगी।
मैं चार लोगों के कंधे पर होऊँगा,
और मेरी जान पैदल होगी।

संदेश पढ़कर थोड़ा क्या बड़ा अजीब-सा लगा। मन किया कि फोन करके खूब डाँटू। फिर सोचा कि कल हम अहमदाबाद के लिए रवाना हो रहे हैं, तो वहाँ पहुँचने पर जब भी मिलेगा उसे खूब डाँटूँगी। बात वहीं पर रह गई।

4 जनवरी, सन् 2010 की बात है। छुट्टियों के बाद का पहला दिन। मैं स्कूल बस से अपने स्कूल जा रही थी। अभी हमारी बस नरोड़ा पहुँची ही थी कि भाई का फोन आया। "हाँ पप्पू बोल।" मैंने फोन रीसिव करते हुए कहा। उसने कहा, "वह अपना गिरीश है न...!" "हाँ, क्या हुआ उसे?" मैंने बात काटते हुए कहा। "कहीं एक्सीडेंट तो नहीं किया ना उसने।" मन में आया कि गाड़ी तेज चलाता है तो कहीं भिड़ा दिया होगा।

"नहीं, यह बात नहीं।" "तो क्या बात है।" उसने कहा, "वो अपना गिरीश है न! वो मर गया।"

"क्या बकवास करता है, चल झूठा कहीं का।" मैंने बात को मजाक में लेते हुए कहा। भाई से पता चला कि वह सच में मर गया। जिस शाम हम अहमदाबाद में आए थे मध्यप्रदेश से, उसी रात को उसके सीने में तेज दर्द उठा था। शायद उसे हार्ट अटैक आया होगा।

फिर क्या था! मेरी आँखों से गंगा-यमुना बहने लगी। सुबह-सुबह मेरी स्कूटी स्टार्ट नहीं हो रही थी। मेरे पति सी.टी.एम. तक मुझे पैदल ही छोड़ने आए। मैंने उनसे कहा भी कि आज फोन करके गिरीश को बुलाऊँगी, वह स्कूटी ले जाकर ठीक करवा लाएगा। पर मुझे क्या पता वह तो रात को इस दुनिया से चल बसा। मन हुआ कि बस में से उतर कर घर चली जाऊँ पर स्कूल जाना भी जरूरी था, सो स्कूल तो गई, पर मन कहीं और ही था।

उस रात मैंने एक सपना देखा। गिरीश की बड़ी इच्छा थी गोरखपुर जाने की। कोई अवसर पड़ने पर पापा भी उसे ले जाना चाहते थे। सपने में मैंने देखा, वह कार चला रहा है, मैं पीछे बैठी हूँ। वह चुपचाप बिना किसी से बात किए गाड़ी चला रहा है। गाँव की कच्ची सड़क पर कार चलाते हुए मेवालाल चाचा के यहाँ (मेरे बड़े चाचा जी) गाड़ी खड़ी कर दी।

उस स्वप्न में मैंने देखा उसके चेहरे पर एक अजीब-सा भाव था। चेहरा पीला पड़ गया था। उसका वह उदास और विषादग्रस्त चेहरा कभी नहीं भूलती।

'बेसणा' के दिन मैं अपने पति के साथ गिरीश के घर गई। सदा से चंचल, हँसमुख, शरारती, मस्तीखोर, कर्मठ गिरीश को फोटोफ्रेम में देखकर रूह काँप गई। मन मानने को तैयार नहीं कि वह इस दुनिया में नहीं रहा। महीनों तक हम भूल नहीं पाए। उस रात जब पापा ने गिरीश के मरने की खबर सुनी तो वातानुकूलित कमरे में रहते हुए भी पसीने से भीग गए। पापा भी खूब रोए जैसे उन्होंने अपना बेटा खोया हो और हमने अपना भाई। महज 25 साल की उम्र में अविवाहित गिरीश हम सबको छोड़कर चला गया।

विधि की वक्रता तो देखिए! चार जनवरी को पापा का जन्मदिन और उसी दिन गिरीश के जीवन का अंतिम दिन। कैसा संयोग कहें या कुसंयोग। यह दिन हम कभी नहीं भूलते। हमारा और गिरीश का पिछले जन्मों का कोई ऋणानुबंध अवश्य रहा होगा। इस जन्म में पूरा करने के लिए ही जैसे वह धरती पर आया था। दरवाजे के बाहर एसेंट गाड़ी (दूसरी) अब भी खड़ी है, पर बेबस, लाचार, अनाथ।

आते-जाते महीनों तक हमें लगता कि गिरीश उसमें बैठा है। लगता उसकी आत्मा कार के आसपास भटक रही है। उस कार को बेच दिया गया है। उसकी जगह नई कार खरीद ली गई है। पर क्या भौतिक वस्तुएँ बेचकर किसी की यादों को भुलाया जा सकता है? नहीं। वह आज भी हम सबके दिलों में जिंदा है। मध्य प्रदेश से आने के बाद फिर गिरीश से मिलना न हो सका। ईश्वर उसकी आत्मा को शांति दे। ❍

मिसाल

◈ सलिल श्रीवास्तव
एमिटी इंटरनेशनल स्कूल
वसुंधरा, सेक्टर-1
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

हर इक बढ़ते कदम से मंदिर के गायन की ध्वनि बढ़ती हुई सी प्रतीत हो रही थी। भीड़ को चीरते हुए दोनों मंदिर की सीढ़ियों तक पहुँचे, पर अचानक ठिठक गए, कहीं बुत परस्ती में अपने धर्म से बाहर न कर दिए जाएँ...कहीं मुल्ला-मौलवी हमें कोई दंड न दे दें...हम काफिर तो न हो जाएँगे? इस पल की झिझक ने रोका तो जरूर, पर अब क्या...आज तो कुछ अनहोनी ही होनी थी...

शाम के धुँधलके में खेतों की पगडंडियों के बीच दिल्ली के रईस जमींदार अजीमुल्ला का काफिला चला आ रहा था...पौ फटते ही दिल्ली से निकला ये रईस अपने कारिंदों को तेज चलने को कह रहा था, पर सुबह से निकले सभी नौकर और सिपाही बहुत कोशिश के बावजूद कदम नहीं बढ़ा पा रहे थे।

सभी सोच रहे थे कि कहीं विश्राम किया जाए, सभी की हालत देख अजीमुल्ला ने अपनी बेगम रकीबन बी से पूछा, "क्या अब सुबह आगे बढ़ें? क्यों न यहीं आसपास पड़ाव डाल दिया जाए?" रकीबन बी को तो जैसे मुँह की मुराद मिल गई थी, काफी समय से वह भी बैठी-बैठी डोली में थक गई थी, उसने तुरंत सहमति दे दी।

अभी तक वह अपने शौहर से कुछ भी कह पाने में झिझक महसूस कर रही थी। अजीमुल्ला के संकेत मिलते ही, काफिला रुक गया और सभी ने आसपास नजर दौड़ाई कि किस जगह रात्रि विश्राम के लिए खेमें लगाए जाएँ।

तभी दूर कहीं से घंटे-घड़ियालों के सम्वेत स्वर सुनाई पड़ने लगे। एक सेवक जो उस रास्ते से कई बार गुजर चुका था, उसके मुँह से बरबस निकल

गया, "ओह शायद बिहारी जी की आरती शुरू हो रही है।" रकीबन बी ने उसे पास बुलाया, "क्या, हो रहा है, क्या तुम जानते हो?" रकीबन बी की डोली के कहार सेवक ने कहा, "हाँ बेगम साहिबा, यहाँ पास ही एक मंदिर है।"

"अच्छा, तो फिर इतना शोर क्यों हो रहा है?"

"बेगम साहिबा, संध्या काल की आरती हो रही है।"

"किसकी?"

"बिहारी जी की।"

"ये कौन हैं?"

"बेगम साहिबा, ये छोटा खुदा है...?"

"अच्छा..." रकीबन बी कुछ सोच में पड़ गई, "अभी तक तो सुना था एक खुदा है...और वो 'मक्का-मदीना' में रहते हैं, ये छोटा खुदा कौन है...।" पर्दानशीं कभी भी हवेली से बाहर निकली ही नहीं...सिर्फ मुल्ला-मौलवियों से सुना था, खुदा-मक्का में है, ये छोटा खुदा कौन है। जिज्ञासा भरी निगाहों से अपने शौहर की तरफ देखने लगी।

अजीमुल्ला ने सभी से मंदिर के निकट पड़ाव डालने को कहा...। खेमें गड़ गए, कारिंदे, सिपाही, रसोइए सभी अपने काम में व्यस्त हो गए...पर रकीबन बी जो अभी तक थकान से चूर हुई जा रही थी, उसकी आँखों से थकान गायब हो गई थी सिर्फ एक शब्द 'छोटा खुदा' कानों में गूँज रहा था...।

घंटे-घड़ियालों का शोर बढ़ रहा था, जयकारों के उद्‌घोष के बीच सम्वेत स्वरों में गायन की ध्वनि मदहोश कर रही थी। न जानें क्या हुआ अजीमुल्ला और रकीबन बी को...उनके कदम अपने खेमें से बिहारी जी के मंदिर की ओर बढ़ चले।

हर इक बढ़ते कदम से मंदिर के गायन की ध्वनि बढ़ती हुई सी प्रतीत हो रही थी। भीड़ को चीरते हुए दोनों मंदिर की सीढ़ियों तक पहुँचे, पर अचानक ठिठक गए, कहीं बुत परस्ती में अपने धर्म से बाहर न कर दिए जाएँ...कहीं मुल्ला-मौलवी हमें कोई दंड न दे दें...हम काफिर तो न हो जाएँगे?

इस पल की झिझक ने रोका तो जरूर, पर अब क्या...आज तो कुछ अनहोनी ही होनी थी...भीड़ चीरते हुए दोनों बिहारी जी के सामने खड़े अपलक मूर्ति को निहार रहे थे।

अजीमुल्ला को अचानक बेगम ताज की याद आ गई, बरबस उसकी लिखी पंक्तियाँ वो गुनगुना उठा

जब ना देखा था तुझे तब ना थी कोई आरजू।

जब से देखा है तुझे तेरे तलबगार हो गए।

रकीबन बी को लगा जैसे ये जन्नत का नजारा हो। वो तो उस मूरत में ही खो गई। तभी आरती समाप्त हो गई। वो दोनों खेमें की तरफ वापस गए और रात्रि विश्राम के लिए इंतजाम करने लगे।

रसद साथ थी। खाने का प्रबंधन होने लगा पर पानी के लिए आसपास कुओं की तलाश शुरू हुई पर बस्ती में तीन कुएँ थे। एक मंदिर के निकट पुजारियों का, दूसरा काफी दूर खेतों में तथा तीसरा मलिन बस्ती में। कहाँ से हो पानी का प्रबंध, पुजारी का पानी तो काफिर का और मलिन बस्ती का अछूत का। क्या करें। अजीमुल्ला ने जाकर प्रधान पुजारी से बात की। जल का प्रबंध हो गया, पर जब कुएँ के पास देखा तो पानी काफी नीचे था, पहले आई सूखे की मार के कारण जल सूख चला था पर पुजारियों ने स्वयं जल का इंतजाम करवाया।

आज तक रकीबन बी उन्हें सिर्फ काफिर ही समझती थी पर एक तो बिहारी जी की झलक और पुजारियों की दयालुता ने उसका दिल परिवर्तित कर दिया। उसने अजीमुल्ला से कहा, "क्यों न इस क्षेत्र की जल की समस्या का समाधान किया जाए और वृंदावन के मंदिर की पश्चिम दिशा में एक बड़े प्याऊ का निर्माण कराया जाए।

अजीमुल्ला को ये बात जँच गई। अगली सुबह ही उन दोनों ने यह निश्चय किया कि आगे बढ़ने के पूर्व उस क्षेत्र की जल की समस्या दूर की जाए। समीप जमुना नदी से जल का प्रवाह या एक जल स्रोत का इंतजाम करने के लिए सभी से विचार-विमर्श कर प्रयास शुरू कर दिया।

कुछ ही दिनों में जल प्याऊ तथा जल स्रोत का इंतजाम हो गया, परंतु एक पखवाड़े तक रुकने के कारण ही बिहारी जी के प्रतिदिन दर्शन करने के कारण उनका आगे बढ़ने का मन ही नहीं हुआ और फिर वहीं बस जाने का निर्णय किया गया। अपनी समस्त धन-संपदा को हर जगह से लाकर अजीमुल्ला ने पूरा जीवन बिहारी जी की सेवा में लगा दिया।

आज भी ताज़बेगम की कब्र के पास उनकी कब्र है और उनके द्वारा बनवाई बावड़ी, तालाब आदि से वह जगह फली-फूली है। ये है धार्मिक सौहार्द की एक मिसाल एवं परस्पर सहभागिता। ❍

संघर्ष

◈ **किरण पाठक**
राजश्री विद्या मंदिर
कालियापुरा, बामल्ला
उमल्ला, भरुच, गुजरात

एक दिन जब वह किसी कार्य में व्यस्त थी तो वहाँ बाहर से एक व्यक्ति आ पहुँचा। राधिका ने उसे थोड़ा इंतजार करने के लिए कहा तो वह न माना और अपना कार्य करवाने के लिए जोर देने लगा। न करने पर वह राधिका को गालियाँ देने लगा और बदतमीजी से बात करने लगा।

राधिका बचपन से ही सुनती आ रही थी कि तुम्हें सहनशील होना चाहिए, हर काम में निपुण होना चाहिए। कभी माँ कहती ये मत करो, बाहर खेलने मत जाओ, पर वह सोचती भाइयों को तो हर चीज की आजादी है। उसे अपने ही घर में घुटन महसूस होने लगी। किंतु जब विद्यालय जाती, वह खुद को स्वच्छंद पंछी की तरह आजाद समझती थी।

पढ़ने-लिखने में सदैव अव्वल रहती। यही कारण था कि सभी शिक्षक उसे पसंद करते थे। लेकिन उसके घर में सदैव उसकी उपेक्षा होती थी। भाइयों को अनुत्तीर्ण होने पर भी आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया था, जबकि राधिका को विद्यालय से वापस आकर घर के सभी काम निपटाने पड़ते थे। फिर भी माँ उसी को डाँटती रहती थी।

राधिका अक्सर सोचा करती कि मुझे ही क्यों डाँटा जाता है? जैसे-जैसे बड़ी हुई वह समझ गई कि उसका कसूर और कुछ नहीं, सिर्फ कन्या के रूप में एक निम्न मध्यम वर्गीय परिवार में जन्म लेना है।

बारहवीं की पढ़ाई पूरी होते ही उसका विद्यालय जाना भी बंद कर दिया

गया। अब उसे ऐसा लगने लगा कि मानो किसी ने उसके पंख काट दिए हैं। उदास, निरीह-सी घर का काम करती। भाइयों और माँ की हर काम में मदद करती।

कुछ दिनों के बाद घर में उसके विवाह की बातें होने लगीं। एक लिपिक से उसका विवाह कर दिया गया। उसके पति का नाम नवीन था। नवीन की तनख्वाह मात्र सात हजार रुपये प्रतिमाह थी। नवीन स्वभाव से अच्छा था। यह जानकर राधिका के मन को शांति मिली। वह रूढ़िवादी नहीं थी। राधिका की इच्छा जानकर नवीन ने उसे आगे पढ़ाया। फिर कुछ सालों बाद राधिका को एक नौकरी भी मिल गई।

वह काफी प्रसन्न थी कि अब वह घर खर्च में अपने पति का हाथ बटा पाएगी। सुबह जल्दी उठकर घर के काम करती, फिर कार्यालय जाकर वहाँ का काम भी ईमानदारी से करती। किंतु कुछ दिनों में ही उसने महसूस किया कि उसके पुरुष सहकर्मी अपनी जिम्मेदारी ठीक ढंग से नहीं निभाते हैं, जल्दी घर चले जाते हैं, फिर भी बड़े अफसर उन्हें कुछ नहीं कहते जबकि महिला कर्मचारियों पर काम थोप देते हैं और उनके साथ बदसलूकी करते हैं। वह परेशान रहने लगी।

एक दिन जब वह किसी कार्य में व्यस्त थी तो वहाँ बाहर से एक व्यक्ति आ पहुँचा। राधिका ने उसे थोड़ा इंतजार करने के लिए कहा तो वह न माना और अपना कार्य करवाने के लिए जोर देने लगा। न करने पर वह राधिका को गालियाँ देने लगा और बदतमीजी से बात करने लगा।

यह देखकर राधिका आश्चर्य-चकित हो गई। वह अपने बड़े अधिकारी के पास शिकायत करने गई तो उसने शिकायत लिखित रूप में लिखकर देने के लिए कहा। उल्टे राधिका से ही पूछने लगा, "तुम्हारे पास क्या सबूत है कि उसने तुम्हें गाली दी?" यह सुनकर राधिका हैरान रह गई।

उसने इस्तीफा देने का फैसला ले लिया। जब उसने यह बात अपनी सहेली अर्पिता को बताई तो उसने राधिका को बहुत समझाया पर वह न मानी। अर्पिता ने कहा, "तुम यहाँ काम करना छोड़ दोगी, किंतु जहाँ दूसरी

जगह तुम काम करोगी क्या वहाँ तुम्हें कोई इस तरह का आदमी नहीं मिलेगा?"

राधिका ने इस बात पर पूरी रात सोचा और अंत में निर्णय लिया कि नहीं मैं इस समाज के नर-पिशाचों से नहीं डरूँगी। मैं उनका मुकाबला करूँगी और आगे बढ़ूँगी। दूसरे दिन राधिका सुबह उठी और एक बार फिर संघर्ष करने के लिए आगे बढ़ी और कार्यालय पहुँच गई। आज उसके मन में न कोई दुःख था न ही कोई डर। ❍

भाग-3

नाटक

भारतीय किसान

◈ **रीता नायक**
ज्ञान विकास माध्य. विद्यालय
973-जे, नंदनवन, नागपुर, महाराष्ट्र

पात्र-परिचय

समृद्धि	:	राम की बेटी (बाल भूमिका, उम्र 13-14 साल)
समृद्धि	:	राम की बेटी (वयस्क भूमिका, उम्र 25-26 साल)
दादाजी	:	राम के पिता
दादी	:	राम की माँ
लक्ष्मी	:	राम की पत्नी
सुदर्शन	:	कलेक्टर
विकास	:	तहसीलदार
नारायण	:	ग्रामीण
सीताराम	:	ग्रामीण
मंगल	:	ग्रामीण
कल्लू	:	ग्रामीण
जगदीश	:	ग्रामीण
भीड़ हेतु	:	दो ग्रामीण

(पहला दृश्य)

(बैठक कक्ष में समृद्धि पढ़ रही है, दादाजी का प्रवेश, दादाजी आकर सोफे पर बैठ जाते हैं)

दादाजी : बेटा तू एक बात तो बता। तू डॉक्टर बनेगी, इंजीनियर बनेगी या फिर कलेक्टर?

समृद्धि : दादाजी, न मैं डॉक्टर, न इंजीनियर और न ही कलेक्टर बनूँगी।

दादाजी : तो फिर क्या बनेगी बेटी?

समृद्धि : दादाजी, भारतीय किसान।

दादाजी : **(आश्चर्य से)** क्या भारतीय किसान?

समृद्धि : हाँ दादाजी।

दादाजी : बेटा किसानी कर-करके तो हम थक गए। क्या रखा है किसानी में?

समृद्धि : दादाजी, जो डॉक्टर, इंजीनियर, कलेक्टर नहीं कर सकते, वो किसान करता है।

दादाजी : अच्छा, क्या करता है किसान?

समृद्धि : दादाजी, अपना पेट तो सब भरते हैं, लेकिन किसान खून-पसीना एक करके दूसरों का पेट भरता है।

दादाजी : अरे इतनी प्यारी बातें तूने कहाँ से सीखीं?

समृद्धि : दादाजी, कल हमारी टीचर ने हिंदी का पाठ - भारतीय किसान समझाया।

दादाजी : अच्छा तो ये बात है, लेकिन तू किसान क्यों बनना चाहती है?

समृद्धि : दादाजी, भारतीय किसान देश का गौरव हैं।

दादाजी : अच्छा, और?

समृद्धि : दादाजी यदि खाने को ही अनाज नहीं होगा तो ये कल-कारखाने, मशीन, दवाइयों से हम पेट नहीं भर सकते।

दादाजी : हाँ बेटा, ये तो सच है, लेकिन लोग आज किसानी छोड़कर

नौकरियों की तरफ अँधी दौड़ लगा रहे हैं।

समृद्धि : दादाजी, आप ही बताइए पापाजी ने नौकरी करके 10 एकड़ जमीन में एक एकड़ तक नहीं जोड़ पाए।

दादाजी : अब क्या बताएँ बेटा।

समृद्धि : और आपने बिना नौकरी के 10 एकड़ जमीन खरीद ली। फिर नौकरी अच्छी या किसानी?

दादाजी : लेकिन आजकल कोई नहीं मानता बेटा।

समृद्धि : लेकिन मैं मानती हूँ दादाजी।

(दूसरा दृश्य)

(दादाजी व दादी बैठक कक्ष में बैठकर बातें कर रहे हैं)

दादाजी : मैं कहता था खोट-बँटिया (किराये पर या आधे-आधे पर) में क्या रखा है, अब देख इस बार कितनी अच्छी फसल हुई है। मेरी एक ना सुनी तूने और वो राम ने।

दादी : खेती करेगा कौन? इस बुढ़ापे में, बस चैन की दो रोटी ही ठीक हैं।

(समृद्धि स्कूल से आती है)

समृद्धि : **(दौड़कर)** दादाजी-दादाजी, बताओ, आज मैं क्या लाई हूँ?

दादाजी : अब मुझे क्या पता?

समृद्धि : **(दादी से)** अच्छा दादी आप बताओ।

दादी : अरे मुझे नहीं मालूम, क्या लाई है तू? कोई अंतर्यामी तो हूँ नहीं मैं।

समृद्धि : अच्छा, दादाजी-दादी दोनों ने हार मानी।

दादाजी : हाँ भाई, हम दोनों हार गए।

(समृद्धि बेग से लंच बॉक्स निकालती है और खोलने लगती है)

दादी : क्या हमारे लिए खाने की चीज लाई है?

समृद्धि : रुकिए तो दादीजी। **(लंच बॉक्स खोलते-खोलते नीचे गिर जाता है। उसमें रखी मिट्टी फैल जाती है)**

दादी : **(गुस्से से)** कर दिया ना सत्यानाश। अभी बहू ने साफ-सफाई की थी।

समृद्धि : दादी सॉरी।

दादी : बस अंग्रेजी में बकर-बकर करवा लो, काम के ना काज के, दुश्मन अनाज के।

दादाजी : अरे अभी बच्ची है, चल साफ कर दे।

दादी : देखो जी, तुम इसकी तरफदारी मत किया करो। इसकी उम्र में हमारा ब्याह हो गया था। **(बॉक्स में मिट्टी भरने लगती है)** लो अभी फेंक देती हूँ।

समृद्धि : दादी मैं कर लूँगी ना। प्लीज आप बाहर मत फेंकना।

दादी : **(आँखें निकालकर)** तो अब क्या तू मिट्टी खाएगी?

समृद्धि : नहीं दादी, नहीं।

दादी : तो फिर क्या करेगी?

दादाजी : हाँ-हाँ बेटा मिट्टी का क्या काम?

समृद्धि : दादी-दादाजी मैं प्रयोग करूँगी।

दादी : **(दादी सिर पकड़ लेती है) (दादाजी से)** लो, सुन लिया। जिंदगी-भर तुमने प्रयोग करे, अब बेटा तो न कर सका, तो ये पोती हो गई।

दादाजी : ...लेकिन बेटी कौन से प्रयोग?

समृद्धि : **(प्यार से)** दादाजी गेहूँ उगाकर देखूँगी।

दादी : वाह बेटा वाह! बड़े-बड़े तो बह गए, तीतर कहें हम पार ही लग जाएँ।

दादाजी : समृद्धि बेटा, अभी पढ़ाई में मन लगाओ। ये काम सब बाद के हैं।

(तीसरा दृश्य)

(समृद्धि मोबाइल पर बात कर रही है। दादा-दादी बैठक कक्ष में बैठे हुए हैं। राम डायरी में कुछ लिख रहा है। सब लोग समृद्धि की बातें सुन रहे हैं)

समृद्धि

(व्यस्क भूमिका) : जी हाँ! मैं समृद्धि बोल रही हूँ। **(आश्चर्य से)** क्या? 99.9 परसेंट, जी रैंक? **(आश्चर्य से)** अच्छा जी, मैं घर पर ही हूँ। ठीक है। थैंक्यू।

दादी : क्या हुआ तेरे 12 मा का रिजल्ट?

समृद्धि : **(मोबाइल बंद कर खुशी से गोल घूमते हुए)** दादा-दादी, पापा-मम्मी मैंने टॉप किया है टॉप, पूरे 99.9 परसेंट बना है।

(सब खुशी से खड़े हो जाते हैं)

दादाजी : क्या? 99.9 परसेंट हैं!

दादी : अरे तूने तो कमाल ही कर दिया।

राम : और रैंक कौन-सी है?

समृद्धि : पापा स्टेट में फर्स्ट हूँ मैं।

राम : वाह बेटी वाह! **(गले से लगा लेता है)**

दादाजी : अरी बहू, लाओ सबसे पहले बिटिया का मुँह मीठा कराओ।

लक्ष्मी : अभी लाई बाबूजी। **(दौड़कर जाती है)**

समृद्धि : दादाजी-दादी, पापा, प्रेसवाले मेरा इंटरव्यू लेने आ रहे हैं।

दादाजी : क्या बेटा, अपने घर?

समृद्धि : हाँ दादाजी, अपने घर और अभी।

(चौथा दृश्य)

(समृद्धि और दादाजी टी.वी. पर कृषि दर्शन कार्यक्रम देख रहे हैं। कार्यक्रम की आवाज धीमी-धीमी आती है)

लक्ष्मी : **(अंदर से)** समृद्धि खाना लगा दिया है, पहले खाना खा लो।

समृद्धि : मम्मी, बस और 10 मिनिट।

लक्ष्मी : मैंने कहा ना खाना लगा दिया है।

समृद्धि : मम्मी बस 10 मिनिट की बात है। कृषि दर्शन देख रही हूँ।

(दादी का प्रवेश)

दादी : अरी, अब कल देख लेना बिटिया। खाना ठंडा हो रहा है।

समृद्धि : दादी, कृषि दर्शन प्रोग्राम के बाद खा लूँगी।

दादी : बिटिया, हर वक्त का कृषि दर्शन कार्यक्रम तू देखती है। अरे तेरे क्या मतलब का? चल उठ खाना खा ले।

दादाजी : खा लेगी, खाना कहीं भागे जा रहा है।

समृद्धि : हाँ दादी बस 6-7 मिनिट का ही बचा है।

दादी : आप दोनों के कारण तो नाक में दम है। चल ठीक है। **(लक्ष्मी को आवाज देकर)** बहू खाना अभी ढककर रख देना। थोड़ी देर से खा लेगी। मैं भी तो देखूँ इसमें ऐसी क्या बात है, जो हर वक्त का प्रोग्राम दादा-पोती मिलकर देखते हैं।

समृद्धि : जरूर दादी।

दादाजी : बेटा कृषि दर्शन प्रोग्राम देखकर तो ऐसा लगता है अगर मैं जवान होता तो खेती करना फिर शुरू कर देता।

दादी : हाँ-हाँ कुछ जवानी में की, हीरों के हार पहना दिए मुझे?

समृद्धि : दादी-दादाजी।

(दादाजी अँगुली होंठ पर रखकर चुप रहने का दादी को इशारा करते हैं कि चुपचाप प्रोगाम देखो)

(पाँचवाँ दृश्य)

(राम, लक्ष्मी की बातचीत)

लक्ष्मी : सुनो जी, समृद्धि का एम.बी.ए. इस साल हो जाएगा। तो...

राम : तो क्या? कंपनी में सर्विस लग जाएगी। वैसे भी उसका रिकॉर्ड अच्छा है।

लक्ष्मी : मैं सर्विस की बात नहीं कर रही हूँ।

राम : तो फिर क्या?

लक्ष्मी : अरे एक तुम हो, नहीं तो लड़की के बाप को नींद नहीं आती जब तक कि लड़की का ब्याह न हो जाए।

राम : नहीं-नहीं ब्याह की चिंता तो मुझे भी है।

(दादाजी व दादी का प्रवेश)

दादाजी : अरे किसके ब्याह की चिंता है राम?

राम : बाबूजी, लक्ष्मी समृद्धि की ब्याह की बात कर रही थी।

दादी : हाँ बहू, ब्याह की चिंता माँ-बाप को नहीं रहेगी तो फिर किसे रहेगी?

लक्ष्मी : हाँ, जितने जल्दी पीले हाथ हो बेटी के उतना ही अच्छा।

दादाजी : बिलकुल सही कहा बेटा, लेकिन हमारी बेटी ने एम.बी.ए. कर लिया। अच्छी कंपनी में सर्विस मिलते ही ब्याह भी हो जाएगा। देखना तू।

राम : हाँ समृद्धि की माँ। उसके ब्याह की चिंता इतनी नहीं है। बस सर्विस...

(समृद्धि का प्रवेश)

समृद्धि : देखो पापा, तीन मानी हुई कंपनी से लेटर आए हैं।

दादाजी : क्या सर्विस के लिए।

समृद्धि : हाँ दादाजी। और एक अमेरिका से।

राम : क्या सच बेटा?

समृद्धि : हाँ पापा हाँ।

राम : वाह बेटी वाह!

दादाजी : बेटी, तूने तो हमारी इज्जत में चार चाँद लगा दिए।

दादी : हाँ बेटी, संतान बेटा हो या बेटी, लेकिन हो तेरे जैसा।

समृद्धि : बस दादाजी, अब ये सोचना है कि मुझे सर्विस भारत में करनी है या अमेरिका में।

दादी : अरे भाई, विदेश-इदेश तो कभी नहीं।

लक्ष्मी : हाँ बाबूजी, विदेश शब्द ही मन में कड़वाहट पैदा कर देता है।

दादाजी : लेकिन अभी तो तू ब्याह की बात कर रही थी। फिर भी तो उसे जाना पड़ता।

लक्ष्मी : ब्याह की बात और है बाबूजी।

दादाजी : लेकिन हमारी बेटी टॉप क्लास काम करती आ रही है, तो सर्विस भी अमेरिका में ही करेगी। क्यूँ बेटे राम?

राम : हाँ बाबूजी, आप सच कह रहे हैं।

दादी : अरे जो सर्विस करेगी, उससे तो पूछ लो?

दादाजी : हाँ बेटी समृद्धि, तेरा क्या विचार है?

समृद्धि : दादाजी, मैं अपनी सेवा भारत माँ को ही समर्पित करना चाहूँगी।

दादाजी : लेकिन क्यों बेटा, यहाँ क्या रखा है? वहाँ की कंपनी अच्छा वेतन देगी।

राम : हाँ समृद्धि, यहाँ की जानीमानी कंपनी भी 80-90 हजार से ज्यादा नहीं देगी।

समृद्धि : पापा, मातृभूमि का कर्ज रुपयों से नहीं उतारा जा सकता।

दादाजी : बेटा, आज तो तूने हमें छोटा बना दिया। हम तो रुपयों के लालच...

समृद्धि : नहीं दादाजी, हर गार्जियन की इच्छा यही होती है कि उसका बच्चा अच्छी पढ़ाई करे, अच्छी नौकरी करे, लेकिन बच्चे का भी तो अपना मकसद होना चाहिए।

दादी : बेटा, तेरे विचार कुम्हार के पके घड़े की तरह बोल रहे हैं।

समृद्धि : और इस मिट्टी को पकाया किसने है दादी? **(दादी मुस्कुरा देती है)** आप लोगों ने।

(छठा दृश्य)

(दादाजी-दादी बैठक कक्ष में बैठे हैं। मोबाइल की घंटी बजती है)

दादाजी : मेरा मोबाइल बज रहा है, न जाने किसका फोन है। **(कुरते की जेब में मोबाइल टटोलते हैं)**

दादी : एक तो तुम्हारी आदत खराब है, जहाँ बैठोगे, वहीं मोबाइल भूल जाते हो। जरा नीचे वाली जेबों में देख लो।

दादाजी : **(नीचे की जेब में देखते हैं)** अरे हाँ, ये रहा।

दादी : अरे सुध-बुध रहती नहीं है तो क्यों रख लिया मोबाइल?

दादाजी : **(मोबाइल निकालते हुए)** अरे मैंने तो लाख मना किया, लेकिन समृद्धि बिटिया पकड़ा गई, क्या करूँ?

दादी : पहले मोबाइल सुन लो, किसका फोन है?

दादाजी : **(मोबाइल देखते हैं)** अरे ये तो समृद्धि बिटिया का फोन है।

दादी : अच्छा-अच्छा बात करो।

दादाजी : हाँ बिटिया, कैसी हो तुम?

समृद्धि : दादाजी, मैं बिलकुल ठीक हूँ। आप लोगों को मिस कर रही हूँ।

दादाजी : बेटा, हमें भी तेरी बहुत याद आती है।

समृद्धि : अच्छा दादाजी, इसलिए मैंने...

दादाजी : हाँ-हाँ, बोल तूने?

समृद्धि : लाल बहादुर शास्त्रीजी की फोटो खरीद ली है।

दादाजी : लेकिन शास्त्रीजी की फोटो क्यों बिटिया?

समृद्धि : दादाजी, इसलिए क्योंकि आपकी सूरत उनसे मिलती है ना।

दादाजी : अरे, उससे अच्छा तो मैं ही अपनी फोटो लेकर आ जाता। मुझसे कहा तो होता?

समृद्धि : दादाजी, आपकी फोटो से मेरा एक मकसद पूर्ण होता, लेकिन शास्त्रीजी की फोटो से डबल...।

दादाजी : अच्छा-अच्छा अब समझा।

समृद्धि : हाँ दादाजी, सुबह-शाम उस फोटो को देखकर आपको याद कर लेती हूँ।

दादाजी : और जय जवान, जय किसान को भी, है ना?

समृद्धि : हाँ दादाजी, शास्त्रीजी भी किसान के बेटे थे और मैं? मैं भी एक किसान की बेटी।

दादाजी : लेकिन अब तो तू बड़ी कंपनी की मैनेजर हो गई है बिटिया।

समृद्धि : हाँ दादाजी, लेकिन गुदड़ी का लाल प्रधानमंत्री बनकर भी जय जवान, जय किसान की सेवा करता रहा, तो मैं क्यों नहीं दादाजी?

दादाजी : हाँ जरूर-जरूर, तेरी सर्विस तो उम्दा चल रही है ना?

समृद्धि : हाँ दादाजी, बिलकुल फर्स्ट क्लास।

दादाजी : ले तेरी दादी से बात कर ले। **(मोबाइल कनेक्शन फेल हो जाता है)** हैलो, हैलो...लो फोन ही कट गया।

दादी : अरे, तुम्हारी बात तो हो गई।

दादाजी : हाँ-हाँ हो गई।

दादी : मजे में तो है बिटिया?

दादाजी : हाँ मजे में है।

दादी : तो बस, मुझे तो वैसे भी ये मोबाइल-ओबाइल में आवाज ही सुनाई न पड़े।

(सातवाँ दृश्य)

(बैठक कक्ष में दादा, दादी, राम, लक्ष्मी बैठे हुए हैं)

दादाजी : अरे भाई, मेरा चश्मा कहाँ गया? **(टेबल पर देखते हैं)**

दादी : तुम्हारी जेब में तो रखा है। **(ऊपर वाले जेब में अँगुली से इशारा करती है)**

दादाजी : **(ऊपर की जेब में हाथ डालते हैं)** अरे हाँ ये रहा।

दादी : अब देखो, बगल में छोरा और गाँव में ढिंढोरा।

दादाजी : भूल जाते हैं भाई! **(अखबार उठाकर पढ़ने लगते हैं)** ये लो फिर एक किसान ने आत्महत्या कर ली।

दादी : अरे इन अखबार वालों के पास मरने-गड़ने वाले समाचार के अलावा और कुछ बचा है क्या?

राम : माँ, आजकल किसान तो आएदिन आत्महत्या कर रहे हैं। कल की ही बात है, तहसील में एक किसान ने मिट्टी का तेल डालकर आग लगा ली।

दादी : लेकिन क्यों बेटा?

राम : पटवारी ने 10 हजार रुपये बही बनाने के लिए माँगे थे। पचासों चक्कर लगाए, लेकिन हारकर...।

लक्ष्मी : माँजी, हमारे गाँव के भैया ने तो अपनी पत्नी और तीन बच्चों सहित कीटनाशक खा ली थी।

दादी : अच्छा, लेकिन क्यों बहू?

लक्ष्मी : खेती पर लोन उठा लिया था। बैंक वाले आए दिन तंग करने लगे। एक दिन ज्यादा खरी-खोटी सुना दी तो...।

राम : हाँ भाई, अब खेती करना हँसी-खेल नहीं है।

लक्ष्मी : हाँ माँजी, बड़े-बड़े कास्तकारों के दम निकलने लगे हैं।

राम : अपने गाँव में ही ले लो, रामोतार दादा, कोदर कक्का, यहाँ तक की सरपंच भैया ने भी अपनी खेती बेंचकर शहर में रहने लगे हैं।

दादाजी : हाँ बेटा, बिना खाद-बीज-पानी की अब खेती कहाँ रही?

दादी : और अब तो लोग बिना ट्रेक्टर के घर से हिल तक नहीं रहे हैं।

राम : हाँ माँ, कई किसानों की ट्रेक्टर के कारण भी खेती बिक गई है।

दादी : अरे हमने तो बैल-बखर की खेती की है। हड्डा-पसरा एक किए हैं।

राम : माँ अब बैल-बखर तो बोहोते ही कम हो गए हैं।

दादाजी : बेटा, अब किसान भी क्या करे, जितनी पैदावार नहीं, उससे ज्यादा तो लागत है।

राम : हाँ बाबूजी, बस करते जाओ और दूसरों की जेबें भरते जाओ।

(आठवाँ दृश्य)

(दादाजी, दादी और राम, लक्ष्मी की बातचीत)

दादाजी : बेटा, कमल सिंह का फोन नहीं आया।

राम : नहीं बाबूजी।

दादाजी : लगता है इस साल खेती जोतने के विचार में नहीं है।

राम : हो सकता है बाबूजी।

दादाजी : अगर इस साल कमल सिंह ने खेती नहीं जोती, तो फिर बेटा?

राम : फिर क्या बाबूजी, हम तो करने से रहे। बाँटई देना पड़ेगी।

दादी : अरे भूखे तो नहीं मर रहे हैं, जमीन खाली पड़ी रहेगी और क्या?

दादाजी : और एक साल खाली पड़ी रही तो अगले साल कोई कौड़ियों के भाव नहीं पूछेगा जमीन को।

लक्ष्मी : दादाजी, सुरेश भैया भी जमीन जोतते हैं, अगर वो वहाँ की जमीन जोते तो बात करूँ?

दादाजी : अरे हाँ-हाँ, राम तेरा छोटा साला है ना।

(समृद्धि का सूटकेस लेकर प्रवेश)

दादाजी : **(देखकर)** अरे समृद्धि बेटा तू, अचानक आ गई?

समृद्धि : हाँ दादाजी, सर्विस छोड़ दी है।

सभी लोग : **(आश्चर्य से)** क्या...?

दादी : सर्विस छोड़ दी तूने?

राम : लेकिन क्यों समृद्धि, क्या कारण है?

दादाजी : हाँ बेटा, क्या लड़ाई-झगड़ा हुआ?

समृद्धि : दादाजी, मैं कभी लड़ाई-झगड़ा कर सकती हूँ क्या?

दादाजी : लेकिन फिर क्या वजह है बेटा?

राम : हाँ समृद्धि, इंटरनेशनल कंपनी में लोग सर्विस करने को तरस रहे हैं और तू सर्विस छोड़कर आ गई।

समृद्धि : पापा, मैं अपना असली मकसद पूरा करना चाहती हूँ।

राम : कैसा असली मकसद बेटा?

समृद्धि : किसान बनकर।

राम : क्या...? तू पागल हो गई है क्या? तेरी अक्ल घास चरने गई है क्या?

दादाजी : हाँ बेटी, ये तू क्या बोल रही है, हमारे कुछ समझ में नहीं आ रहा है।

लक्ष्मी : बेटा, तुझे इसलिए पढ़ाया-लिखाया कि तू हम सबके अरमानों पर पानी फेर दे।

दादी : अरे जब खेती ही करनी थी तो इतनी पढ़ाई-लिखाई क्यों?

समृद्धि : दादी पढ़ाई-लिखाई का मेवा अब खाने को मिलेगा। और आप लोगों के अरमान मैं धूमिल नहीं होने दूँगी।

राम : बेटा अव्वल दर्जे की पढ़ाई-लिखाई के बाद...।

समृद्धि : पापा, आपको मुझ पर भरोसा है ना?

राम : लेकिन बेटा, जो काम मैं न कर सका, उसकी इजाजत तुझे कैसे दे दूँ?

दादाजी : हाँ बेटा, लड़की जात और खेती...?

समृद्धि : दादाजी, आप सभी के आशीर्वाद से ये चुनौती भी मैं जीतकर रहूँगी। विश्वास रखिए।

(नौवाँ दृश्य)

(दादाजी-दादी, राम-लक्ष्मी और गाँव से आए लोगों की बातचीत)

दादाजी : अरे गाँव के सब लोग मेरे घर आएँगे, ये मैंने सपने में भी नहीं सोचा था।

नारायण : अरे बड़े दादा ये सब तो बिटिया समृद्धि का कारनामा है।

सीताराम : हाँ बड़े दादा, आज गाँव की बंजर जमीन भी सोना उगल रही है।

जगदीश : दादाजी, गाँव के किसानों की तस्वीर ही बदल दी।

मंगल : तस्वीर ही नहीं भैया तकदीर कहिए, कोदू, बाजरा, बैर खा-खा के दिन काटे, लेकिन आज मेरे घर में अनाज नहीं समा रहा है।

जगदीश : हाँ दादाजी, सालों से खेती करते आ रहे हैं, लेकिन बिटिया ने फूलों की खेती कराके तो मानो मेरी सोई तकदीर जगा दी।

दादी : अरे कल्लू तू, तू भी आओ है रहे? दूध में अब भी पानी मिलात या नहीं?

कल्लू : **(कान पकड़ के)** गंगा मैया की सौं काकी, अब आप तो जानत ही हो, साइकिल से दूध बेंच-बेंच के थक गओ थो। लेकिन बिटिया ने डेयरी स्कीम से डेयरी खुलवा दी। अब तो सरकारी गाड़ी खुद दूध लेवे आवे है।

दादी : और तेरो दोस्त प्रह्लाद...?

कल्लू : गुजर गओ काकी, तीन मोड़ियों की शादी में जाद्दात बिक गई, खाने के लाले पड़ने लगे, लेकिन बिटिया ने भाभी के चेहरे पे मुस्कान ला दी। गाँव के छोटे-छोटे बच्चों को सँभालने के काम बड़े स्नेह से करत है।

सीताराम : और बड़े दादा, वो बिहारी थो ना जो जा झाड़ व झाड़ मधुमक्खी ढूँढ़त फिरत थो, बिटिया ने उसे मधुमक्खी पालन सेंटर ही खुलवा दियो।

कल्लू : अब तो मस्त गोल-मटोल हो रओ है कक्का, गंगा मैया की सों।

राम : और भैया वैद्य साहब की दुकानदारी कैसी चल रही है?

जगदीश : का आपके दोस्त भैया...?

राम : हाँ वैद्य रामसेवक।

जगदीश : तीन बार दुकान में ताला पड़ गओ भैया।

राम : लेकिन क्यूँ भैया?

जगदीश : अब का कहत अंग्रेजी दवा-दारू चल गई, गलत दवा दे दी, तीन बार जेल हो आए बेचारे।

राम : ये तो बोहोत गलत हुआ भैया।

दादाजी : बड़े सज्जन इंसान हैं बेचारे।

जगदीश : लेकिन भैया बिटिया ने उनको इलाज भी तुरंत ही कर दियो औषधी खेती कर सेठ बने बैठे हैं।

कल्लू : और वो चैतया है ना भैया, उसको भी सरकार से जूतों की स्थायी दुकान खुला दी, गंगा मैया की सौं।

नारायण : बड़े दादा इस समय पूरा गाँव खुशहाल है। लेकिन समृद्धि बिटिया है कहाँ?

लक्ष्मी : भैया आप लोगों से मिलकर फिर गाँव निकल गई।

सीताराम : देखो, कितनी गाँव की चिंता, आप-हमें नहीं है।

नारायण : क्या बताएँ राम बेटा, ट्रैक्टर तो का फर्राटेदार दौड़ाए है कि लोग दाँतों तले अँगुली दबा लेत हैं।

सीताराम : राम बेटा, लक्ष्मी बहू जा बेटी नहीं देवी है देवी।

कल्लू : गंगा मैया की सौं कक्का, गाँव को उद्धार कर दियो।

(दसवाँ दृश्य)

(दादा-दादी, राम-लक्ष्मी, कलेक्टर और तहसीलदार की बातचीत)

दादाजी : कहिए कलेक्टर साहब, कैसे आना हुआ?

सुदर्शन : अरे आपकी बिटिया समृद्धि ने परेशान कर रखा है।

दादाजी : अरे भाई वो तो काम से काम रखती है, फिर परेशानी वाली क्या बात है कलेक्टर साहब?

सुदर्शन : दादाजी, मुख्यमंत्री का लेटर आया है कि एक लड़की ने तहसील स्तर तक सुधार कैसे किया, तत्काल जाँच कर सात दिनों में भेजना है।

दादाजी : अब इन सब सवालों के जवाब तो समृद्धि ही दे सकती है। हम क्या जानें?

सुदर्शन : लेकिन है कहाँ समृद्धि?

(समृद्धि का प्रवेश)

समृद्धि : जी यहाँ हूँ मैं। जी कैसे तकलीफ की कलेक्टर साहब आपने?

(समृद्धि आकर बैठ जाती है)

सुदर्शन : हमें कुछ जानकारी चाहिए थी।

समृद्धि : तो आप ऑफिस में ही बुला लेते, मैं हाजिर हो जाती।

सुदर्शन : ये जानकारी शीघ्रातिशीघ्र सी.एम. साहब को भेजनी है।

समृद्धि : क्या जानकारी चाहिए कलेक्टर साहब?

कलेक्टर : यही कि आपने एक गाँव से तहसील तक के किसानों का खेती स्तर कैसे उन्नत कर दिया?

समृद्धि : दृढ़ संकल्प से।

विकास : आपने एम.बी.ए. किया और फिर कृषक कार्य में? कुछ समझ के परे है?

समृद्धि : हाँ तहसीलदार साहब। आज किसान की स्थिति अत्यंत दयनीय है। जो दूसरों को पालता है, आज वही भूखा सो रहा है। आए दिन किसान आत्महत्या कर रहे हैं, उनकी जमीनों को ओन-पोन भाव में कंपनियाँ, बिल्डर, सेठ, साहूकार खा रहे हैं। ऐसी स्थिति में मेरे एम.बी.ए. की डिग्री अच्छी कंपनी में पद तो दिला सकती थी, लेकिन एक किसान की बेटी किसान का दुःख नहीं बाँट सकती थी।

सुदर्शन : खेती तो आपके दादाजी वर्षों पहले किया करते थे, तो फिर भी आपने बिना अनुभव के इतनी ऊँचाइयाँ...?

समृद्धि : कलेक्टर साहब, जहाँ चाह होती है, वहाँ राह अपने आप निकल जाती है। वैसे भी मैंने जबसे होश सँभाला है, तब से आज तक मैं कृषिदर्शन प्रोग्राम देखना कभी नहीं भूली हूँ। यही मेरे जीवन का महत्त्वपूर्ण अनुभव था जिसे मैंने किसानों के साथ बाँटकर उनकी कृषि को समृद्ध बनाने का प्रयास किया है।

दादी : हाँ-हाँ कलेक्टर साहब, कई बार तो खाना खाना भूल जाती थी, लेकिन कृषिदर्शन प्रोग्राम नहीं...।

विकास : समृद्धिजी, आपने किसानों की समस्याओं को आखिर सुलझाया कैसे?

समृद्धि : पहले मैंने उनकी रुचि और उनके बजट को देखा और कम-से-कम खेती पर फल, फूल तथा सब्जियों की खेती

करने की पहल मैंने अपने गाँव से ही शुरू की। पशुपालन, दूध डेयरी, मधुमक्खी पालन और औषधि खेती पर मैंने बहुत जोर दिया। उत्तम किस्म के बीज उपलब्ध कराए। साथ-ही-साथ गवनर्मेंट की सहायता राशि योजाओं का प्रचार-प्रसार और उनका सदुपयोग भी लिया। हालाँकि कुछ रुपये मुझे भी लगाने पड़े, लेकिन परिणाम से मैं खुश हूँ।

सुदर्शन : आपने तो स्कूल, अस्पताल, कुआँ, नलकूप आदि की दशा भी बदलकर रख दी। कैसे?

समृद्धि : जी हाँ कलेक्टर साहब। मैंने कहा ना गवनर्मेंट की इन मूलभूत समस्याओं को लेकर कई योजनाएँ चल रही हैं। लेकिन ये योजनाएँ असली मायने में किसानों तक पहुँचती ही नहीं हैं। इसलिए मुझे भी आपके ऑफिस में कई चक्कर काटने पड़े।

सुदर्शन : **(मुस्कुराता है)** जी हाँ, लेकिन आपने जो बदलाव किया है, उसे देखकर हर कोई दंग है।

दादाजी : लेकिन कलेक्टर साहब, शुरू-शुरू में तो ये बहुत रोती थी।

दादी : हाँ, हमने तो कितना कहा कि अच्छी-खासी कंपनी की सर्विस छोड़कर ये खेती-बाड़ी में कहाँ उलझी है।

राम : लेकिन हम लोगों के लाख मना करने पर भी इसने हिम्मत नहीं हारी।

लक्ष्मी : हाँ कलेक्टर साहब, पर लगने पर पंछी आकाश की सैर करे, इसे देखना किसे अच्छा नहीं लगता।

सुदर्शन : जी हाँ, हमें भी और मुख्यमंत्री जी को खुद भी।

विकास : समृद्धि जी, अगर हो सके तो मुख्यमंत्री जी से भेंट कर लीजिए।

समृद्धि : नहीं तहसीलदार साहब माफी चाहूँगी, मुझे नेतागिरी से कम ही लगाव है और भारतीय किसानों पर गर्व है।

(ग्यारहवाँ दृश्य)

(गाँव के लोगों की भीड़ है, दादाजी-दादी, राम-लक्ष्मी और समृद्धि मध्य में खड़ी है)

सीताराम : बड़े दादा, समृद्धि बिटिया, हम लोग एक मंशा लेकर आए हैं।

नारायण : हाँ बड़े दादा, आप मना नहीं करना।

सीताराम : और बिटिया हमें सौ जूता मार लेना, लेकिन मना नहीं करना।

दादाजी : लेकिन बात क्या है सीताराम भैया?

समृद्धि : बिना बोले तो हम समझेंगे नहीं और जब तक समझेंगे नहीं तो हाँ और ना का सवाल ही नहीं उठता।

सभी लोग : ना स्मृद्धि बेटी ना मत कहियौ।

दादी : अरे कुछ बोलेंगे कि होली-दीपावली है, उठे हमारे घर चले आए।

मंगल : बाई, आप कुछ भी कहो हमें बुरा नहीं लगे, मन चाहे गाली बको। क्यूँ भाइयों...।

सभी : हाँ-हाँ दादी।

जगदीश : लेकिन समृद्धि बिटिया की हाँ सुनकर ही जाएँगे।

राम : अरे भाइयों, पहले बात तो बताओ। आखिर बात क्या है?

समृद्धि : देखिए, जब तक आप अपनी बात नहीं रखेंगे, मैं समझूँगी कैसे?

जगदीश : बताओ सीताराम भैया।

सीताराम : बता नारायण।

नारायण : तू ही बता दे सीताराम।

दादी : अब ये क्या बंदरिया का खेल-तमाशा लगा रखा है कि तू बता कि तू बता, सीधे-सीधे बताते काहे नहीं बन रओ है।

नारायण : वो क्या है? बिटिया की हम सब तहसील वालों की दिली इच्छा है कि आप जनपद अध्यक्ष बनें।

समृद्धि : नहीं, ये कतई नहीं हो सकता।

दादाजी : अरे ये नेतागिरी, चुनाव-उनाव हमारे बसे के बाहर हैं।

राम : अरे भाइयों, नेतागिरी हमारे पूर्वजों ने नहीं की तो हमारी बिटिया भला कैसे करेगी?

दादी : अरे तुम लोगों के पास ज्यादा पैसा आ गओ का कि नेतागिरी का बुखार चढ़ गओ। **(कल्लू की ओर देखकर)** और कल्लू तू, तू कैसे आओ रे, कभी आइना में चेहरा देखों है कि उठाई मेंढकी की भाँति टाँग, लगा दो नाल।

कल्लू : गंगा मैया की सौं काकी हम सबकी मंशा है कि समृद्धि बिटिया जनपद अध्यक्ष बने।

दादी : और चुनाव में रुपया तेरे कक्का लगाएँगे का?

कल्लू : गंगा मैया की सौं काकी, कोई माई को लाल नहीं है जो चुनाव में समृद्धि बिटिया के सामने खड़ा हो जाए। बिलकुल निर्विरोध चुनाव होंगे काकी, निर्विरोध।

नारायण-जगदीश : हाँ बड़ी दादी, बिलकुल निर्विरोध।

सभी लोग : हाँ-हाँ निर्विरोध।

मंगल : कोई खड़ो नहीं होओगे। बस समृद्धि बिटिया की हाँ बाकी है।

समृद्धि : देखिए आप लोगों का खेती-किसानी से पेट भर गया है, तो आप नेतागिरी करो। मुझे कोई शौक नहीं है नेतागिरी का।

नारायण : अच्छा बिटिया और हमें नेताजी लालबहादुर शास्त्री के आदर्श पर चलने की सीख देती हो। वाह, बोहोत खूब बिटिया।

सीताराम : आप ही कहती हो ना बिटिया जय जवान-जय किसान, शास्त्री जी महान हैं।

समृद्धि : हाँ-हाँ मैं कहती हूँ, क्योंकि वे ही किसान के सच्चे सेवक थे। उन्होंने ही किसान को जय कहा था। वे ही चाहते थे हमारे देश के किसानों का विश्व में गौरवगान हो।

नारायण : लेकिन उन्होंने भी तो किसान की सेवा करने के लिए राजनीति अपनाई। आखिर क्यूँ?

समृद्धि : आप लोग मुझसे क्या चाहते हो? मैं आप लोगों को सेवा दे तो रही हूँ और क्या?

कल्लू : गंगा मैया की सौं बिटिया, जो सेवा हमें आज तक नहीं मिली, वो सेवा की आशा हम लोग आपसे ही रखत है, और क्या?

नारायण : शास्त्रीजी प्रधानमंत्री बने, तब उन्होंने किसानों का उद्धार किया। हमारे खातिर आपको जनपद अध्यक्ष बनना ही होगा बिटिया।

जगदीश : हाँ बिटिया, आपके जी में आए हमारा वो हस्ल करो, लेकिन हम आपको जनपद अध्यक्ष देखना चाहते हैं।

सभी लोग : हाँ-हाँ हमारी जान ले लो बिटिया, लेकिन जपनद अध्यक्ष तो आप ही बनोगी।

समृद्धि : आप लोग मेरी बात क्यूँ नहीं समझ रहे हैं? मुझे मजबूर क्यूँ कर रहे हो?

मंगल : क्यूँ हमें रोटी का एक निवाला दिखाकर भूखे सोने को कह रही हो बिटिया?

कल्लू : हमें भूखे ही मरने देती, काहे हमें कलेजे से लगाओ बिटिया?

नारायण : बिटिया, सबकी ही नहीं भगवान की भी मंशा है कि आप जनपद अध्यक्ष बनो।

(कलेक्टर और तहसीलदार का प्रवेश)

सुदर्शन : अरे, आज कैसी भीड़-भाड़ लगा रखी है भाई?

दादाजी : आइए कलेक्टर साहब, आइए।

सुदर्शन : बिलकुल आएँगे साहब, बिलकुल आएँगे। चाय-पानी-नाश्ता भी करेंगे, लेकिन यहाँ क्या मथ्थापच्ची चल रही है।

दादाजी : कलेक्टर साहब, ये सब लोग समृद्धि बिटिया को जनपद अध्यक्ष बनाने की जिद्द पर अड़े हुए हैं।

सुदर्शन : क्या जनपद अध्यक्ष? अरे हाँ भाई, अभी तक आपकी तहसील से कोई फार्म नहीं आया।

नारायण : क्योंकि साहब हम निर्विरोध जनपद अध्यक्ष समृद्धि बिटिया को बनाना चाहते हैं।

सुदर्शन : ये तो आपकी जनपद पंचायत की मिसाल हो जाएगी भाइयों, पहली दफा एकजुट हुए ग्रामीण।

सीताराम : तहसील के सारे लोग एकजुट हो चुके हैं कलेक्टर साहब, लेकिन...।

सुदर्शन : लेकिन क्या?

सीताराम : समृद्धि बिटिया जनपद अध्यक्ष बनने को तैयार नहीं है।

नारायण : आप ही समझाइए कलेक्टर साहब, शायद हम अनपढ़ों की बात ना समझ पा रही हो।

सुदर्शन : ऐसा पहला मौका है समृद्धि जी कि इस जनपद पंचायत से कोई निर्विरोध चुना जाएगा, वरना हर दफा 20-20 केंडीडेट होते हैं।

समृद्धि : कलेक्टर साहब, मैं अपना पूरा जीवन किसानों को समर्पित करना चाहती हूँ, लेकिन आदर्श भारतीय किसान बनकर।

सुदर्शन : इन्होंने आप पर भरोसा जताया है, यदि आप न कह देंगी तो...।

समृद्धि : तो क्या कलेक्टर साहब...?

सुदर्शन : इनमें ही 10 पार्टियाँ चुनाव लड़ने को खड़ी हो जाएँगी।

समृद्धि : मुझे कोई दिक्कत नहीं है कलेक्टर साहब।

सुदर्शन : आपको कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन फिर इनका विकास रुक जाएगा। फिर किसानों की आत्महत्याएँ, किसानों की जमीन बिकना, फिर लोन, फिर कीटनाशक खाना, फिर अनपढ़-निरक्षर बच्चे और फिर माँ-बहनों, बुजुर्गों को अस्पताल के अभाव में बेमौत मरना। ये सब देखा जाएगा? इन्हें गंदी कीचड़ से निकालकर अच्छे मार्ग पर आप लाई हो। क्या फिर चाहोगी कि यह उसी दलदल में फँस जाएँ?

विकास : अँधेरे को चीरने के लिए दीपक की एक लौ ही काफी है समृद्धि जी, और यह लौ आपने दिखाई है।

नारायण : हाँ बिटिया, जय जवान, जय किसान शास्त्री महान हैं। जब वो प्रधानमंत्री बने तो तुम्हें जनपद अध्यक्ष बनना ही होगा बिटिया।

दादाजी : आज वक्त आ गया है बेटा, तेरा असली मकसद पूरा करने का। जिस फोटो में तुझे दो सूरतें दिखाई देती थीं, आज उसमें से एक सूरत ये कहती है कि जनपद अध्यक्ष बन और दिखा दे आदर्श भारतीय किसान की परिभाषा।

राम : हाँ बेटी, तूने हर काम टॉप किया है, तो भारतीय किसान टॉप की क्यों नहीं?

दादी : तू कहती थी ना कि दादी शिक्षा का मेवा आपको खिलाऊँगी, तो अब मुझे मेवा नहीं खिलाएगी?

लक्ष्मी : कृषि दर्शन और उसके लोकगीतों की धुन (ग्रामीणों की ओर हाथ दिखाकर) इन लोगों के जीवन में भरने का यही मौका है बेटा।

समृद्धि : यदि आप सब लोग मुझे जनपद अध्यक्ष देखना चाहते हो तो वादा करो कि आप लोग हमेशा एक रहोगे। जैस मुझे निर्विरोध चुना है, आने वाले समय में भी ऐसा ही चुनो जो जय जवान, जय किसान का नारा बुलंद कर सके, जो भारतीय किसान की जय कर्मों से कर सके।

ग्रामीण लोग : हाँ-हाँ, हम वादा करते हैं, हम एक हैं, एक रहेंगे।

मंगल : **(नारा लगाता है)** भारतीय किसान की...।

ग्रामीण लोग : जय...।

मंगल : जय जवान जय किसान।

ग्रामीण लोग : शास्त्री जी महान हैं।

सुदर्शन : और भाइयों, मैं यहाँ इसलिए आया हूँ कि मुख्यमंत्री जी ने समृद्धि जी के कार्यों को देखकर इस वर्ष 'गौरव भारतीय

किसान पुरस्कार' की घोषणा की है और इस पुरस्कार की प्रथम हकदार का नाम है समृद्धि त्रिपाठी।

कल्लू : गंगा मैया की सौं आज भगवान ने दूध को दूध और पानी को पानी कर दियौ।

मंगल : तो फिर गाओ भैया...

ग्रामीण लोग : क्या?

मंगल व सभी ग्रामीण : मेरे देश की धरती,
सोना उगले, उगले हीरे मोती
मेरे देश की धरती।

(पर्दा गिरता है) ❍

शिक्षा की महिमा

◈ **मंजू बक्शी**
लिटिल फेयरी पब्लिक स्कूल
अशोक विहार, फेस-4, दिल्ली

पात्र-परिचय

रमेश	:	दलाल
रमेश के पिता	:	दूसरा ग्राहक
रमेश की माँ	:	दूसरे ग्राहक की पत्नी
रमेश की मौसी	:	दूसरे ग्राहक की बेटी
नारायण	:	रमेश का दोस्त
सरस्वती माँ	:	शिक्षिका

(पहला दृश्य)

नारद : नारायण-नारायण।

सरस्वती माँ : अहो भाग्य हमारा जो नारद जी आप यहाँ पधारे। कहो नारद कैसे आना हुआ?

नारद : माँ, माँ प्रणाम, प्रणाम माँ। ज्ञान की देवी सरस्वती माँ को नारद का प्रणाम।

सरस्वती माँ : प्रणाम नारद।

नारद : माँ, आप धरती लोक पर मेरे साथ शीघ्र चलें।

सरस्वती माँ : क्यों नारद, क्या हुआ? आप इतने घबराए हुए क्यों हो?

नारद : माँ, धरती हाहाकार कर रही है। आप तो ज्ञान, शिक्षा, योग्यता की देवी हैं माँ पर धरतीवासी आपको कलंकित करने पर तुले हैं माँ।

सरस्वती माँ : नारद, आप इतने उत्तेजित क्यों हो रहे हैं, शांत हो जाएँ और विस्तार से पूरी बात बताएँ।

नारद : माँ, ये शांत होने का समय नहीं है। आप शीघ्र उठें और मेरे साथ धरती लोक चलें नहीं तो अनर्थ हो जाएगा माँ।

सरस्वती माँ : नारद, मैं अभी भी आपकी बात नहीं समझ पा रही हूँ, क्या बात है नारद?

नारद : माँ, मैं आपको पूरी बात विस्तार से बताता हूँ। आप शिक्षा, ज्ञान व योग्यता की देवी हैं।

शिक्षा - हाँ शिक्षा, जिसके बारे में यह कहा जाता है कि इसके बिना मनुष्य मनुष्य नहीं, पशु समान है। हाँ, वही शिक्षा जो हमें पशु से इन्सान बनाती है, पर आजकल के युग में शिक्षा, योग्यता अपना महत्त्व खोने लगी है। उसका व्यावसायीकरण होता जा रहा है। और इसी कारण वह अपना अस्तित्व ही खोने लगी है, उसकी पहचान ही खो गई है।

सरस्वती माँ : नारद, शिक्षा का व्यावसायीकरण कैसे हो सकता है?

नारद : यह सत्य है माँ, सत्य है।

सरस्वती माँ : यह कैसे हो सकता है नारद? शिक्षा, योग्यता कभी ऊँच-नीच, अमीर-गरीब नहीं देखती, उसको पैसे से कभी भी तोला नहीं जा सकता। यह सत्य नहीं है नारद।

नारद : पर माँ आजकल तो ऐसा ही हो रहा है।

सरस्वती माँ : मैं नहीं मानती नारद।

नारद : तभी तो कह रहा हूँ माँ! चलिए मेरे साथ धरती लोक और अपनी आँखों से स्वयं देख लें।

सरस्वती माँ : चलो नारद चलो।

(दूसरा दृश्य)

(धरती का दृश्य! नारद सरस्वती माँ के साथ एक विद्यालय में आते हैं)

सरस्वती माँ : नारद, यह तो कोई विद्यालय लग रहा है। चलो चलकर देखते हैं कि तुम्हारे कथन में कितनी सच्चाई है।
(शिक्षिका विद्यार्थियों को पढ़ा रही है)

शिक्षिका : बच्चों, आज मैं आप सभी विद्यार्थियों को शिक्षा के महत्त्व से अवगत करवाना चाहती हूँ।
शिक्षा मनुष्य का अमूल्य गहना है। यह वह आभूषण है जिसे कोई चुरा नहीं सकता। यह विदेश में मित्र के समान है। यह वह वस्तु है जिसको जितना व्यय करो उतना बढ़ती ही जाती है, बढ़ती ही जाती है। विद्या कभी ऊँच-नीच, अमीर-गरीब नहीं देखती। शिक्षित मनुष्य न केवल स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर होता है अपितु देश के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में भी सहायक होता है। किसी भी व्यक्ति के नैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान के लिए शिक्षा अत्यंत आवश्यक है।
शिक्षा ही दिखाती है, मनुष्य को नई दिशा।
यह वह किरण है जिसके सामने टिक नहीं सकती निशा।
शिक्षा से ही होती है मनुष्य की पहचान।
यही हमें बनाती है पशु से इन्सान।।

सरस्वती माँ : देखो नारद, कितनी अच्छी बातें सिखाई जाती हैं और तुम व्यर्थ ही चिंतित हो रहे थे।

नारद : माँ आप बहुत भोली हैं। आगे-आगे देखिए होता है क्या?

(तीसरा दृश्य)

रमेश : सुना तुमने मोहन, आज अध्यापिका महोदया ने हमें शिक्षा के महत्त्व के बारे में बताया।

मोहन : हाँ सुना, पर तूने सिर्फ अध्यापिका महोदया की बातें ही सुनी होंगी उस रीना को नहीं देखा-कितनी जंच रही थी, मस्त लग रही थी।

रमेश : अरे भई, हमारे 12वीं कक्षा की परीक्षा है। हमें पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए।

मोहन : तू तो किताबी कीड़ा बना रह, मैं तो चला पार्टी में।

रमेश : मैं तो मन लगाकर पढ़ाई करूँगा और अपने पिता का सपना पूरा करूँगा।

(चौथा दृश्य)

रमेश : पिताजी, आज मेरा 12वीं कक्षा का परिणाम आ गया। मेरे 97 प्रतिशत अंक आए हैं।

पिता : वाह! बेटा वाह! तूने तो गर्व से मेरा सिर ऊँचा कर दिया। मैं तो पहले ही जानता था कि तू अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होगा।

रमेश : पिताजी आपको पता है मेरा फोटो अखबार में भी छपेगा। आज हमारे विद्यालय में कुछ पत्रकार आए थे जो कह रहे थे कि मैंने पूरे जिले में उच्च स्थान प्राप्त किया है।

पिता : अच्छा बेटा, तूने तो हमारा नाम रोशन कर दिया।

रमेश : पिताजी, अब मेरा इंजीनियर बनने का सपना पूरा हो जाएगा।

पिता : पगले सिर्फ तेरा सपना ही नहीं, मेरा भी सपना है। इसलिए तो मैं अपनी जमा पूँजी जोड़ रहा हूँ। दिन-रात रिक्शा चलाकर पैसे बचा रहा हूँ कि मेरा बेटा इंजीनियर बन सके।

रमेश : पिताजी, मैं जरूर आपका यह सपना पूरा करूँगा और देखना इंजीनियर बनते ही मैं आपके सभी कष्टों को दूर कर दूँगा।

पिता : सच कहा बेटा, माँ सरस्वती तुझ पर अपनी कृपा बनाए रखे। चल अब तेरे दाखिले की तैयारी करें।

(पाँचवाँ दृश्य)

सरस्वती माँ : देखो नारद देखो, किस तरह धरतीवासी मेरी जय-जयकार कर रहे हैं। तुम तो व्यर्थ ही चिंता करते हो।

नारद : माँ अभी तो आपने सिक्के का एक ही पहलू देखा है। धीरज धरो माँ! आगे-आगे देखें क्या होता है?

पिता : बेटा, दाखिले की लिस्ट में तुम्हारा नाम आ गया ना। तुमने देखा।

रमेश : नहीं पिताजी नहीं, मेरा नाम लिस्ट में नहीं है।

पिता : ये क्या कह रहे हो बेटा, ये कैसे हो सकता है।

रमेश : पिताजी, मेरा दोस्त मोहन कह रहा था कि अंकों से कुछ नहीं होता। आजकल तो सिर्फ पैसा ही अपना कमाल दिखाता है।

पिता : ये कैसे हो सकता है। योग्यता की जगह कभी भी पैसा नहीं ले सकता।

रमेश : पर पिताजी, मेरा तो नाम लिस्ट में नहीं है।

पिता : चल किसी से पूछते हैं।

(दलाल का प्रवेश)

दलाल : अरे भई दाखिले के लिए आए हो?

रमेश : हाँ अंकल, पर मेरा नाम तो लिस्ट में नहीं है।

दलाल : अरे भई तो क्या हुआ, नाम नहीं है तो आ जाएगा।

रमेश : पर कैसे?

पिता : बेटे, हमारे बेटे की अखबार में फोटो छपी थी। इसके 97 प्रतिशत अंक थे।

दलाल : अच्छा, पर अच्छे अंकों से दाखिला थोड़े ही होता है।

रमेश : तो फिर किससे होता है?

दलाल : आजकल तो रोकड़ा बोलता है। दाखिले के लिए पेटी लगती है।

पिता : पेटी, मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा।

रमेश : बाबूजी, मेरी समझ में आ रहा है। यह आदमी पैसे की बात कर रहा है। मोहन जो मेरे साथ पढ़ता था उसके 50 प्रतिशत अंक थे, पर उसका दाखिला इसी कॉलेज में हुआ है। उसने मुझे बताया था कि किस तरह पैसे देकर उसने अपना दाखिला करवाया है।

नारद : देखा माँ, पैसे का खेल! पैसे के सामने योग्यता, शिक्षा सब व्यर्थ है।

सरस्वती माँ : नहीं नारद, ऐसा नहीं हो सकता। इतनी जल्दी हार मत मानो नारद।

दलाल : अरे भई, दाखिला करवाना है या नहीं।

पिता : बेटा दाखिला तो करवाना है। बताओ कितने पैसे लगेंगे?

दलाल : 8 लाख।

पिता : इतने पैसे!

दलाल : हाँ यही रेट है। हमारे सभी रेट फिक्स हैं। दाखिला पास करवाने का अलग रेट, डिग्री दिलवाने का अलग। तुम बताओ सिर्फ दाखिला करवाना है या फिर डिग्री भी चाहिए।

पिता : डिग्री, क्या भाईसाहब आप किस डिग्री की बात कर रहे हैं।

दलाल : अरे भाई, ये धंधे का समय है। पैसे लेकर आओ तब बात करना, अभी खिसको यहाँ से। दूसरे ग्राहक को आने दो।

दूसरा दलाल : नमस्ते भाई साहब, मेडिकल में दाखिला करवाना है। बिटिया को पी.एम.टी. पास करवाना है।

दलाल : हो जाएगा। आप यह बताओ बिटिया परीक्षा में बैठेगी या फिर परीक्षा भी हमारा ही आदमी देगा।

बेटी : पापा-पापा, मैं अपनी सहेलियों के साथ गोआ जा रही हूँ। मैं पी.एम.टी. में नहीं बैठ सकती। मेरे पास समझ नहीं है पापा।

पिता : पर बेटी परीक्षा तो देनी ही होगी।

दलाल : अरे साहब बेबी को जाने दो। हमारा आदमी परीक्षा दे देगा, बस रकम दुगुनी हो जाएगी।

बेटी : पापा-पापा प्लीज़ दे दो ना।

पिता : कितनी?

दलाल : बस पच्चीस।

बेटी : बस 25 लाख की ही तो बात है। पापा, दे दो ना।

पिता : अच्छा, पर अब थोड़ा डिग्री में पैसे कम कर देना। मुझे पता है डिग्री भी इसी तरह ही बनवानी होगी।

दलाल : अच्छा अंकल चलो 5 प्रतिशत डिग्री में छोड़ दूँगा।

बेटी : अंकल डेंटिस्ट की डिग्री की कितने पैसे लगेंगे। मेरी सहेली को भी बनवानी है।

दलाल : 1.5 करोड़।

बेटी : सिर्फ 1.5 करोड़ और डॉक्टर, वाह! कितनी अच्छी बात है।

रमेश : देखा पिताजी आपने देखा, सब पैसों का खेल है यहाँ। योग्यता, शिक्षा कोई मायने नहीं रखती।

पिता : मुझे तो इनकी बातें ही समझ नहीं आईं। जब ये लड़की परीक्षा में ही नहीं बैठेगी तो पास कैसे होगी?

रमेश : पिताजी, इस लड़की की जगह कोई और परीक्षा दे देगा।

पिता : हे भगवान! ऐसा भी होता है, पर बेटा चल परीक्षा में पास हो भी जाएगी तो डॉक्टर कैसे बनेगी। उसके लिए तो योग्यता चाहिए होती है, वह कैसे लाएगी। डॉक्टर तो भगवान का दूसरा रूप होता है, जिससे सभी की आस होती है। यह लड़की डॉक्टर नहीं बन सकती।

रमेश : पिताजी, आपने सुना नहीं वो आदमी डॉक्टर की डिग्री की ही तो बात कर रहा है।

पिता : हे भगवान! इतना अँधेर...डॉक्टर की डिग्री भी बिकाऊ है। हे भगवान! कोई कानून कुछ होता है या नहीं। किसी से तो ये डरेंगे।

दलाल : अरे अंकल, कानून की डिग्री भी यहीं मिलती है। बोलो तो बनवा दूँ। अभी कल ही किसी को दी है।

रमेश : चलो पिताजी, यहाँ से चलो।

दलाल : सोच लो अंकल, हफ्ते भर में पैसों का इंतजाम कर सको तो आ जाना, मैं यहीं मिलूँगा।

रमेश : पिताजी घर चलो, मेरा दाखिला नहीं हो सकता।

पिता : अरे बेटा चिंता मत करो। मैं पैसों का इंतजाम करता हूँ।

(छठा दृश्य)

रमेश की माँ : सुनते हो, रमेश सारा दिन चिंता में डूबा रहता है। ना कुछ खाता है ना पीता है। मुझसे तो उसकी यह हालत देखी नहीं जाती।

रमेश का पिता : हाँ मैंने देखा, उसको लगने लगा है कि उसका सपना पूरा नहीं हो पाएगा।

माँ : हाँ, कैसे होगा इतने पैसों का इंतजाम।

पिता : सुनो! मेरा दोस्त बता रहा था कि पास के अस्पताल में एक परिवार है जिसे किडनी की जरूरत है। मैं अस्पताल गया था और डॉक्टर ने जाँच के बाद बताया है कि मेरी किडनी उन्हें लग सकती है और इसके लिए वो हमें 7 लाख तक दे रहे हैं। बस तुम रमेश को मत बताना।

माँ : ये आप कैसी बातें कर रहे हैं। आप-आप अपनी किडनी बेच देंगे! आप होश में तो हैं।

पिता : मैं अपने बेटे के सपने को पूरा करने के लिए कुछ भी कर सकता हूँ। किडनी तो क्या मैं अपनी जान भी दे सकता हूँ।

(रमेश उनकी बातें सुन लेता है)

रमेश : नहीं पिताजी नहीं, मैं आपको ये अनर्थ नहीं करने दूँगा। नहीं पिताजी नहीं। क्या फायदा इतनी मेहनत का, इतने पढ़ने का जब यहाँ पर हर चीज बिकाऊ है। मैंने तो सुना था शिक्षा मनुष्य की पहचान होती है। शिक्षा वह गहना है जिसे कोई चुरा नहीं सकता। ये अमीरी-गरीबी में भेद नहीं करती, पर अब मुझे पता चला कि मनुष्य की पहचान शिक्षा से नहीं, पैसों से होती है। नहीं जीना, नहीं जीना मुझे ऐसे समाज में जहाँ योग्यता की कोई कीमत नहीं। जहाँ केवल पैसा बोलता है। जहाँ ज्ञान की देवी सरस्वती माँ की कोई जगह नहीं। नहीं जीना-नहीं जीना मुझे। नहीं देखना मुझे भ्रष्टाचार का नंगा नाच। नहीं देखना मुझे यहाँ हर चीज बिकाऊ है। क्या आप बता

सकते हैं कि क्या करूँ मैं--क्या चढ़ने दूँ अपने पिता की बलि अपने सपनों को पूरा करने के लिए। मैं आपसे पूछती हूँ आपसे और आपसे-क्या होने दूँ ये सब जाने दूँ अपने पिता को अस्पताल बताओ। मैं क्या करूँ-क्या आपके पास है कोई जवाब? आपके पास-आपके पास-नहीं है-नहीं है ना आपके पास कोई जवाब। नहीं मैं नहीं बन सकता इतना स्वार्थी-अपने स्वार्थ के लिए नहीं दूँगा अपने पिता की बलि। पिताजी, मैं आपको ये अनर्थ करने नहीं दूँगा। माँ-पिताजी मुझे माफ कर दो! मैं हार गया, मैं हार गया। मैं आपका सपना पूरा नहीं कर सकता। अब मेरे पास एक ही रास्ता बचा है मैं अपना यह जीवन ही समाप्त कर लेता हूँ। समाप्त कर लेता हूँ।

(रमेश आत्महत्या कर लेता है)

(सातवाँ दृश्य)

नारद : नारायण-नारायण! देखा माँ, आपने अपनी आँखों से देखा ये अनर्थ।

सरस्वती माँ : हाँ नारद! मेरा मन अत्यंत खिन्न हो गया है। इस बच्चे का निर्जीव शरीर देखकर मेरा मन अत्यंत दुःखी हो गया है।

नारद : माँ, अब आपको ही कुछ करना होगा। हाँ आपको ही कुछ करना होगा। अब आपको अपना रौद्र रूप दिखाना होगा माँ। इस बच्चे की बलिदानी व्यर्थ नहीं जाएगी माँ। पाप का घड़ा अब भर चुका है माँ। अब आप कुछ करें, नहीं तो यह सृष्टि ही समाप्त हो जाएगी। असत्य की सत्य पर विजय नहीं हो सकती माँ। पैसा कभी भी योग्यता व शिक्षा से बड़ा नहीं हो सकता।

नहीं हो सकता माँ। अब समय आ गया है धरतीवासियों को शिक्षा की महिमा दिखाने का। क्या आपका हृदय वेदना से नहीं भर गया माँ। देखो इस बच्चे के मृत शरीर को देखो माँ। इसका मृत शरीर चीख-चीखकर इन्साफ की दुहाई कर रहा है। क्या इसे इन्साफ नहीं मिलेगा माँ। माँ, अपने पुत्र के निर्जीव शरीर को देखो माँ। जब बात अपने बच्चे की आती है तो एक हिरनी भी शेरनी बन जाती है। आपको दुर्गा का रूप धारण करना होगा माँ और पापियों का विनाश करना होगा।

सरस्वती माँ : नारद आप सत्य बोल रहे हैं। अब समय आ गया है धरतीवासियों को शिक्षा का महत्त्व समझाने का। मैं यूँ चुप नहीं बैठूँगी। मैं यूँ चुप नहीं बैठूँगी।

(आठवाँ दृश्य)

रमेश की मौसी : दीदी-दीदी; ये रमेश ने क्या किया।

रमेश की माँ : बहन, रमेश ने जाने से पहले खत लिखा था। उसमें उसने लिखा था कि उसने हमारी बातें सुन ली थीं कि उसके पिताजी उसके दाखिले के लिए अपनी किडनी बेचने की बात कर रहे थे, जिससे वे उसका दाखिला इंजीनियरिंग कॉलेज में करवा सकें और इसलिए उसने आत्महत्या कर ली।

मौसी : दीदी-दीदी, रमेश ने आत्महत्या नहीं की उसे मारा गया है।

माँ : ये तुम क्या कह रही हो?

मौसी : दीदी, मैं सच कह रही हूँ। रमेश-रमेश कितना खुश था। जिंदगी से उसे कितना प्यार था। वह जिंदगी में कुछ करना चाहता था, पर उसे मजबूर किया गया।

ऐसा कदम उठाने पर क्या तुम उसके हत्यारों को सजा मिलते नहीं देखना चाहोगी।

माँ : पर हम क्या कर सकते हैं।

मौसी : मैं चुप नहीं बैठूँगी। जब बात अपने बच्चे की हो तो सीधी-सादी नारी भी लक्ष्मीबाई बन जाती है। आप चलो मेरे साथ, मैं ये खत लेकर शिक्षा मंत्री के पास जाऊँगी। मैं अपने बेटे के हत्यारों को जब तक सजा नहीं दिलवाऊँगी, चैन से नहीं बैठूँगी।

माँ : मैं भी तेरे साथ चलूँगी और उनसे इन्साफ की दुहाई दूँगी।

मौसी : चलो दीदी चलो।

(नौवाँ दृश्य)

टीवी रिपोर्टर : अभी-अभी पता चला है कि शिक्षा मंत्री ने शिक्षा में चल रहे घोटाले की जाँच करने के लिए कमेटी नियुक्त की है और AIPMT परीक्षा, जिसमें काफी गड़बड़ी थी, उसे रद्द कर दिया गया है और साथ ही दाखिले में चल रहे रुपयों के खेल को देखते हुए दोबारा दाखिले करवाने की घोषणा की है। और जो भी अपराधी हैं, उन्हें कड़ी-से-कड़ी सजा की घोषणा भी की है। एक कमेटी का भी गठन किया गया है जो डिग्री की जाँच करेगी और फर्जी डिग्री बनाने वालों के प्रति कड़ी कार्यवाही की जाएगी।

नारद : माँ, धन्य हो, धन्य हो माँ। आपने अपने भक्त की हत्यारों को सजा देकर धरती को पापियों से मुक्त कर दिया माँ।

सरस्वती माँ : ये तो होना ही था नारद। आखिर जब पाप का घड़ा भर जाता है तो उसका अंत निश्चित ही होता है।

नारद : धन्य हो, माँ धन्य हो! धर्म की जय हुई और अधर्म का नाश हुआ और शिक्षा की महिमा जो कहीं खो गई थी, उसका अस्तित्व जो कहीं खो गया था, उसे वापस मिल गया। धन्य हो माँ-धन्य हो।

(पर्दा गिरता है) ❍

भ्रष्टाचार की आग

◈ **विनोद नायक**
ज्ञान विकास माध्यमिक विद्यालय
973-जे, नंदनवन, नागपुर, महाराष्ट्र

पात्र-परिचय

माया देवी	:	एक विधवा महिला (उम्र लगभग 40 वर्ष)
मोहन बाबू, गिरधारी लाल, गुप्ता जी	:	माया देवी के सहकर्मी
बड़े भाई	:	जोनल के मुख्य अधिकारी
मुस्कान और कोमल	:	माया देवी की बेटियाँ
भीड़	:	ग्राहक पाँच, पुलिस एक

(पहला दृश्य)

(नगर निगम के जोनल कार्यालय में समान दूरी पर चार टेबल-कुर्सियाँ, कुछ फाइलें और दो अलमारियाँ रखी हुई हैं, दीवारों पर महापुरुषों की तस्वीरें हैं और एक केबिन मुख्य अधिकारी का है, कार्यालय में कर्मचारियों की बातचीत शुरू है)

गीत : बिकता कोई चाय में, दिखता किसी को रुपया।
नेता हो या हो सिपाही, अफसर लाख में बिकता।
भभक उठी है, पाप की अग्नि,

जलती दुनिया सारी।
भ्रष्टाचार की आग...

मोहन बाबू : यार, वो राधेश्याम बाबू जी थे ना, उनकी बीवी की अनुकंपा नियुक्ति हो गई है।

गुप्ता जी : क्यों ना हो मोहन बाबू? डबल एम.ए. जो किया है।

गिरधारी लाल : हाँ भाई, राधेश्याम बाबूजी के मरने के बाद तो पत्नी को ही सर्विस मिलनी थी, क्योंकि बच्चियाँ तो अभी दोनों छोटी हैं।

गुप्ता जी : चलो अच्छा ही हुआ।

मोहन बाबू : हाँ गुप्ता जी, बड़े साहब बता रहे थे कि आज से राधेश्याम की पत्नी सर्विस पर आ रही है।

गुप्ता जी : तो समझ लीजिए गिरधारी लाल जी आपका पत्ता साफ। **(सब हँसते हैं)।**

गिरधारी लाल : **(हँसते हुए)** गुप्ता जी, हमें कहीं पर भी रखिए, हम तो जनता के सेवक हैं। सेवा करते रहेंगे।

मोहन बाबू : लेकिन, तुम्हारे काम को वो विधवा महिला झेल सकेगी क्या?

गिरधारी लाल : यार, राधेश्याम बाबू जी के आदर्श पर चली तो जरूर संभाल लेगी और फिर राधेश्याम बाबू जी तो दुनिया को चलाते थे।

मोहन बाबू : **(हँसकर)** हाँ सही कह रहे हो गिरधारी लाल जी। **(सभी हँसते हैं)।**

गुप्ता : लो भाभी जी भी आ गई। **(सब लोग नमस्ते करते हैं, माया देवी सबको नमस्ते करती हैं)।**

गिरधारी लाल : भाभी जी मुबारक हो सर्विस का पहला दिन।

गुप्ता जी : स्वागत करते हैं हम आपका।

माया देवी : धन्यवाद! भैया।

मोहन बाबू : तो भाभी जी कुछ मिठाई-सिठाई हो जाए।

माया देवी : क्यों नहीं भाई साहब? घर आइए ना आपको मिइाई भी खिलाएँगे।

गुप्ता जी : भाभी जी, हम मिठाई तो आपसे खा ही लेंगे, पहले बड़े साहब से मिल लीजिए, फिर बाकी बातें करते हैं।

मोहन बाबू : हाँ गुप्ता जी, आप ठीक ही कहते हैं। बड़े साहब भी आपका **(माया देवी की ओर इशारा करते हुए)** ही इंतजार कर रहे हैं।

माया देवी : ठीक है भाई साहब, मैं बड़े साहब से मिलकर आती हूँ। **(मायादेवी बड़े साहब के केबिन में जाती है)।**

माया देवी : मैं आ सकती हूँ सर।

बड़े साहब : **(फाइल देखने में व्यस्त रहते हैं)** यस, कौन... अरे माया देवी, आइए-आइए।

माया देवी : नमस्ते सर।

बड़े साहब : नमस्ते-नमस्ते, बैठिए। **(फाइल को रखकर)** हाँ तो सुनाइए आप ठीक से हैं।

माया देवी : मैं ठीक हूँ सर।

बड़े साहब : तो आज से आपने नौकरी जोइन कर ही ली।

माया देवी : हाँ सर।

बड़े साहब : देखिए, माया देवी आप अपना काम ईमानदारी से करिए, जो भी निर्णय लें, आप अपनी सूझ-बूझ से लें। हमें यकीन है आप बहुत जल्दी यहाँ के कामकाज को समझ लेंगी।

माया देवी : जी सर।

बड़े साहब : आपको अतिक्रमण विभाग सौंप रहा हूँ। बाकी गिरधारी लाल से सब-कुछ समझ लीजिएगा। **(कॉल बैल बजाते हैं, चपरासी आता है)।**

चपरासी : जी सर।

बड़े साहब : राम सेवक, मैडम को अतिक्रमण विभाग की अलमारी की चाबी देना और गिरधारी लाल से कहना मैडम की मदद करें।

राम सेवक : जी सर। आइए मैडम। **(माया देवी साथ में जाती हैं)।**

माया देवी : राम सेवक, पहले अतिक्रमण विभाग कौन सँभालता था?

राम सेवक : गिरधारी लाल बाबू और उससे पहले गणेश राम जी, रिटायर्ड हो गए। **(चलते-चलते बातें करते जाते हैं)।**

राम सेवक : ये लो आपका विभाग, अलमारी की चाबी अभी लाया और गिरधारी बाबू को भी बुला लाता हूँ।

माया देवी : ठीक है राम सेवक। **(राम सेवक जाता है और गिराधारी बाबू के साथ आता है)।**

राम सेवक : **(दूर से ही)** ये लीजिए मैडम अलमारी की चाबी।

गिरधारी लाल : तो भाभी जी आपको अतिक्रमण का काम सौंपा है।

माया देवी : हाँ भाई साहब, साहब ने कहा है जो कुछ मदद की जरूरत पड़े तो आपसे ले लें।

गिरधारी लाल : मदद लेने में संकोच मत कीजिएगा, भाभी जी। हम तो जन सेवक हैं। जितनी सेवा करते हैं, उतने ही खुश रहते हैं। **(गिरधारी लाल माया देवी को समझाता है, मौन वार्तालाप)।**

गिरधारी लाल : तो मैं चलूँ भाभी जी।

माया देवी : ठीक है भाई साहब।

गिरधारी लाल : जरूरत पड़े तो इस नाचीज को जरूर याद कीजिएगा।

माया देवी : **(मुस्कुराकर)** हाँ बिलकुल भाई साहब, बिलकुल। **(भाभी जी फाइल देखने में व्यस्त हैं, लोगों का आना-जाना शुरू है, कर्मचारियों से कुछ ग्राहक बहस कर रहे हैं। एक दिन का काम खत्म हो जाता है)।**

(दूसरा दृश्य)

(घर पर माया देवी पहुँचती है, बैल बजाती है, बड़ी बेटी आती है)

बड़ी बेटी : कौन है?

माया देवी कोमल : मैं हूँ बेटी। **(कोमल दरवाजा खोलती है और कहती है)।**

(बड़ी बेटी) : मुस्कान...मम्मी आ गई। मम्मी...**(कहकर गले लग जाती है)।** कैसा रहा मम्मी सर्विस का पहला दिन?

मम्मी : बहुत अच्छा बेटा, बड़े साहब बहुत अच्छे हैं। उन्होंने कहा तुम्हें कोई दिक्कत आए तो कर्मचारियों की मदद ले लीजिएगा।

कोमल : अच्छा, और मम्मी।

मम्मी : सभी लोग मिठाई माँगने लगे। अब मैं मिठाई लेकर तो गई नहीं थी।

कोमल : तो आपने बाजार से खरीदकर खिलाई होगी।

मम्मी : नहीं बेटा, मैंने कहा घर आकर खाइएगा।

कोमल : **(खुश होकर)** तो मम्मी हमारे लिए तो जरूर मिठाई लाई होंगी।

मम्मी : अरे बेटा, मैं तो तुम लोगों के लिए लाना ही भूल गई।

कोमल : ओह!...मम्मी। आप बहुत बुरी हैं।

मम्मी : लेकिन देखती हूँ, कहीं बैग में रखकर तो नहीं भूल गई। **(बैग से मिठाई निकालती है)।**

कोमल : मम्मी, आप भी...मुस्कान...**(आवाज देती है)** मम्मी मिठाई लाई हैं। **(मम्मी से बैग छीनकर मिठाई निकालती है, मुस्कान दौड़कर आती है)।**

मुस्कान : मम्मी, हमें भी मिठाई, मम्मी हमें भी मिठाई।

मम्मी : हाँ-हाँ दोनों के लिए है। कोमल मिठाई मुस्कान को दे दो और एक गिलास पानी लाना।

कोमल : अभी लाई मम्मी। **(पानी लाकर देती है)** मम्मी हमने तो खाना भी बना लिया है।

मम्मी : अच्छा, वाह! मेरी बहादुर बेटी, क्या बनाया है?

कोमल : आपके मनपसंद गाजर का हलवा और पूड़ी-सब्जी।

मुस्कान : हाँ मम्मी, दीदी कह रही थी कि आज मम्मी की नौकरी का पहला दिन है, हम दोनों सरप्राइस देते हैं।

मम्मी : हाँ, और क्या कह रही थी दीदी?

मुस्कान : और कह रही थी कि पापा जैसे ड्यूटी से थककर आते थे ना तो मम्मी कैसे दौड़-दौड़कर पानी और खाना परोसती थी। हम भी मम्मी को ऐसे ही देंगे, क्योंकि मम्मी थक गई होंगी ना।

कोमल : **(चिल्लाती है)** मुस्कान। मम्मी ये झूठ बोल रही है।

मम्मी : हाँ बेटी, थकान तो हो ही जाती है। अच्छा चलो हम लोग खाना खाते हैं। **(तीनों खाना-खाने चले जाते हैं)।**

(तीसरा दृश्य)

(एक माह बाद)

(कार्यालय में मोहन बाबू अपनी टेबल पर मोबाइल से गाना सुन रहे हैं। गाना है आज रपट जाएँ तो हमें ना उठाइओ। तभी बगल के टेबल से गुप्ता जी)

गुप्ता जी : मोहन बाबू, आजकल खूब गाने सुन रहे हो।

मोहन बाबू : हम तो जल कर वाले हैं। महीने में पाँच दिन व्यस्त रहते हैं। बाकी दिन सभी को गाने सुनाते हैं।

गुप्ता जी : मोहन बाबू सभी को सुनाते हो, कि उन्हें ही सुनाते हो।

मोहन बाबू : अरे गुप्ता जी, हमारे गिरधारी लाल जी और उन्हें तो फुरसत ही नहीं है, देखो कैसी लाइन लगी है। **(लाइन में लोग खड़े हुए हैं। पहले गिरधारी लाल जी का टेबल दिखाएँगे और फिर माया देवी का)।**

गिरधारी लाल : **(ग्राहक का फार्म देखकर)** देखो, इसमें मतदाता परिचय पत्र की फोटोकॉपी लगाओ या फिर बिजली बिल।

ग्राहक : साहब मेरा मतदाता परिचय पत्र अभी बना नहीं है।

गिरधारी लाल : तो बिजली बिल लगा दो।

ग्राहक : साहब, मैं झुग्गी में रहता हूँ। बिजली बिल कहाँ से लाऊँ?

गिरधारी लाल : तो ये फार्म जमा नहीं होगा, ये लो। **(फार्म वापस देता है)।**

ग्राहक : गरीब हूँ साहब, राशन कार्ड नहीं बनेगा तो भूखों मर जाऊँगा। तरस खाइए साहब।

गिरधारी लाल : ठीक है, ठीक है साइड में खड़े हो जाओ, बाद में देखता हूँ। **(ग्राहक बगल में खड़ा हो जाता है)।**

गिरधारी लाल : **(दूसरे ग्राहक को देखकर)** अरे! और प्रताप सिंह कितने फार्म हैं।

प्रताप सिंह : सर 36 फार्म हैं, 26 गरीबी रेखा के नीचे के और 10 सामान्य।

गिरधारी लाल : **(धीरे से बोलता है)** दस हजार रुपये लगेंगे।

प्रताप सिंह : सर **(निकालकर)** ये लीजिए। पाँच हजार रुपये। बाकी कल दे दूँगा। आपकी दक्षिणा में भी कभी कोई कमी की है भला?

गिरधारी लाल : **(रुपये लेते हुए)** प्रताप सिंह शुक्रवार को आ जाना। **(प्रताप सिंह चला जाता है, अगले ग्राहक का नंबर लग जाता है)।**

(माया देवी से ग्राहक)

ग्राहक : मैडम, मेरी बिल्डिंग परमीशन की फाइल का क्या हुआ?

माया देवी : किस नाम से है फाइल?

ग्राहक : आरती वर्मा।

माया देवी : **(फाइल उठाकर देखती है)** इसमें तो प्लाट की रजिस्ट्री की फोटोकॉपी और प्लाट का नक्शा है ही नहीं, केवल क्रय का शपथ पत्र लगा हुआ है। **(फाइल दिखाते हुए)** ये देखो।

ग्राहक : मैडम, किसी भी प्रकार से कर दीजिए आपकी मेहरबानी होगी।

माया देवी : प्लाट की रजिस्ट्री और नक्शे की फोटोकॉपी तो लगानी ही पड़ेगी। उसके बिना परमीशन नहीं मिलेगी।

ग्राहक : मैडम, मुझे तो प्लाट पट्टे में मिला था।

माया देवी : तो पट्टे की अटेस्टेड फोटोकॉपी लगाओ।

ग्राहक : मैडम पट्टे के कागजात गुम हो गए हैं।

माया देवी : अच्छा, किस वर्ष का पट्टा था और कॉलोनी का क्या नाम है?

ग्राहक : वर्ष 2000 का है मोतीलाल नगर का।

माया देवी : अभी रिकॉर्ड में देख लेती हूँ। **(माया देवी कार्यालय का रिकॉर्ड उठाकर देखती है)** किस नाम से मिला था पट्टा?

ग्राहक : आरती वर्मा।

माया देवी : **(रिकॉर्ड देखकर)** आरती वर्मा के नाम से तो कोई पट्टा वितरित हुआ ही नहीं। **(नक्शे में देखकर)** ये पट्टा नं. 201 से 256 और ये नाले की जमीन।

ग्राहक : मैडम, वर्ष 2000 में ही सबके साथ मिला था।

माया देवी : मिस्टर ये नाले की सरकारी जमीन है, ये देखिए नक्शे में, आपको पट्टा कैसे मिल सकता है?

ग्राहक : मैडम, जैसे भी हो। जो भी आपका खर्चा होगा मैं सेवा कर दूँगा। लेकिन बल्डिंग परमीशन करा दीजिए।

माया देवी : ये सरकारी जमीन है, इसकी बिल्डिंग परमीशन नहीं मिलेगी।

ग्राहक : मैडम, दस हजार रुपये दे दूँगा।

माया देवी : तो आप मुझे दस हजार रुपये का लालच दे रहे हैं।

ग्राहक : नहीं मैडम, आप जितने माँगोगी, उतने दे दूँगा।

माया देवी : **(गुस्से में)** देखिए मिस्टर आप क्या समझते हैं। सब काम रिश्वत से होते हैं? ये सरकारी जमीन है और इसकी बिल्डिंग परमीशन किसी हालत में नहीं मिलेगी। जाओ यहाँ से।

ग्राहक : फिर मुझसे फाइल क्यों बनवाई?

माया देवी : किसने फाइल बनवाई?

ग्राहक : गिरधारीलाल जी ने। चाय, पानी, नाश्ता तो खूब चाट लेते हैं, काम करने में जान निकलती है।

माया देवी : देखिए तमीज से बात करिए?

ग्राहक : **(गुस्से में)** तमीज-अमीज छोड़िए मैडम, आप मुझे जानती नहीं हैं। मैं पार्षद सुनील मल्होत्रा का आदमी हूँ। परमीशन नहीं मिली तो मैं आपकी सर्विस खा जाऊँगा। अभी गिरधारी लाल जी से मिलता हूँ। मेरा एक-एक रुपया मेहनत का है। **(बड़बड़ाते हुए जाता है)**

माया देवी : हाँ-हाँ जाओ, गिरधारीलाल जी से मिलो। **(ग्राहक गिरधारी लाल जी के पास जाता है)।**

ग्राहक : **(गुस्से में)** क्या है साहब? मुझसे फाइल लगवा दी और परमीशन का ठिकाना नहीं है? वो मैडम कहती हैं परमीशन नहीं मिलेगी, आप लोगों को हर रोज मुर्गे और बकरे की बलि चाहिए।

गिरधारी लाल : मेरी बात सुनो प्रदीप वर्मा, मेरी बात सुनो। सब कुछ हो जाएगा थोड़ा शांत रहो। आज मैं साहब से बात कर

लूँगा, जल्द ही तुम्हारा काम हो जाएगा। चिंता मत करो।

ग्राहक : हो तो जाएगा ना साहब। बहुत रुपये खर्च हो गए हैं। मुझे किसी भी हाल में परमीशन चाहिए।

गिरधारी लाल : हो जाएगा। तीस हजार रुपये की व्यवस्था कर लो, बस।

ग्राहक : ठीक है साहब। तो मैं चलूँ।

गिरधारी लाल : बेफिक्र होकर जाइए तुम्हारा काम मैं करूँगा। **(बगल में खड़े आदमी से)** क्या है तुम्हारा?

ग्राहक : साहब वो राशन कार्ड का फार्म...

गिरधारी लाल : इसके पहले और कितने राशन कार्ड बनवा चुके हो?

ग्राहक : साहब मेरा तो पहला ही फार्म है। मेरा पड़ोसी तीन कार्ड बनवा चुका है। अपने नाम से, बीवी और रिश्तेदारों के नाम से।

गिरधारी लाल : ठीक है, ठीक है, सौ रुपये लगेंगे दादा।

ग्राहक : साहब, मेरे पास तो पचास रुपये ही हैं।

गिरधारी लाल : लाओ, सात दिन बाद आना दादा।

ग्राहक : ठीक है साहब। **(ग्राहक चला जाता है)**

(फाइल बंद करके गिरधारी लाल बड़े साहब के केबिन में जाता है)।

गिरधारी लाल : सर...।

बड़े साहब : आओ गिरधारी लाल, आओ। सब ठीक तो है।

गिरधारी लाल : साहब राशन कार्ड का काम तो ठीक-ठाक चल रहा है, पर...

बड़े साहब : पर क्या? क्या हुआ गिरधारी लाल।

गिरधारी लाल : साहब, वो प्रदीप वर्मा नाम का एक व्यक्ति था। उसकी बीवी के नाम की बिल्डिंग परमीशन होनी थी। पहले मैंने आपको बताया भी था साहब।

बड़े साहब : तो फिर...

गिरधारी लाल : माया मैडम ने प्रदीप वर्मा को बिल्डिंग परमीशन देने से मना कर दिया है, जबकि मैंने आपसे पूछकर फाइल बनवाई थी।

बड़े साहब : क्यों मना कर दिया है?

गिरधारी लाल : मालूम नहीं साहब, बड़ी सिरफिरी मैडम है। आप खुद ही पूछ लीजिए। जैसे भी हो करवा दीजिए। बड़ा गरीब इंसान है बेचारा।

बड़े साहब : ठीक है गिरधारी लाल, मैं मैडम से बात करूँगा, क्या समस्या है? तुम जाओ।

गिरधारी लाल : साहब, उसकी बिल्डिंग परमीशन हो जाए, बस इतनी ही गुजारिश है मेरी।

बड़े साहब : ठीक है, गिरधारी लाल। मैं सब समझता हूँ, जानता हूँ। अब तुम जाओ। **(गिरधारी लाल चला जाता है)।**

(चौथा दृश्य)

(माया देवी का घर। माया डोर बैल बजाती हैं, अंदर से आवाज आती है)

कोमल : **(अंदर से)** कौन है?

माया देवी : मैं हूँ बेटी। **(कोमल दरवाजा खोलती है)।**

मुस्कान : मम्मी आ गई, मम्मी आ गई। मम्मी हमारे लिए क्या लाई हो?

माया देवी : **(उखड़े हुए स्वर में)** कुछ नहीं बेटा।

कोमल : मम्मी, आज कुछ परेशान हो?

मम्मी : हाँ बेटा, ना जाने कैसे-कैसे लोग होते हैं, कागजात रखते नहीं हैं और दूसरों से फालतू की बातें करते हैं।

कोमल : लेकिन हुआ क्या मम्मी?

मम्मी : कुछ नहीं बेटी, ये दुनिया के लोग ही निरालें हैं, हर काम रिश्वत से करना चाहते हैं।

कोमल : मम्मी, आप शांत हो जाइए। मैं आपके लिए पानी लेकर आती हूँ। **(कोमल पानी लेकर आती है)।**

कोमल : **(पानी देते हुए)** ये लो मम्मी पानी। अब बताओ ना मम्मी क्या हुआ?

मम्मी : ऑफिस में एक व्यक्ति मुझे रिश्वत दे रहा था। मैंने रिश्वत लेने से मना किया तो। बहस करने लगा।

कोमल : तो फिर मम्मी।

मम्मी : फिर गिरधारी लाल जी के पास जोर-जोर से चिल्लाने लगा। मेरी फाइल बनवा दी, फिर परमीशन क्यों नहीं निकला रहे हो? गिरधारी लाल ने समझाया-बुझाया तब गया।

मुस्कान : मम्मी, पुलिस को बुला लेना था।

मम्मी : अच्छा बेटा, फिर पुलिस क्या करती?

मुस्कान : अच्छी पिटाई करती मम्मी। फिर कभी आपसे कुछ नहीं बोलता।

मम्मी : हाँ बेटी, अगली बार से पुलिस बुला लेंगे। अब चलो, तुम्हें अपना होमवर्क करा दूँ।

कोमल : मम्मी, मैंने मुस्कान को उसका होमवर्क करा दिया है।

मम्मी : अच्छा बेटा। **(दोनों को लेकर अंदर चली जाती है)।**

(कार्यालय का दृश्य)

(तीन माह बाद कार्यालय में ग्राहक प्रदीप वर्मा गिरधारी लाल से)

ग्राहक : ये लो साहब पूरे बीस हजार रुपये हैं। **(लिफाफे में रखकर देता है)।**

गिरधारी लाल : और दस हजार रुपये?

ग्राहक : एक-दो रोज में कर दूँगा साहब। अब मेरा काम जल्दी कर दीजिएगा।

गिरधारी लाल : हम बैठे हैं, तो चिंता मत करो।

ग्राहक : तो मैं कब आ जाऊँ साहब?

गिरधारी लाल : सोमवार को आ जाइएगा।

ग्राहक : ठीक है साहब। अगर पहले हो जाए तो फोन कर दीजिएगा।

गिरधारी लाल : ठीक है वर्मा जी। अब ये समझिए कि आपका काम हो गया।

ग्राहक : तो मैं चलूँ साहब। नमस्कार।

गिरधारी लाल : नमस्कार।

(मोहन बाबू का प्रवेश)

मोहन बाबू : नमस्कार गिरधारी लाल जी।

गिरधारी लाल : नमस्कार मोहन बाबू जी।

मोहन बाबू : क्या बात है भाई, आज जल्दी कैसे आ गए?

गिरधारी लाल : मत पूछो यार। इस माया मैडम से तो मैं परेशान हो गया हूँ।

मोहन बाबू : अब क्या हुआ यार?

गिरधारी लाल : अरे भाई, एक दिन की बात हो तो बताएँ। हर रोज कोई नया बखेला।

मोहन बाबू : लेकिन हुआ क्या है यार।

गिरधारी लाल : अरे हम ग्राहकी बनाएँ और मैडम हैं तो डंडा लेकर खड़ी हैं। देखती ही नहीं कि मोटा मुर्गा है। हलाल कर लें, खुद भी खाएँ और हमें भी खाने दें।

मोहन बाबू : हाँ गिरधारी लाल जी, दिन-भर तो लोग उनसे बहस करते रहते हैं?

गिरधारी लाल : ये भी नहीं सोचती कि अपना क्या जा रहा है। हमें तो रुपये मिल रहे हैं ना। तो बस।

मोहन बाबू : यार राधेश्याम बाबू जी तो बिना रुपये के बात ही नहीं करते थे। उन्होंने तो हमें सिखाया। बीवी को कुछ नहीं सिखाया।

गिरधारी लाल : **(हँसते हुए)** यार ऑफिस से फुरसत मिली हो तब ना।

मोहन बाबू : लेकिन भाभी जी को हमें एक बार समझाना चाहिए। शायद कुछ बात बन जाए।

गिरधारी लाल : तुम कहते हो तो आज ही बात कर लेते हैं। **(गुप्ता जी और माया देवी दोनों का प्रवेश)।**

मोहन बाबू और गिरधारी लाल : नमस्कार गुप्ता जी, नमस्कार भाभी जी। **(गुप्ता जी और माया देवी नमस्कार करते हैं)।**

मोहन बाबू : अरे आओ गुप्ता जी बैठो, जरा हमसे भी बातें कर लो।

गिरधारी लाल : भाभी जी, आप कहाँ जा रही हैं। आप भी बैठिए।

मोहन बाबू : भाभी जी, वो प्रदीप वर्मा की फाइल का क्या हुआ?

माया देवी : भाई साहब बड़ा बेतुका इंसान था। मुझे रिश्वत दे रहा था।

मोहन बाबू : दुनिया आजकल ऐसी ही है भाभी जी। हर कोई रिश्वत ले रहा है। वैसे हम भी लेते हैं और हमारे गिरधारी लाल जी भी लेते हैं। यहाँ तक कि बड़े-बड़े अफसर भी रिश्वत लेकर काम करते हैं। इसलिए आप भी अपना रवैया बदलिए भाभी जी।

गिरधारी लाल : भाभी जी पता है आपको। रोज आपकी शिकायतें बड़े साहब के पास जा रही हैं।

मोहन बाबू : दिन-भर आपको काम निपटाने में लग जाता है। अरे जो रुपये दें, उसका काम करिए, वरना फाइल पड़ी रहने दीजिए। क्या जरूरत है छानबीन कर आगे बढ़ाने की।

माया देवी : लेकिन भाई साहब ये तो गलत है।

गिरधारी लाल : कुछ गलत नहीं है भाभी जी। हम वही कर रहे हैं, जो जनता चाहती है। हम तो जनता के सेवक हैं।

मोहन बाबू : हाँ भाभी जी गिरधारी लाल जी ठीक कह रहे हैं। हमें भी ये सब राधेश्याम बाबू जी ने ही सिखाया है।

माया देवी : ठीक है भाई साहब। मैं कोशिश करूँगी बदलने की। अच्छा चलूँ भाई साहब। **(माया देवी अपनी टेबल पर आकर बैठ जाती हैं। एक-दो फाइल उठाकर देखती हैं। फिर सोचने लगती हैं)।**

माया देवी : **(दिमाग में मोहन बाबू के शब्द गूँजने लगते हैं हमें भी यह सब राधेश्याम बाबू जी ने सिखाया...)।** नहीं मेरे पति ऐसे नहीं थे। वे रिश्वत नहीं लेते थे, और थे भी तो मैं ऐसा नहीं करूँगी। हर्गिज ऐसा नहीं करूँगी। मैं रिश्वत लेकर काम नहीं करूँगी। मर जाऊँगी, लेकिन गलत काम नहीं करूँगी। **(टेबल पर सिर रख लेती है)।**

(पाँचवाँ दृश्य)

(6 माह बाद कार्यालय में कर्मचारियों का वार्तालाप चल रहा है)।

मोहन बाबू : गुप्ता जी मुझे नहीं लगता कि माया देवी बिल्डिंग परमीशन और अतिक्रमण विभाग को संभाल सकेंगी।

गुप्ता जी : मोहन बाबू, आप ठीक कह रहे हो। इसे तो चतुर-चालाक व्यक्ति ही संभाल सकता है।

मोहन बाबू : हमारे गिरधारी लाल जी जैसे।

गुप्ता जी : हम भी फेल हो जाएँगे, लेकिन गिरधारी लाल जी नहीं।

मोहन बाबू : जनता की नाड़ी जानते हैं।

गुप्ता जी : जनता के सेवक जो हैं। **(ग्राहकों की आवाजाही शुरू हो जाती है)।** माया देवी के पास भी भीड़-भाड़ है।

गुप्ता जी : कल बड़े साहब से भी गिरधारी लाल जी मिले थे।

मोहन बाबू : वही प्रदीप वर्मा की बिल्डिंग परमीशन के संबंध में।

गुप्ता जी : हाँ पूरे तीस हजार रुपये का फायदा है।

मोहन बाबू : और गिरधारी लाल जी छोड़ने वाले नहीं।

गुप्ता जी : क्यों छोड़े? जब खुद लक्ष्मी चलके आए तो।

मोहन बाबू : मुझे लगता है गिरधारी लाल जी ने रुपये ले लिए हैं। तभी तो ज्यादा ध्यान दे रहे हैं।

गुप्ता जी : अरे मोहन बाबू ये तो कुछ नहीं, राधेश्याम बाबू जी तो नोंच भी लेते थे और पचासों चक्कर भी लगवाते थे। **(तभी चपरासी माया मैडम के पास जाता है)।**

राम सेवक (चपरासी) : मैडम, साहब ने आपको बुलाया है।

माया देवी : ठीक है, मैं आती हूँ। **(माया फाइलों को रखकर जाती है)।**

माया देवी : **(बड़े साहब से)** नमस्ते सर।

बड़े साहब : **(फाइल देखते हुए)** माया जी। **(साहब फाइल बंद करके)** तो हाँ माया जी क्या समस्या है। प्रदीप वर्मा की फाइल में।

माया देवी : सर, सरकारी जमीन पर अतिक्रमण किया है।

बड़े साहब : तो आप खुद निर्णय सुना देंगी कि परमीशन नहीं मिलेगी।

माया देवी : सर, मैंने तो यही कहा कि बिल्डिंग परमीशन नहीं मिलेगी।

बड़े साहब : **(गुस्से में)** वही तो हम कह रहे हैं। बिना फाइल बढ़ाए आप कैसे कह सकती हैं कि किसको परमीशन मिलेगी और किसको नहीं।

माया देवी : सॉरी सर।

बड़े साहब : गिरधारी लाल जी ने मुझे फाइल दिखाई थी। मैंने अनुमति दे दी है। आज वर्मा जी आएँगे, उन्हें परमीशन कॉपी दे दीजिएगा।

माया देवी : ठीक है सर **(माया मैडम चलने लगती है)।**

बड़े साहब : और सुनिए, गलती से खुद निर्णय मत दीजिए।

माया देवी : लेकिन सर मैं तो ईमानदारी से काम कर रही हूँ।

बड़े साहब : फिर भी शिकायतें आ रही हैं।

माया देवी : सर वो प्रदीप वर्मा...मुझे रिश्वत दे रहा था। मुझसे अभद्र व्यवहार कर रहा था।

बड़े साहब : माया देवी भ्रष्टाचार की आग में हर कर्मचारी को पास होना पड़ता है। आप भी अपना तरीका बदल लीजिए।

माया देवी : सर मैं किसी भी तरह रिश्वत लेकर काम नहीं करूँगी।

बड़े साहब : यदि हमारी शिक्षा का हम सही मूल्य नहीं निकाल सकते तो बेकार है नौकरी करना।

माया देवी : सर, हम पढ़-लिखकर यही करेंगे तो धिक्कार है शिक्षा की डिग्री को।

बड़े साहब : तो फिर माया देवी आप अपनी डिग्रियों को चार दीवारी में सुरक्षित रखिए।

माया देवी : सर, मेरी शिक्षा मुझे गलत काम करने को नहीं कहती। यदि आपकी शिक्षा आपको गलत काम करने को कहती है, तो आप जरूर करिए। मैं जा रही हूँ। ऐसी नौकरी मुझे नहीं करनी। **(माया देवी गुस्से से कार्यालय से निकल जाती है)।**

बड़े साहब : **(कुर्सी से खड़े होकर)** रुकिए माया देवी, रुकिए। मेरी बात सुनिए। **(बोलते रह जाते हैं, माया देवी घर चली जाती है)।**

(छठा दृश्य)

(माया देवी घर का दरवाजा खोलती है, बैग पटक कर सोफे पर बैठ जाती है, मन ही मन सोचने लगती है।)

माया देवी : मेरे पति भी भ्रष्टाचार करते थे, वे भी रिश्वत लेते थे। **(फिर उसके दिमाग में कार्यालय के लोगों के शब्द**

गूँजने लगते हैं।...हमें भी यह सब राधेश्याम बाबू जी ने ही सिखाया है...बड़े साहब के शब्द-माया जी आप अपना तरीका बदल लीजिए...भ्रष्टाचार की आग में हर कर्मचारी को पास होना पड़ता है)।

माया देवी : नहीं। मैं अपना तरीका नहीं बदलूँगी। चाहे जो भी हो मैं अपनी जान दे दूँगी, लेकिन रिश्वत नहीं लूँगी। **(कॉपी पेन उठाकर पत्र लिखती है, जिसका वाचन भी होता चला जाता है)।** मैं आत्महत्या कर रही हूँ, क्योंकि मेरे सहकर्मी मुझे भ्रष्टाचार की जिंदगी जीने को मजबूर कर रहे हैं। मुझे अपना तरीका बदलने को कहते थे, कहते थे तुम्हारे पति ने ही हमें यह सब सिखाया है। सहकर्मियों और ग्राहक सभी का व्यवहार मुझे भ्रष्ट बनाने पर तुला हुआ था। लेकिन मैं नहीं चाहती कि पुलिस इनके खिलाफ कोई भी कार्यवाही करे। मेरी शिक्षा मुझे यह नहीं सिखाती। मैं यह पत्र विशेषकर इसलिए लिख रही हूँ कि मेरी बेटियों की अनुकंपा नियुक्ति कतई न करें, जिससे ये भ्रष्टाचार की आग से बच सकें।

- माया देवी

(पत्र लिखने के पश्चात् बक्से से जहर निकालती है और शीशी से जहर खाने का प्रयास करती है। तभी बड़े साहब का प्रवेश होता है और माया देवी का हाथ पकड़ लेते हैं)

बड़े साहब : (हाथों को झंझोड़ते हैं, जिससे जहर की शीशी नीचे गिर जाती है) ये क्या कर रही हो माया देवी।

माया देवी : सर, मुझे मर जाने दीजिए, मैं भ्रष्ट जिंदगी से उब गई हूँ। मैं घुट-घुटकर जीना नहीं चाहती।

बड़े साहब : बस इस कारण तुम अपनी जान देना चाहती हो। इसके अलावा कुछ विचार नहीं किया। तुम जैसी शिक्षित महिला ये कदम उठाएगी तो और महिलाएँ क्या करेंगी?

(दोनों बेटियों का स्कूली यूनीफार्म में प्रवेश, बच्चों की ओर इशारा करते हुए) तुम्हें इन बच्चों का जरा भी खयाल नहीं आया। ये कैसे जिएँगे? क्या करेंगे? किसको अपनी माँ कहेंगे?

माया देवी : सर, ग्राहक कर्मचारियों और सभी तरफ के व्यवहार से मैं भ्रष्टाचार की आग में जिंदा लाश बन गई थी, इसलिए मुझे इसके अलावा कोई विचार नहीं आया।

बड़े साहब : मुझे मालूम है मेरे व्यवहार से भी। लेकिन तुम्हारे दृढ़ विचारों ने तो मेरी आत्मा को झकझोर दिया। मेरी आँखें खोल दीं। मुझे तुम्हारे विचारों से बड़ा आत्मबल मिला। लेकिन तुम अपनी शिक्षा के विरुद्ध कदम उठाने जा रही थी। मैंने ये कभी नहीं सोचा था कि तुम जैसी दृढ़ विचारों वाली महिला आत्महत्या की देहरी पर खड़ी हो जाएगी। वो तो तुम बिना बात समझे मेरे ऑफिस से चली आई तो मुझे बड़ी ग्लानि हुई, इसलिए मैंने सोचा क्यों न मैं आपसे घर आकर बात करूँ, और मैं तुरंत निकला। तुम्हारी स्थिति देखकर तो मैं दंग ही रह गया।

माया देवी : सर, मैं भ्रष्टाचार की आग में जल चुकी हूँ।

बड़े साहब : अगर तुम भ्रष्टाचार की आग में जल चुकी हो तो मैं भी इस आग में भुन चुका हूँ और आज हम संकल्प लेते हैं कि हम भ्रष्टाचार को न सहेंगे और न ही किसी को भ्रष्टाचार की आग में जलने देंगे। **(बच्चों की ओर**

स्नेहपूर्ण देखकर) 'आओ बच्चो जिंदगी को जिएँ अपने अंदाज में'।

बच्चे : जी अंकल। **(सभी के चहरों पर मुस्कान तैर जाती है)।**

(पर्दा गिरता है) ❍

सच्चा जरूरतमंद

◈ **आरती दुबे**
सन्मति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
रेसीडेंसी एरिया, इंदौर, मध्य प्रदेश

पात्र-परिचय

राजा	:	सेनानायक
मंत्री	:	फकीर
सिपाही	:	गुरु
दरबान		

(पहला दृश्य)

(नेपथ्य में शोरगुल 'राजा घायल हो गए'। ऐसा समाचार सुनकर एक सैनिक दौड़ता हुआ दरबान के पास आता है। एक दरबान प्रहरी के वेश में मंच पर खड़ा है। सिपाही को दौड़कर आते देख दरबान उसकी ओर बढ़ता है)

सिपाही : अरे भाई सुना है राजा घायल हो गए हैं, क्या यह सच है?

दरबान : **(व्याकुल होकर)** हाँ-हाँ, तुमने सही सुना है, महाराज घायल हो गए हैं।

सिपाही : परंतु घायल होने की वजह क्या है, वे तो हाथी-घोड़े लाव-लश्कर के साथ पड़ोसी राज्य को फतह करने निकले थे। प्रजा उन्हें देखने को सड़कों पर फूल बिछाए थी, फिर अचानक ऐसा क्या हुआ होगा?

दरबान : बस यही समझ नहीं आ रहा। बादशाह सलामत तो सजे-धजे अपने हौदे पर सीना तानकर शान से बैठे थे कि अचानक।

सिपाही : **(उत्सुक होकर)** अचानक क्या?

दरबान : अचानक कहीं से एक सिक्का सन्नाता हुआ आया और सीधा शहंशाह की नाक पर जा लगा।

सिपाही : फिर...।

दरबान : बादशाह सलामत दर्द से तिलमिला उठे। उन्हें वापस महल पहुँचाया गया। सभी उनकी तीमारदारी में जुट गए। लेकिन दर्द है कि कम होने का नाम नहीं ले रहा।

सिपाही : किसने किया होगा यह?

दरबान : सुना है कोई फकीर है। उसे कुछ ही देर में राज दरबार में शहंशाह के सामने पेश किया जाएगा।

सिपाही : अच्छा तब तो वहीं चलते हैं, देखें तो कोन है ये फकीर। **(दोनों जाते हैं)।**

(दूसरा दृश्य)

(राजा का दरबार, घायल राजा नाक पर रुमाल रखे कराहता हुआ बैठा है। दरबान पंखा झल रहा है। मंत्री और सेनानायक क्रोध से उबल रहे हैं। इतने में सिपाही के साथ फकीर का प्रवेश)।

सिपाही : शहंशाह सलामत रहें, फकीर हाजिर है **(दोनों झुककर सलाम करते हैं)।**

सेनानायक : **(दर्द भरे स्वर में)** अच्छा तो तुम हो गुस्ताख, बादशाह सलामत पर हमला करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?

फकीर : **(आत्मविश्वास के साथ)** शहंशाह सलामत रहें। मैंने हुजूर को चोट पहुँचाने वाला कोई कार्य नहीं किया।

मंत्री : तुम्हारे फेंके हुए सिक्के से ही शहंशाह घायल हो गए, देखते नहीं! कैसे पीड़ा से तिलमिला रहे हैं हुजूर।

फकीर : **(हाथ जोड़कर)** मैं तो वह सिक्का हुजूर की नजर कर रहा था।

सेनापति : **(क्रोध में भरकर)** कोई वस्तु फेंककर नजर की जाती है और वह भी इतने बड़े शहंशाह को एक सिक्का!

मंत्री : हुजूर, इसका तो सर कलम कर देना चाहिए। **(राजा की ओर याचना भरे भाव से बढ़ता है और अपनी तलवार की मूठ पकड़ता है)।**

फकीर : गुस्ताखी माफ हो सरकार। मुझे हकीकत बयाँ करने का मौका दीजिए।

(राजा हाथ से इशारा करता है, फकीर सिर झुकाता है)

फकीर : हुजूर, मेरे भक्त ने मुझे यह रुपया दिया था। मैंने इसे अपने गुरु को समर्पित कर दिया परंतु मेरे गुरु ने कहा कि यह सिक्का किसी सच्चे जरूरतमंद को दे दो। रुह में नश्तर की तरह चुभता रहा। सुबह से सड़क किनारे खड़ा होकर सच्चे जरूरतमंद को ढूँढ़ रहा था कि कोई मिले तो मैं अपना बोझ हल्का करूँ।

सेनानायक : तो फिर तुमने इसे हुजूर पर फेंका क्यों?

फकीर : **(सहम कर)** सच मानिए हुजूर, मैंने बहुत खोजा परंतु आप जैसा सच्चा जरूरतमंद मुझे कोई नजर नहीं आया।

मंत्री : **(तैश में आकर)** क्या बकते हो?

(राजा शांत रहने का इशारा करते हैं)

फकीर : महाराज, परंतु आप इतनी ऊँचाई पर बैठे थे कि मुझे सिक्का आपकी ओर उछालना पड़ा। हुजूर! जरूरतमंद को इतना ऊँचा भी नहीं बैठना चाहिए कि मददगार का हाथ उस तक न पहुँचे और फिर हुजूर आपके पास कोई कटोरा भी नहीं था। इसलिए रुपया आपकी नाक पर जा लगा। महाराज, मेरा मकसद आपकी मदद करना था आपको चोट पहुँचाना नहीं।

राजा : **(संयत स्वर में)** फकीर! तुमने मुझे जरूरतमंद और पैसे का मोहताज क्यों समझा। इसके पीछे कोई कारण तो होगा। तुम तो मेरी रियासत और शानोशौकत से अच्छी तरह वाकिफ हो।

फकीर : हुजूर! मैंने तो आप ही के सिपह-सालारों से सुना था कि आप पड़ोस की रियासत पर चढ़ाई करके उसे अपनी रियासत में शामिल करने की मंशा से लाव-लश्कर लेकर जा रहे हैं।

शहंशाह! आपकी नगरी में मुझे बहुत से जरूरतमंद दिखे पर उनकी जरूरतें छोटी और मामूली थीं आप जैसा रौब-दाब वाला बड़ा जरूरतमंद पहली बार देखा।

हुजूर! जो अपनी ख्वाहिश के लिए दूसरों को नेस्तनाबूद करने चल पड़े, और अपने मकसद के लिए अपने चहेतों की जिंदगी भी कुर्बान करने पर तुला हो उससे बड़ा और सच्चा जरूरतमंद कौन हो सकता है?

मंत्री : खामोश गुस्ताख! पकड़ लो इस राजद्रोही को। **(सिपाही और सेनापति फकीर की ओर बढ़ते हैं)।**

राजा : **(हाथ से रुकने का इशारा करता है)** फकीर हम तुम्हारे गुरु से मिलना चाहेंगे।

फकीर : हुजूर, वे मेरे साथ ही थे। मुझे संकट में देखकर यहाँ तक चले आए।

राजा : इनके गुरु को आदर से बुलाया जाए। **(सिपाही जाता है)।**

गुरु : **(गुरु का प्रवेश। सिपाही उन्हें लेकर आता है। गुरु का आदाब करके राजा उनसे पूछते हैं)।**

राजा : गुरुदेव, राजा का कर्तव्य है राज्य का विस्तार करना, फिर मैं गलत किस तरह साबित होता हूँ।

गुरु : राजन, मनुष्य को ईश्वर ने परस्पर हिलमिलकर रहने के

लिए बनाया है, एक-दूसरे पर शासन करने के लिए नहीं। एक राजा की यह भावना होनी चाहिए कि

मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे।
दीन-दुखी जीवों पर मेरे उर से करुणा स्रोत बहे।।

राजा : यदि पड़ोसी राज्य शत्रु हो तो?

गुरु : राजन्! उन्हें मित्रता का संदेश भेजिए। प्रेम समस्त जीवों का वशीकरण मंत्र है।

राजा : और रियासत के लिए मेरा धर्म क्या है गुरुदेव?

गुरु : धर्मस्य मूलं दया। लोक कल्याण में दया की भावना चाहिए राजन्! यही तुम्हें यशस्वी बनाएगी।

धरी रहेगी संपदा पड़ी रहेगी काय।
खड़े रहेंगे कुटुम्बजन खाली हाथों जाए।।

राजा : आज तक के किए पर पछतावा हो रहा है गुरुवर! उसके लिए क्या उपाय है?

गुरु : अणु से पूर्ण की ओर जाइए राजन्!

छोटे-छोटे संकल्पों से मन का मैल मिटाइए राजन्,
सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह के अणुव्रत को अपनाइए राजन्।
जो जन अणुव्रत धर्म का पालन करेगा रीति से,
संसार सब झुक जाएगा उसके पगों पर प्रीति से।

(सभी जन अणुव्रत धर्म की जयकार करते हैं)

(पर्दा गिरता है) ❍

ज़माना बदल गया

◈ **संतोष दुआ**
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, तलवंडी
कोटा, राजस्थान

पात्र-परिचय

मल्होत्रा	:	गाँव के प्रधान
लता	:	मल्होत्रा जी की पत्नी
पायल, लीना	:	मल्होत्रा जी की पुत्रियाँ
हिमांशु	:	मल्होत्रा जी का पुत्र
अंजली	:	अध्यापिका
दादा जी	:	मल्होत्रा जी के पिताजी
दादी	:	मल्होत्रा जी की माता जी
अमित	:	मल्होत्रा जी का दोस्त
डॉक्टर	:	शहर के मशहूर डॉक्टर

(पहला दृश्य)

(मल्होत्रा जी का घर, सामने विशाल बरगद का वृक्ष, वृक्ष के नीचे चौपाल लगी है, जहाँ सभी व्यक्ति कुछ समस्याओं के बारे में चर्चा कर रहे हैं, जिसको उन्हें गाँव के प्रधान को अवगत कराना है। सुबह का वक्त है, सूरज अपनी रंगीन किरणों के साथ उदय हो चुका है। पक्षियों की मधुर वाणी से वातावरण संगीतमय हो चुका है, सामने मंदिर से घंटी बजने की आवाज आ रही है)

मल्होत्रा जी : (घर में पुरानी लकड़ी की कुर्सी पर बैठे हुए

समाचार-पत्र को पढ़ रहे हैं। बीच में ही श्रीमती जी से पूछते हैं) चाय मिलेगी या नहीं?

(पीछे से धीमे स्वर में कुछ आवाज सुनाई देती है)

लता : ला रही हूँ, बस थोड़ी देर रुकिए।

दादी : **(घूँघट नीचे करके)** आजकल की बहुएँ हर काम में देरी लगाती हैं। हमारे जमाने में तो सूर्योदय होते ही बुजुर्गों को चाय-नाश्ता मिल जाता था।

(लता चाय-नाश्ता लाती है)

दादाजी : सब लोग आ जाओ, चाय-नाश्ता आ गया। **(तभी सभी आ जाते हैं और नाश्ता करना प्रारंभ करते हैं)**

हिमांशु : तुम दोनों धीरे-धीरे क्यों खा रही हो, स्कूल नहीं जाना क्या?

पायल : जाना है पर इतनी जल्दी भी क्या है, विद्यालय तो साढ़े नौ बजे खुलता है।

लीना : हिमांशु, तुम अपना गृहकार्य खुद क्यों नहीं करते। पायल कब तक किया करोगी।

हिमांशु : जी दीदी, अब मैं खुद करूँगा।

(दादी बच्चों की बातों को सुन-सुनकर परेशान हो रही थी। उनका ध्यान नहीं लग पा रहा था। वे अचानक बोल उठी)

दादी : तुम दोनों लड़कियाँ आज के बाद विद्यालय नहीं जाओगी।

सभी बच्चे : क्यों **(एक साथ)।**

दादी : हिमांशु बेटा आज से सिर्फ तुम विद्यालय जाओगे। ये दोनों पढ़-लिखकर क्या करेंगी, आखिर शादी के बाद ससुराल में इन्हें चूल्हे ही तो फूँकने हैं। अब ये घर के काम में हाथ बँटाएँगी।

पायल-लीना : **(दोनों एक साथ)** हमें नहीं करनी शादी।

लता : अरे! माँ जी अभी तो घर का काम करने के लिए मैं हूँ न और फिर ये दोनों स्कूल जाएँगी तो कुछ दुनियादारी समझेंगी।

दादी : आजकल के बच्चे बहुत शरारती हो गए हैं। पता नहीं कहना क्यों नहीं मानते।

लता : ये दोनों बच्चियाँ तो कहना मानती हैं। सारा काम करती हैं। हिमांशु ही शैतान हो रहा है, कहना ही नहीं मानता।

दादी : हिमांशु तो अभी बच्चा है, उसे कुछ मत कहो।

पायल : हाँ दादी, हिमांशु शैतानी करे तो बच्चा और हम करें तो...

(पायल की बात को काटते हुए)

दादाजी : पायल यही संस्कार तुम्हें मिले हैं, ये भी नहीं पता की बड़ों से कैसे बात की जाती है।

लीना : पायल कमरे में चलो और पढ़ाई करो।

(दोनों कमरे में चली जाती हैं)

मल्होत्रा जी : **(दादीजी से)** मैं खेत की ओर जा रहा हूँ। पता नहीं मजदूरों ने सही रौपाई की है या नहीं।

(दूसरा दृश्य)

(दोपहर 12 बजे। सभी बच्चे खाना खा रहे हैं। दादी भी वहीं बैठे माला जप रही है। अमित का प्रवेश)।

बच्चे : नमस्कार चाचाजी।

अमित : नमस्कार बेटा, क्या बात है आज आप लोग विद्यालय नहीं गए।

हिमांशु : स्वास्थ्य ठीक नहीं है चाचाजी, इसलिए आज विद्यालय नहीं गया।

अमित : (पायल और लता से) बेटा, आप लोग क्यों नहीं गए?

(तभी दादी बोलने लगती हैं)

दादी : लड़कियाँ हैं, ससुराल जाएँगी या पढ़ाई करेंगी। घर का काम सीख रही हैं, मैंने इनकी पढ़ाई बंद करवा दी है।

अमित : लेकिन अब जमाना बदल चुका है, माँ जी।

हिमांशु : हाँ दादी। चाचा सही ही तो कह रहे हैं।

दादी : (डाँटते हुए) चुप कर तू, सिर्फ तुम ही कल से विद्यालय जाओगे और अब मुझे किसी की कोई भी बात नहीं सुननी है।

(तभी मल्होत्रा जी दस्तक देते हैं)

मल्होत्रा जी : ये सब क्या हो रहा है?

दादी : कुछ नहीं बेटा, मैं तो ये कह रही थी कि लड़कियों को घर का काम सिखाओ वरना बाद में बिरादरी वालों से तुम्हें क्या-क्या सुनना पड़ेगा और फिर...

(यह कहते-कहते अचानक दादी को दिल का दौरा पड़ जाता है पायल जल्दी-जल्दी कमरे में जाती है और अंदर से प्राथमिक उपचार पेटी से कुछ दवाइयाँ निकालती है और दादी को खिलाती है)

(तीसरा दृश्य)

(सायं 6 बजे का समय। चिकित्सक साहब आते हैं, दादी के शरीर में स्टेटोस्कोप लगाकर जाँच करते हैं)

चिकित्सक : अभी तो सब ठीक है। घबराने वाली कोई बात नहीं है, लेकिन अगर पायल बेटी समय पर सही दवाइयाँ न देती तो माँ जी की जान भी जा सकती थी।

(अध्यापिका का प्रवेश)

अंजली : मल्होत्रा जी, हमें आपसे ये उम्मीद नहीं थी। आप तो गाँव के प्रधान हैं, अगर आप ही अपनी बेटियों को

पाठशाला नहीं भेजेंगे तो गाँव वाले भी ऐसा ही करेंगे और फिर पूरे गाँव की लड़कियाँ अशिक्षित रह जाएँगी। फिर हमारा समाज कभी भी शिक्षित समाज नहीं बन पाएगा।

(दादी को होश आ जाता है, वह धीमे स्वर में बोलती है)

दादी : प्यारी बेटियो! मुझे माफ करना। मैं ही नहीं समझ पाई कि बेटियाँ किसी बेटे से कम थोड़े होती हैं। जमाना बदल चुका है, हमें भी अपनी रूढ़िवादी सोच बदलनी होगी, तभी समाज सुसंन्न होगा। मुझे क्षमा करना मेरे बच्चो।

पायल और लीना : धन्यवाद दादी हमें पाठशाला भेजने के लिए।

(सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार : मित्रों, आजकल 21वीं सदी में भी कई क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ बालिकाओं को शिक्षा से दूर रखा जाता है। हम इस नाटक के माध्यम से यह संदेश देना चाहते हैं कि अगर लड़कियाँ शिक्षित होंगी तो वह पूरे समाज को शिक्षित करेंगी। इसलिए हमें स्त्री शिक्षा के महत्त्व को समझना चाहिए और बालिकाओं को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

(पर्दा गिरता है) ❍

संकल्प

◈ **राजेश शर्मा**
सर पदमपत सिंघानिया स्कूल
नया नोहरा, बारां रोड, कोटा, राजस्थान

पात्र-परिचय

कृष्णमूर्ति वैंकट रंगानाथन	:	परिवार में सबसे बड़े
आनंदम्	:	कृष्णमूर्ति का बेटा
वैशाली	:	आनंदम् की पत्नी
माणिक	:	आनंदम् व वैशाली का पुत्र
रुक्मिणी	:	आनंदम् व वैशाली की पुत्री
सुखीराम	:	श्वेत वस्त्र पहने पुष्पों से सुसज्जित जिसके एक हाथ में शंख है
दुःखीराम	:	काले वस्त्र पहने, सर पर सींग, हाथ में डंडा जिस पर मानव सिर हड्डियों का लगा हुआ है
3 पुलिस वाले	:	पुलिस की वर्दी में
2 सहेलियाँ	:	रुक्मणी की मित्र
3 या 4 दोस्त	:	माणिक के साथ पढ़ने वाले मित्र

ठेकेदार तथा उसके साथी।
लालचिन, कुसंगति, अवज्ञा (तीनों लड़कियाँ)

(मंच पर प्रकाश उभरता है। श्वेत वस्त्रों में पुष्प से सुसज्जित सुखीराम का शंख बजाते हुए मंच पर प्रवेश। उसके पीछे-पीछे अन्य सभी कलाकारों का

प्रवेश, केवल दुःखीदास मंच पर नहीं आता। शंख ध्वनि के पश्चात् सभी कलाकार एक स्वर में गाते हैं)

सभी : सारे जहाँ में चमका, एक नाम है हमारा।
संकल्प से जुड़ें सब, अणुव्रत है ये हमारा।।
सीचें धरा को तप से, गौरव बढ़े हमारा।
पाखंड दूर हों सब, सुचरित्र हो हमारा।।
संघर्ष से भी आगे, हो अडिग प्रयास हमारा।
जीवन हो सबका रोशन, संकल्प ये हमारा।
अणुव्रत आचार संहिता, आधार है हमारा।
हर पुष्प की महक से, महके जहाँ हमारा।।
सारे जहाँ में....
(सुखीराम को छोड़कर सभी मंच से गाते-गाते प्रस्थान कर जाते हैं)

सुखीराम : प्रणाम। अणुव्रत के प्रांगण में बैठे समस्त गुरुओं और अभिभावकों को मेरा प्रणाम। मैं हूँ सुखीराम। सुखीराम जहाँ जाता है वहाँ सुख ही सुख बरसता है, और जहाँ सुख होता है वहाँ शांति और उन्नति अपने आप खिंचे चले आते हैं। क्योंकि इस सुखीराम का काम है लोगों को सुखी होने की राह दिखाना।

दुखीदास : **(ताली बजाते हुए प्रवेश)** वाह भाई वाह! आजकल तो लोग अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बन जाते हैं। करो-करो अपने मुँह से खुद अपनी तारीफ करो।

सुखीराम : अरे दुखीदास तुम! तुमसे मना किया था ना यहाँ मत आना। बिना बुलाए चले आए।

दुखीदास : हमें बुलाने के लिए निमंत्रण की आवश्यकता नहीं, हम तो मनमौजी हैं। जहाँ इच्छा करती है चले आते हैं।

सुखीराम : बड़े ही बेशर्म हो, बिना बुलाए चले आते हो।

दुखीदास : जहाँ सुख होगा वहाँ दुःख को भी तो आना पड़ेगा।

सुखीराम : क्यों भाई, क्यों आना पड़ेगा, कोई जबरदस्ती है। चलो जाओ यहाँ से।

दुखीदास : मुझे भगाकर अपने आपको शक्तिशाली साबित करना चाहते हो।

सुखीराम : इसमें साबित क्या करना?

दुखीराम : तो प्रमाणित करो प्रमाणित।

सुखीराम : मैं संस्कारी हूँ, ज्ञानी हूँ, सत्य का पुजारी हूँ, सही समय पर सही कार्य करने वाला हूँ...क्या इतना कम है और तुम...तुम तो गुमराह करने वाले हो, पथभ्रष्ट करने वाले हो...भला मेरा और तुम्हारा क्या मेल?

दुखीदास : झूठ...सब झूठ है। मैं तो सिर्फ इतना जानता हूँ कि मैं तो उन लोगों के साथ रहता हूँ जो जीवन में मौज-मस्ती से जीते हैं।

सुखीराम : तुम असमय की मौज-मस्ती कराकर आदमी को अपेन वश में कर लेते हो...और फिर जिंदगी-भर वो दुःखी का दुःखी ही रहता है।

दुखीदास : बंद करो अपनी ये बकवास, तुम्हें कोई अधिकार नहीं मेरी बुराई करने का।

सुखीराम : (दर्शकों से) ये तो हमेशा मेरा पीछा करता ही रहता है। अब इससे माथा कौन मारे। इस नाटक का सूत्रधार होने के नाते मैं नाटक को आगे बढ़ाता हूँ और आपको ले चलता हूँ रंगनाथन जी के घर।

(एक विंग से सुखीराम अंदर चला जाता है। उसका पीछा करते हुए दुखीदास भी उसके पीछे चला जाता है। मंच पर प्रारंभ से ही बीच में सेंटर टेबल रखी है और उसके पास एक बड़ा सोफा और दो छोटे सोफे रखे हैं जो अब रंगानाथन के घर के कमरे के दृश्य को दर्शाता है। सबसे पहले मंच पर कृष्णमूर्ति वैंकट आते हैं तो मंच पर आकर

कुछ योगा करते हैं। अखबार हाथ में लेकर उनका बेटा आनंदम् आता है, सोफे पर बैठकर अखबार पढ़ता है। उसके बेटे और बेटी हाथ में किताब लेकर माणिक और रुक्मणी प्रवेश करते हैं। दोनों प्रातःकाल कुछ पढ़ रहे हैं। तभी आनंदम् की पत्नी वैशाली सभी के लिए चाय लेकर आती है। सबको चाय देती है। सब चाय पीते हैं। मंच पर केवल आनंदम् और कृष्णमूर्ति रह जाते हैं। आनंदम् के मोबाईल पर एक फोन आता है। वह मूकाभिनय में फोन पर कुछ बात कर रहा है, परेशान है तभी कृष्णमूर्ति उसे देखते हैं)

कृष्णमूर्ति : क्या हुआ आनंदम्?

आनंदम् : अप्पा, आप तो जानते हैं मेरे ऊपर कितनी जिम्मेदारी है। बड़ी-बड़ी ईमारतें, पुल सब कुछ मुझे ही देखने पड़ते हैं।

कृष्णमूर्ति : ये तो खुशी की बात है। इसमें मुँह लटकाने वाली कौन-सी बात है।

आनंदम् : आप नहीं जानते, जितने बड़े काम, उतने बड़े-बड़े फोन। रोज सुबह-सुबह लोग किसी-न-किसी बहाने रिश्वत देने के लिए फोन पे फोन करना शुरू कर देते हैं। **(दरवाजे की घंटी बजती है)** अब ये सुबह ही सुबह कौन आ गया, देखता हूँ।

(आनंदम् दरवाजा खोलता है, दो व्यक्ति प्रवेश करते हैं। एक के पास हैंड बैग छोटा है, और दूसरे के सर पर मिठाई की बड़ी-सी टोकरी रखी है। ऐसा लगता है बहुत वजनी है)

ठेकेदार : नमस्कार रंगानाथन जी।

आनंदम् : नमस्कार भाई नमस्कार। कहिए, सुबह ही सुबह आपने कैसे आने का कष्ट किया। और ये सब क्या है?

ठेकेदार : अजी कुछ भी नहीं, दीपावली का त्योहार आ रहा है। मैंने सोचा...हैं...हैं...थोड़ी आपकी सेवा ही हो जाए।

आनंदम् : अच्छा। आपकी इस सेवा के बदले मुझे क्या करना होगा।

ठेकेदार : कुछ भी नहीं साहब...हैं-हैं...वो दरअसल मैं कह रहा था कि ईमारत बनाने में बजरी और सीमेंट का अनुपात 5-1 की जगह 8-1 का हो जाए तो लाखों का मुनाफा हो सकता है। आधा आपका और बचा-कुचा हमारा।

आनंदम् : अच्छा। और उन ईमारतों में रहने वाले हजारों आदमी मारे जाएँगे उनका क्या?

ठेकेदार : अजी गोली मारिए उनको। आप अपने घर के बारे में सोचिए। आप भी इस टूटे-फूटे घर को बेचकर बड़ा-सा बंगला बनवाइए।

आनंदम् : क्या कहा तुमने, टूटा-फूटा घर। ये मेरी मेहनत और ईमानदारी से बना घर है। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ये बोलने की **(गुस्से में)** चलो निकलो यहाँ से **(दोनों को भगा देता है। फिर टोकरा उठाकर विंग में फेंकते हुए)** अपने इस टोकरे को भी लेकर जाओ। ये मुँह मसूर की दाल...बड़ा आया लाखों कमाने वाला।

कृष्णमूर्ति : तुम इतना नाराज क्यों होते हो। आजकल जमाना ही ऐसा है। आजकल अधिकांश लोग भ्रष्ट होते जा रहे हैं। लो तुम अखबार पढ़ो **(कहकर अंदर चला जाता है)**

(माणिक अपने पिता के लिए एक गिलास में पानी ट्रे में रखकर लाता है)

माणिक : ये लीजिए पिताजी पानी। **(आनंदम् पानी का गिलास हाथ में लेता है)** वो पिताजी मुझे 15 हजार रुपये चाहिए।

आनंदम् : **(15 हजार का नाम सुनकर पानी मुँह से बाहर निकल जाता है)** क्या 15 हजार!

माणिक : जी पिताजी।

आनंदम् : क्या करोगे इतने पैसे का?

माणिक : स्कूल का टूर जा रहा है कुल्लू-मनाली। मुझे भी जाना है। मेरे सभी दोस्त जा रहे हैं।

आनंदम् : देखो मैं अपनी इस ईमानदारी की नौकरी में तुम्हें इतने बड़े-बड़े टूर नहीं करा सकता।

माणिक : मेरे सभी दोस्त घूमकर आ चुके हैं। बस मैं ही आज तक नहीं गया।

आनंदम् : घूमने के लिए पूरा जीवन पड़ा है। और वैसे भी पहाड़ों पर जाकर करोगे क्या। मुझसे हजार रुपये ले लेना, आसपास के किसी जंगल में घूम आओ, थोड़ी डिस्कवरी लाइफ का भी मजा लो। **(जाने लगते हैं, फिर रुककर)** पूरे एक हजार रुपये दूँगा, वो भी इस महीने नहीं, अगले महीने **(मंच से चले जाते हैं। बेटा अपना-सा मुँह लेकर इधर-उधर घूमने लगता है, तभी उसके दो-तीन दोस्त आते हैं)**

दोस्त : माणिक, क्या यार दिन-भर घर में घुसकर पढ़ता रहता है।

दोस्त-2 : चल यार कुछ पार्टी-शार्टी करते हैं।

दोस्त-3 : फिल्म देखने चलते हैं, शाहरुख की नई लगी है।

दोस्त-4 : वाइन भी पीएँगे, बड़ा मजा आएगा।

माणिक : **(आश्चर्य से)** क्या? पागल हो तुम लोग। मेरे पिताजी फिल्म देखने तक मुझे नहीं जाने देते और तुम वाइन की बात करते हो।

दोस्त-1 : झूठ बोल देना कि तू हमारे यहाँ पढ़ने आ रहा है।

दोस्त-2,3व 4 : हम सब भी घर पर झूठ बोलकर आएँगे कि हम **(दोस्त 1 की तरफ इशारा करते हुए)** इसके घर पढ़ने जा रहे हैं।

माणिक : नहीं-नहीं...मैं घर पर झूठ नहीं बोलता, ये सब काम मैं नहीं कर सकता।

दोस्त-1 : ठीक है भाई तेरी इच्छा, तू तो कुएँ का मेंढक ही रहेगा। हम तो चले मौज-मस्ती करने। चलो साथियों। **(सभी दोस्त चले जाते हैं। उनकी बातों से हैरान माणिक भी मंच से चला जाता है। पुनः दरवाजे पर घंटी बजती है। रुक्मिणी दरवाजे को खोलने के लिए मंच पर आती हैं। उसकी सहेलियों का मंच पर प्रवेश)**

सहेली : हाय!

रुक्मिणी : हाय! कैसी हो तुम सब।

सहेली-2 : बहुत बढ़िया। हमने सोचा आज तुमसे, तुम्हारे घर चलकर मिला जाए।

रुक्मिणी : बहुत बढ़िया किया।

सहेली-1 : रुक्मिणी, कल मेरा बर्थ-डे है। मैंने तुम सब दोस्तों के लिए डिस्कोथेक बुक किया है, पूरी रात-भर पार्टी चलेगी, ये ले इनविटेशन **(रुक्मिणी हाथ बढ़ाकर इनविटेशन लेती)**

सहेली-3 : देखो तुम जरूर आना।

रुक्मिणी : सॉरी...मेरे घर वाले मुझे रात-भर बाहर रहने की अनुमति कभी नहीं देंगे।

सहेली-1 : कोशिश करना, तुम आओगी तो अच्छा लगेगा। हम भी तो रात-भर वहीं रुकेंगे। अच्छा हम लोग चलते हैं। बहुत काम है। **(सहेलियों को विदा करके रुक्मिणी भी मंच से प्रस्थान कर जाती है। तभी मंच पर एक भयानक संगीत के साथ में दुखीदास प्रवेश करता है)**

दुखीदास : हूँ...तो सुखीराम का आजकल यहाँ डेरा है। दुखीदास अब कुछ दिन इसी घर में डेरा डाला जाए।

(तभी मंच पर आनंदम् आता है, सोफे पर बैठ जाता हैं। माणिक और रुक्मिणी भी मंच पर आते हैं। दोनों के हाथों में किताबें हैं, दोनों मंच के अग्र भाग में दाएँ और

बाएँ खड़े हैं। बीच में दुखी राम है। दुखीराम किसी को दिखाई नहीं देता। आनंदम्, माणिक और रुक्मिणी अपनी-अपनी जगह पर सभी स्थिर हैं। कोई हिलता-डुलता नहीं हैं, दुखीदास सबसे पहले आनंदम् के पास जाता है)

दुखीदास : दुखीदास, अगर तुझे इस घर में रहना है तो इन्हें पथभ्रष्ट करना ही होगा और ये काम तुम चुटकी में कर सकते हो। अभी लालचिन को बुलाता हूँ **(आँखें बंद करता है)।**
अगड़म बगड़म झगड़म छू
लालचिन जल्दी आ जा तू।

(लालचिन का प्रवेश)

लालचिन : महाराज दुखीदास के चरणों में लालचिन का प्रणाम।

दुखीदास : लालचिन अपने लालच की काली छाया से आनंदम् को पथभ्रष्ट कर दो।

लालचिन : जी महाराज।
(आनंदम् के पास जाकर हाथों से जादू करती है। बुत बना आनंदम् लालचिन को देखता हुआ उठ खड़ा होता है जैसे उसे सम्मोहित कर लिया गया हो)

लालचिन : तुम अपने इस जीवन से संतुष्ट नहीं हो। ये भी कोई जीवन है। टूटा-फूटा घर, ना ढंग की गाड़ी, ना ढंग का बंगला, न कोई बैंक बैलेंस। तुम्हारी गलतियों की सजा तुम्हारा परिवार पा रहा है। बस अब बहुत हो चुका। अब तुम्हें अमीर बनना है, खूब पैसा कमाना है। पैसा...पैसा ...पैसा...बोलो पैसा कमाओगे?

आनंदम् : हाँ बहुत पैसा कमाऊँगा।

लालचिन : अपने परिवार की हर खुशी पूरी करोगे?

आनंदम् : हाँ करूँगा।

लालचिन : ऐशो-आराम का जीवन गुजारोगे?

आनंदम् : हाँ।

लालचिन : वो देखो **(दूसरी तरफ इशारा करता है जहाँ विंग से ठेकेदार उसे दूर से हरे-हरे नोट दिखाकर अपनी ओर आकर्षित करता है)** देखो! लक्ष्मी तुम्हारा इंतजार कर रही है। जाओ...पकड़ लो उसे।

आनंदम् : हाँ लक्ष्मी मेरा इंतजार कर रही है। **(ठेकेदार की तरफ बढ़ता है, वो उसे आगे-आगे पैसा दिखाकर, पैसों के पीछे नचाता हुआ विंग के अंदर ले जाते हैं)।**

दुखीदास : एक तो गया हा...हा...हा...**(लड़के की तरफ देखते हुए, अब इसका नंबर है)।**

दुखीदास : अब कुसंगति को बुलाकर इसे भटकाना होगा। **(आँखें बंद करके कुसंगति को याद करता है)।**

अगड़म बगड़म झगड़म छू।
कुसंगति जल्दी आ जा तू।

(कुसंगति का मंच पर प्रवेश)

कुसंगति : महाराज दुखीदास जी की जय हो। कहिए, कुसंगति के लिए क्या आज्ञा है?

दुखीदास : इसे कुसंगति के मार्ग पर बढ़ने दो।

कुसंगति : जी महाराज! **(कुसंगति लड़के के पास जाती है। उसे अपने वश में कर लेती है। वो उसके हाथों के इशारे पर खड़ा हो जाता है)** अरे मूर्ख! तू क्या अपना पूरा जीवन किताबों में ही गँवा देगा। ये उम्र तो आनंद की है, मस्ती की है। जा बाहर जाकर जीवन का आनंद उठा। अभी आनंद न करेगा तो क्या बुढ़ापे में करेगा।

माणिक : हाँ मुझे भी जीवन का लुत्फ उठाना है।

कुसंगति : वो देख **(दूसरी ओर से उसके मित्र हाथों से उसे बुलाने का इशारा करते हैं)** जा सोमरस का आनंद ले।

माणिक : मैं...मैं आ रहा हूँ **(दोस्तो की तरफ बढ़ते हुए विंग में चला जाता है)**

दुखीदास : हा...हा...हा...ये भी गया। अब अवज्ञा को बुलाकर इस लड़की को भी अवज्ञा सिखानी होगी। रास्ते से हटाना होगा।

अगड़म बगड़म झगड़म छू।
अवज्ञा जल्दी आ जा तू।

(अवज्ञा का प्रवेश)

अवज्ञा : महाराज दुखीदास की जय हो।

दुखीदास : अवज्ञा। ये लड़की बड़ी ही आज्ञाकारी है। इसे आज्ञा का उल्लंघन करना सिखाओ।

अवज्ञा : जो आज्ञा महाराज।

(अवज्ञा लड़की के पास जाती है। वो उसे अपने वश में कर लेती है)

अरी मूरख, देख अपने आपको, अब तू बच्ची नहीं रही जो माता-पिता की ऊँगली पकड़कर चले। तू बड़ी हो चुकी है। कभी देखा है अपने आपको? रम्भा, मेनका जैसी सुंदरता है तेरे रूप में। तेरी चाल में हिरनी की सी लचकता है। ये बड़ी-बड़ी आँखें तेरी सुंदरता में चार चाँद लगा रही है। पर तूने आज्ञाकारी बनकर अपनी इस सुंदरता को काल कोठरी में कैद कर रखा है। अरी मूर्ख, ऐसी सुंदरता किस काम की जिसका कोई प्रशंसक न हो। तुझे इस समय डिस्कोथेक में होना चाहिए। चकाचौंध के बीच में होना चाहिए। तेरे प्रशंसक तेरा इंतजार कर रहे हैं।

रुक्मिणी : हाँ...मेरे प्रशंसक मेरा इंतजार कर रहे हैं...मुझे जाना होगा।

अवज्ञा : वो देख उधर **(रात में पार्टी करने वाली उसकी सहेलियाँ व दोस्त उसे इशारा करके बुलाते हैं)**

रुक्मिणी : हाँ...मैं आ रही हूँ...**(उनके पीछे-पीछे विंग में चली जाती है)।**

दुखीदास : हा...हा...हा...ये भी गई। अब इस घर पर दुखीदास का डेरा है हा...हा।

लालच : जहाँ लालच, कुसंगति और अवज्ञा का डेरा होता है वहाँ तो दुःख ही दुःख होता है।

(चारों मेज पर बैठकर सेब खाने लगते हैं)

(रंगानाथन की पत्नी का प्रवेश वो बहुत ही परेशान है। अपने आप से बड़बड़ा रही है। कभी घड़ी को देखती है, तो कभी दरवाजे को।)

वैशाली : आज पहली बार ऐसा हुआ है जब इतनी रात में तीनों घर से बाहर हैं। न बेटे का पता, न ही अभी तक बेटी आई। और इनका भी अभी तक कोई पता नहीं हे प्रभु...।

दुखीदास : हा...हा...अब प्रभु को याद करने से कुछ नहीं होगा। क्योंकि अब प्रभु कुछ नहीं करेंगे। अब तो जो करेगा दुखीदास करेगा।

अगड़म बगड़म झगड़म छू।
दुख के बादल छा जा तू।
हा...हा...

(तभी सुखीराम का प्रवेश)

सुखीराम : अरे, आज यहाँ का वातावरण बदला-बदला सा कैसे है। और ये दुखीदास यहाँ क्या कर रहा है? अवश्य ही इसने कोई गड़बड़ की होगी। **(तभी दरवाजा खटखटाने की आवाज आती है, वैशाली दरवाजा खोलती है। रंगानाथन पुलिस के साथ, हाथों में हथकड़ी लगी हुइ)**

वैशाली : **(घबराई हुई)** अरे ये क्या...छोड़िए मेरे पति को।

पुलिस : देखिए मैडम, आपके पति ने रिश्वत ली है। हमने इन्हें रंगे हाथों पकड़ा है।

वैशाली : क्या...रिश्वत...!

(तभी दूसरा पुलिस वाला उसके बेटे को पकड़कर लाता है)

पुलिस-2 : ये आपका बेटा है?

वैशाली : जी हाँ।

पुलिस-2 : ये शराब पीकर गाड़ी चला रहा था, इसका एक्सीडेंट हो गया।

वैशाली : **(आश्चर्य से)** क्या तुमने शराब पी है?

माणिक : **(शर्म से)** माँ मुझे माफ कर दो **(तभी तीसरा पुलिस वाला लड़की को लेकर आता है, जिसके कपड़े छिन्न-भिन्न हो रहे हैं)**

पुलिस-3 : क्या ये आपकी बेटी है?

वैशाली : जी हाँ...तुम्हारी ऐसी हालत, क्या हुआ तुम्हें?

पुलिस-3 : आप लोग कैसे माता-पिता हैं। रात-रात भर लड़कियों को बाहर रहने की इजाजत देते हैं। रात को सुनसान सड़क पर एक लड़की अकेली घूमेगी तो चोर-उचक्के और मवाली तो उसके पीछे पड़ेंगे ही। वो तो शुक्र मानिए कि पुलिस वहाँ पहुँच गई नहीं तो...।

रुक्मिणी : माँ...माँ मुझे माफ कर दो।

(माँ शर्म से आँखें नीचे कर लेती है। तभी दादा का प्रवेश। वो सब कुछ देखते ही समझ जाते हैं)

कृष्णमूर्ति : तुम सब गुनहगार हो। तुम सबने इस घर की मर्यादा को धूमिल किया है। मेरे बनाए नियमों को तोड़ा है।

(आनंदम्, माणिक, रुक्मिणी तीनों घुटनों के बल बैठ जाते हैं और शर्म से माफी माँगते हैं)

आनंदम् : मैंने रिश्वत ली, मुझे माफ कर दीजिए पिताजी।

माणिक : मैं कुसंगति के मार्ग पर चला, मुझे माफ कर दीजिए दादाजी।

रुक्मिणी : मैंने आज्ञा का उल्लंघन किया, घर से बाहर चली गई। मुझे माफ कर दीजिए दादाजी।

तीनों : आज हमारी वजह से इस घर पर दुःख के बादल छा गए। हमें माफ कर दीजिए।

(दुखीदास तेज अट्टहास करता है)

सुखीराम : देखा आपने! लालच, कुसंगति और अवज्ञा के परिणाम कितने दुखद हैं। इन सबसे दूर रहने के लिए संकल्प की आवश्यकता होती है। आओ, आज हम सब संकल्प लें।

सभी : **(सभी खड़े होकर)** आज हम सब ये संकल्प लेते हैं कि जीवन में लालच, कुसंगति और अवज्ञा से दूर रहेंगे।

(सुखीराम शेख बजाता है। उसकी ध्वनि सुनकर दुखीदास, लालचिन, कुसंगति व अवज्ञा घबराकर मंच से भागने लगते हैं। उन्हें देखकर सभी जोर से हँसते हैं। फिर एक स्वर में सभी गाते हैं)

सभी : सारे जहाँ में चमका, एक नाम है हमारा।
संकल्प से जुड़ें हम, अणुव्रत है ये हमारा।।
अणुव्रत आचार संहिता, आधार है हमारा।
हर पुष्प की महक से, महके जहाँ हमारा।।

(पर्दा गिरता है) ❍